अध्याय ४

श्री माधवेन्द्र पुरी की भक्ति

श्रील भक्तिवेदान्त ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में चौथे अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। छत्रभोग के मार्ग से गुजरते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु वृद्धमन्त्रेश्वर पहुँचे, जो उड़ीसा की सीमा पर है। रास्ते-भर कीर्तन करते हुए और विभिन्न ग्रामों में भिक्षा माँगते हुए उन्होंने दिव्य आनन्द का अनुभव किया। इस प्रकार वे रेमुणा नामक सुप्रसिद्ध गाँव पहुँचे, जहाँ गोपीनाथ का अर्चाविग्रह है। वहाँ पर उन्होंने अपने गुरु ईश्वर पुरी के मुख से सुनी हुई माधवेन्द्र पुरी की कथा सुनाई। यह कथा इस प्रकार है।

गोवर्धन में रहते हुए एक रात को माधवेन्द्र पुरी ने सपना देखा कि गोपाल का अर्चाविग्रह जंगल में है। अत: अगले दिन उस अर्चाविग्रह को जंगल से खोद निकालने के लिए उन्होंने अपने पड़ोस के साथियों को उनके साथ चलने के लिए निमन्त्रित किया। फिर उन्होंने श्री गोपालजी के अर्चाविग्रह को बड़ी धूमधाम से गोवर्धन पर्वत की चोटी पर स्थापित किया। गोपाल की पूजा की गई और अन्नकूट उत्सव मनाया गया। इस उत्सव का सर्वत्र पता लग गया और निकटवर्ती गाँवों के अनेक लोग उसमें सम्मिलित होने आये। एक रात गोपाल-विग्रह फिर माधवेन्द्र पुरी के सपने में आये और उनसे जगन्नाथ पुरी जाकर कुछ चन्दन का लेप लाने और अर्चाविग्रह को लेप करने के लिए कहा। यह आदेश पाकर माधवेन्द्र पुरी तुरन्त उड़ीसा के लिए चल पड़े। बंगाल होकर यात्रा करते हुए वे रेमुणा गाँव पहुँचे और वहाँ पर उन्हे गोपीनाथजी के अर्चाविग्रह को भोग लगा हुआ एक पात्र *क्षीर* प्राप्त हुआ। यह क्षीर पात्र

गोपीनाथ ने चुराया था और उन्होंने इसे माधवेन्द्र पुरी को दिया था। तभी से गोपीनाथ-विग्रह क्षीर-चोरा गोपीनाथ कहलाते हैं। जगन्नाथ पुरी पहुँचने पर माधवेन्द्र पुरी को राजा से अनुमति प्राप्त हो गई कि वे अपने साथ एक मांड चन्दन तथा २० तोले कपूर ले जा सकते हैं। वे दो व्यक्तियों की सहायता से यह साम्रगी रेमुणा लाये। उन्होंने फिर से स्वपन में देखा कि गोवर्धन पर्वत स्थित गोपालजी की इच्छा है कि इस चन्दन को कपूर के साथ मिलाकर लेप तैयार किया जाये और उसे गोपीनाथजी के विग्रह पर लगाया जाय। यह समझकर कि इससे गोवर्धन स्थित गोपालजी सन्तुष्ट होंगे, माधवेन्द्र पुरी ने उस आदेश का पालन किया और फिर जगन्नाथ पुरी लौट आये।

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु तथा अन्य भक्तों को यह कथा सुनाई और माधवेन्द्र पुरी की शुद्ध भक्ति की प्रशंसा की। जब वे माधवेन्द्र पुरी द्वारा रचित कुछ श्लोक सुना रहे थे, तो वे भावमग्न हो गये। किन्तु जब उन्होंने देखा कि वहाँ अनेक लोग एकत्र हुए हैं, तो उन्होंने अपने आपको सँभाला और थोड़ा-सा खीर प्रसाद ग्रहण किया। इस तरह रात वहाँ बिताकर अगले दिन वे फिर से जगन्नाथ पुरी के लिए चल पड़े।

यस्मै दातुं चोरयन्क्षीर-भाण्डं
गोपीनाथः क्षीर-चोराभिधोऽभूत् ।
श्री-गोपालः प्रादुरासीद्वशः सन्
यत्प्रेम्णा तं माधवेन्द्रं नतोऽस्मि ॥ १ ॥

यस्मै दातुं चोरयन्क्षीर-भाण्डं
गोपीनाथः क्षीर-चोराभिधोऽभूत् ।
श्री-गोपालः प्रादुरासीद्वशः सन्
यत्प्रेम्णा तं माधवेन्द्रं नतोऽस्मि ॥ १ ॥

यस्मै—जिनको; **दातुम्**—देने के लिए; **चोरयन्**—चोरी करके; **क्षीर-भाण्डम्**—खीर का पात्र; **गोपीनाथः**—गोपीनाथ; **क्षीर-चोरा**—खीर चोर; **अभिधः**—प्रसिद्ध; **अभूत्**—हो गये; **श्री-गोपालः**—श्री गोपाल विग्रह; **प्रादुरासीत्**—प्रकट हुए; **वशः**—वशीभूत; **सन्**—होकर; **यत्-प्रेम्णा**—उनके प्रेम से; **तम्**—उनको; **माधवेन्द्रम्**—श्रील माधवेन्द्र पुरी जो मध्व सम्प्रदाय में थे; **नतः अस्मि**—मैं सादर प्रणाम करता हूँ।

अनुवाद

मैं उन माधवेन्द्र पुरी को सादर नमस्कार करता हूँ, जिन्हें श्री गोपीनाथ ने खीर का एक पात्र चुराकर दिया और तत्पश्चात् स्वयं क्षीर-चोरा कहलाये। माधवेन्द्र पुरी के प्रेम से प्रसन्न होकर गोवर्धन-स्थित श्री गोपाल-विग्रह ने जनसमूह को दर्शन दिया।

तात्पर्य

भक्तिविनोद ठाकुर की टिप्पणी है कि इस गोपाल-विग्रह की प्रतिष्ठा सर्वप्रथम कृष्ण के प्रपौत्र वज्र ने की थी। माधवेन्द्र पुरी ने गोपाल विग्रह को फिर से ढूँढ़ निकाला और उन्हें गोवर्धन पर्वत की चोटी पर स्थापित किया। यही गोपाल-विग्रह आज भी नाथद्वारा में विद्यमान है और वल्लभाचार्य के वशंजों की देखरेख में है। इस विग्रह की पूजा बड़े ठाठबाट से की जाती है और वहाँ जाने वाला कोई भी व्यक्ति अल्प मूल्य देकर विभिन्न प्रकार का प्रसाद खरीद सकता है।

জয় জয় গৌরচন্দ্র জয় নিত্যানন্দ ।
জয়াদ্বৈতচন্দ্র জয় গৌর-ভক্ত-বৃন্দ ॥২॥

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय गौरचन्द्र—श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो; **जय नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की जय हो; **जय अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत प्रभु की जय हो; **जय गौर-भक्त-वृन्द**—महाप्रभु के भक्तों की जय हो।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत प्रभु की जय हो! तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

নীলাদ্রি-গমন, জগন্নাথ-দরশন ।
সার্বভৌম ভট্টাচার্য-প্রভুর মিলন ॥৩॥

এ সব লীলা প্রভুর দাস বৃন্দাবন ।
বিস্তারি' করিয়াছেন উত্তম বর্ণন ॥ ৪ ॥

নীলাদ্রি-গমন, জগন্নাথ-দরশন ।
সার্বভৌম ভট্টাচার্য্য-প্রভুর মিলন ॥ ৩ ॥
এ সব লীলা প্রভুর দাস বৃন্দাবন ।
বিস্তারি' করিয়াছেন উত্তম বর্ণন ॥ ৪ ॥

নীলাদ্রি-গমন—জগন্নাথ পুরী जाते हुए; **जगन्नाथ-दरशन**—भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर के दर्शन करते हुए; **सार्वभौम भट्टाचार्य्य**—सार्वभौम भट्टाचार्य के साथ; **प्रभुर**—महाप्रभु का; **मिलन**—मिलन; **ए सब**—ये सब; **लीला**—लीलाएँ; **प्रभुर**—महाप्रभु की; **दास वृन्दावन**—वृन्दावन दास ठाकुर; **विस्तारि'**—विस्तारपूर्वक; **करियाछेन**—किया है; **उत्तम**—बहुत सुन्दर; **वर्णन**—वर्णन।

अनुवाद

महाप्रभु जगन्नाथ पुरी गये और भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर के दर्शन किये। वे सार्वभौम भट्टाचार्य से भी मिले। इन सब लीलाओं का अत्यन्त विस्तृत वर्णन वृन्दावन दास ठाकुर द्वारा अपने ग्रन्थ *चैतन्य-भागवत* में किया गया है।

সহজে বিচিত্র মধুর চৈতন্য-বিহার ।
বৃন্দাবন-দাস-মুখে অমৃতের ধার ॥ ৫ ॥

সহজে বিচিত্র মধুর চৈতন্য-বিহার ।
বৃন্দাবন-দাস-মুখে অমৃতের ধার ॥ ৫ ॥

সহজে—सहज रूप से; **বিচিত্র**—विचित्र; **মধুর**—मधुर; **চৈতন্য**—चैतन्य महाप्रभु की; **বিহার**—लीलाएँ; **বৃন্দাবন-দাস**—वृन्दावनदास ठाकुर के; **মুখে**—मुख से; **অমৃতের**—अमृत की; **ধার**—धारा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की सभी लीलाएँ स्वभावतः अत्यन्त अद्भुत और मधुर हैं और जब उनका वर्णन वृन्दावन दास ठाकुर द्वारा किया जाता है, तब वे अमृत की धारा के समान बन जाती हैं।

অতএব তাহা বর্ণিলে হয় পুনরুক্তি ।
দম্ভ করি' বর্ণি যদি তৈছে নাহি শক্তি ॥৬॥

অতএব তাহা বর্ণিলে হয় পুনরুক্তি ।
দম্ভ করি' বর্ণি যদি তৈছে নাহি শক্তি ॥ ६ ॥

অতএব—অতএব; **তাহা**—ऐसी लीलाएँ; **বর্ণিলে**—वर्णन करने पर; **হয়**—है; **পুনরুক্তি**—पुनरावृत्ति ; **দম্ভ করি'**—अभिमान करके; **বর্ণি**—मैं वर्णन करता हूँ; **যদি**—यदि; **তৈছে**—ऐसी; **নাহি**—नहीं है; **শক্তি**—शक्ति।

अनुवाद

इसलिए मेरा सविनय निवेदन है कि चूँकि इन लीलाओं का सुन्दर वर्णन वृन्दावन दास ठाकुर द्वारा पहले ही हो चुका है, अतएव उन लीलाओं की पुनरावृत्ति दंभ की परिचायक होगी, अतएव ऐसा करना अच्छा नहीं होगा। मुझमें ऐसी शक्ति नहीं है।

চৈতন্য-মঙ্গলে যাহা করিল বর্ণন ।
সূত্র-রূপে সেই লীলা করিয়ে সূচন ॥৭॥

চৈতন্য-মঙ্গলে যাহা করিল বর্ণন ।
সূত্র-রূপে সেই লীলা করিয়ে সূচন ॥ ७ ॥

চৈতন্য-মঙ্গলে—*चैतन्य मंगल* नामक ग्रन्थ में; **যাহা**—जो कुछ; **করিল বর্ণন**—वर्णन किया है; **সূত্র-রূপে**—रूपरेखा के रूप में; **সেই লীলা**—वही लीलाएँ; **করিয়ে সূচন**—मैं प्रस्तुत करूँगा।

अनुवाद

अतएव *चैतन्य मंगल* (अब *चैतन्य भागवत* नाम से विख्यात) में वृन्दावन दास ठाकुर जिन लीलाओं का पहले से विस्तृत वर्णन कर चुके हैं, उन्हें मैं सूत्र-रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

তাঁর সূত্রে আছে, তেঁহ না কৈল বর্ণন ।
যথা-কথঞ্চিৎকরি' সে লীলা কথন ॥৮॥

তাঁর সূত্রে আছে, তেঁহ না কৈল বর্ণন ।
যথা-কথঞ্চিৎকরি' সে লীলা কথন ॥ ८ ॥

ताँर—उनकी; **सूत्रे**—संक्षेप में; **आछे**—हैं; **तेंह**—उन्होंने; **ना कैल वर्णन**—वर्णन नहीं किया; **ग्रथा-कथञ्चित्**—उनमें से कुछ; **करि'**—करता हूँ; **से**—उन; **लीला**—लीलाओं का; **कथन**—वर्णन।

अनुवाद

उन्होंने कुछ लीलाओं का विस्तृत वर्णन नहीं किया है, प्रत्युत सार-मात्र दिया है, अतएव मैं इस पुस्तक में उनका वर्णन करने का प्रयास करूँगा।

अतएव তাঁর পায়ে করি নমস্কার ।
তাঁর পায় অপরাধ না হউকামার ॥৯॥

अतएव ताँर पाये करि नमस्कार ।
ताँर पाय अपराध ना हउक् आमार ॥ ९ ॥

अतएव—अतएव; **ताँर पाये**—उनके चरणकमलों में; **करि**—मैं करता हूँ; **नमस्कार**—नमस्कार; **ताँर पाय**—श्रील वृन्दावनदास ठाकुर के चरणकमलों में; **अपराध**—अपराध; **ना**—न; **हउक्**—हो; **आमार**—मेरा।

अनुवाद

अतएव मैं वृन्दावन दास ठाकुर के चरणकमलों में अपना सादर नमस्कार अर्पित करता हूँ। मुझे आशा है कि मेरे इस कार्य से उनके चरणकमलों के प्रति अपराध नहीं होगा।

এই-মত মহাপ্রভু চলিলা নীলাচলে ।
চারি ভক্ত সঙ্গে কৃষ্ণ-কীর্তন-কুতূহলে ॥১০॥

एइ-मत महाप्रभु चलिला नीलाचले ।
चारि भक्त सङ्गे कृष्ण-कीर्तन-कुतूहले ॥ १० ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—चैतन्य महाप्रभु; **चलिला**—चल पड़े; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी की ओर; **चारि भक्त**—चार भक्तों; **सङ्गे**—के साथ; **कृष्ण-कीर्तन**—कृष्ण के पावन नाम का कीर्तन करते हुए; **कुतूहले**—अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अपने चार भक्तों सहित जगन्नाथ पुरी की ओर चल

पड़े और वे बड़े उत्साह से भगवान् के पवित्र नाम—हरे कृष्ण मंत्र—का कीर्तन कर रहे थे।

ভিক্ষা লাগি' এক-দিন এক গ্রাম গিয়া ।
আপনে বহুত অন্ন আনিল মাগিয়া ॥১১॥

भिक्षा लागि' एक-दिन एक ग्राम गिया ।
आपने बहुत अन्न आनिल मागिया ॥ ११ ॥

भिक्षा लागि'—प्रसाद के लिए; **एक-दिन**—एक दिन में; **एक ग्राम**—एक गाँव में; **गिया**—जाकर; **आपने**—स्वयं; **बहुत**—बहुत; **अन्न**—अन्न (चावल तथा अन्य खाद्य पदार्थ); **आनिल**—लाये; **मागिया**—माँगकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु प्रतिदिन स्वयं एक गाँव में जाते और प्रसाद तैयार करने के लिए चावल तथा अन्य अनाज पर्याप्त मात्रा में माँग लाते।

পথে বড় বড় দানী বিঘ্ন নাহি করে ।
তা' সবারে কৃপা করি' আইলা রেমুণারে ॥১২॥

पथे बड़ बड़ दानी विघ्न नाहि करे ।
ता' सबारे कृपा करि' आइला रेमुणारे ॥ १२ ॥

पथे—मार्ग में; **बड़ बड़**—बड़े बड़े; **दानी**—कर वसूल करने वाले; **विघ्न**—विघ्न; **नाहि**—नहीं; **करे**—किया; **ता' सबारे**—उन सब पर; **कृपा करि'**—कृपा करके; **आइला**—पहुँचे; **रेमुणारे**—रेमुणा गाँव।

अनुवाद

रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ीं और हर नदी पर कर एकत्र करने वाला व्यक्ति था। किन्तु उसने महाप्रभु को रोका नहीं। महाप्रभु ने भी उन सब पर कृपा की। अन्त में वे रेमुणा गाँव पहुँचे।

तात्पर्य

बालेश्वर नामक रेलवे स्टेशन से पाँच मील पश्चिम की ओर रेमुणा नामक गाँव है। इस गाँव में आज भी क्षीर-चोरा गोपीनाथ का मन्दिर है और इस मन्दिर

के भीतर आज भी श्यामानन्द गोस्वामी के प्रमुख शिष्य रसिकानन्द प्रभु की समाधि है।

রেমুণাতে গোপীনাথ পরম-মোহন ।
ভক্তি করি' কৈল প্রভু তাঁর দরশন ॥১৩॥

রেমুণাতে গোপীনাথ পরম-মোহন ।
ভক্তি করি' কৈল প্রভু তাঁর দরশন ॥ ১৩ ॥

রেমুণাতে—उस रेमुणा गाँव में; **গোপীনাথ**—गोपीनाथ का विग्रह; **পরম-মোহন**—परम आकर्षक; **ভক্তি করি'**—भक्ति सहित; **কৈল**—किया; **প্রভু**—महाप्रभु ने; **তাঁর**—उनका; **দরশন**—दर्शन।

अनुवाद

रेमुणा के मन्दिर में गोपीनाथ का विग्रह अत्यन्त आकर्षक था। चैतन्य महाप्रभु ने इस मन्दिर में दर्शन किये और अत्यन्त भक्तिपूर्वक नमस्कार किया।

তাঁর পাদ-পদ্ম নিকট প্রণাম করিতে ।
তাঁর পুষ্প-চূড়া পড়িল প্রভুর মাথাতে ॥১৪॥

তাঁর পাদ-পদ্ম নিকট প্রণাম করিতে ।
তাঁর পুষ্প-চূড়া পড়িল প্রভুর মাথাতে ॥ ১৪ ॥

তাঁর পাদ-পদ্ম—गोपीनाथ के चरणकमल; **নিকট**—निकट; **প্রণাম**—प्रणाम; **করিতে**—करते समय; **তাঁর**—उनका; **পুষ্প-চূড়া**—फूलों का मुकुट; **পড়িল**—गिर पड़ा; **প্রভুর**—महाप्रभु के; **মাথাতে**—मस्तक पर।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु गोपीनाथ विग्रह के चरणकमलों में प्रणाम कर रहे थे, तो गोपीनाथ के सिर का पुष्प-मुकुट महाप्रभु के मस्तक पर गिर गया।

চূড়া পাঞা মহাপ্রভুর আনন্দিত মন ।
বহু নৃত্য-গীত কৈল লঞা ভক্ত-গণ ॥১৫॥

चूड़ा पाञा महाप्रभुर आनन्दित मन ।
बहु नृत्य-गीत कैल लञा भक्त-गण ॥ १५ ॥

चूड़ा पाञा—प्राप्त करके; **महाप्रभुर**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **आनन्दित**—प्रसन्न होकर; **मन**—मन; **बहु**—कई प्रकार के; **नृत्य-गीत**—नृत्य गीत; **कैल**—करने लगे; **लञा**—के साथ; **भक्त-गण**—भक्तों।

अनुवाद

जब अर्चाविग्रह का पुष्प-मुकुट उनके मस्तक पर आ गिरा, तो श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने भक्तों के साथ विभिन्न प्रकार से कीर्तन तथा नर्तन किया।

প্রভুর প্রভাব দেখি' প্রেম-রূপ-গুণ ।
বিস্মিত হইলা গোপীনাথের দাস-গণ ॥ ১৬ ॥

প্রভুর প্রভাব দেখি' প্রেম-রূপ-গুণ ।
বিস্মিত হইলা গোপীনাথের দাস-গণ ॥ ১৬ ॥

প্রভুর—महाप्रभु का; **প্রভাব**—प्रभाव; **দেখি'**—देखकर; **প্রেম-রূপ**—उनका सौन्दर्य; **গুণ**—और उनके गुण; **বিস্মিত হইলা**—चकित हो गये; **গোপীনাথের**—गोपीनाथ अर्चाविग्रह के; **দাস-গণ**—दास।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रगाढ़ प्रेम, उनके अत्युत्तम सौन्दर्य तथा उनके दिव्य गुणों को देखकर अर्चाविग्रह के सभी सेवक आश्चर्यचकित रह गये।

নানা-রূপে প্রীত্যে কৈল প্রভুর সেবন ।
সেই রাত্রি তাহাঁ প্রভু করিলা বঞ্চন ॥ ১৭ ॥

নানা-রূপে প্রীত্যে কৈল প্রভুর সেবন ।
সেই রাত্রি তাহাঁ প্রভু করিলা বঞ্চন ॥ ১৭ ॥

নানা-রূপে—नाना प्रकार से; **প্রীত্যে**—प्रेम से; **কৈল**—की; **প্রভুর**—महाप्रभु की; **সেবন**—सेवा; **সেই রাত্রি**—उस रात; **তাহাঁ**—वहाँ; **প্রভু**—चैतन्य महाप्रभु; **করিলা**—की; **বঞ্চন**—रहे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति प्रेमवश उन सेवकों ने नाना प्रकार से महाप्रभु की सेवा की और उस रात महाप्रभु गोपीनाथ के मन्दिर में रुक गये।

মহাপ্রসাদ-ক্ষীর-লোভে রহিলা প্রভু তথা ।
পূর্বে ঈশ্বর-পুরী তাঁরে কহিয়াছেন কথা ॥ ১৮॥

महाप्रसाद-क्षीर-लोभे रहिला प्रभु तथा ।
पूर्वे ईश्वर-पुरी ताँरे कहियाछेन कथा ॥ १८॥

महा-प्रसाद—महाप्रसाद; **क्षीर**—खीर; **लोभे**—उत्सुकता में; **रहिला**—रहे; **प्रभु**—महाप्रभु; **तथा**—वहाँ; **पूर्वे**—उससे पहले; **ईश्वर-पुरी**—उनके गुरु ईश्वर पुरी; **ताँरे**—उनको; **कहियाछेन**—बताई थी; **कथा**—कथा।

अनुवाद

महाप्रभु वहाँ इसीलिए रुके थे, क्योंकि वे गोपीनाथ-विग्रह का खीर-प्रसाद पाने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे। उन्होंने अपने गुरु ईश्वर पुरी से यहाँ घटित एक कथा सुन रखी थी।

'ক্ষীর-চোরা গোপীনাথ' প্রসিদ্ধ তাঁর নাম ।
ভক্ত-গণে কহে প্রভু সেই ত' আখ্যান ॥ ১৯॥

'क्षीर-चोरा गोपीनाथ' प्रसिद्ध ताँर नाम ।
भक्त-गणे कहे प्रभु सेइ त' आख्यान ॥ १९॥

क्षीर-चोरा गोपीनाथ—खीर चोर गोपीनाथ; **प्रसिद्ध**—अत्यन्त प्रसिद्ध; **ताँर नाम**—उनका नाम; **भक्त-गणे**—सभी भक्तों को; **कहे**—बताइ; महा**प्रभु**—प्रभु ने; **सेइ त' आख्यान**—वह कथा।

अनुवाद

यह विग्रह दूर-दूर तक क्षीरचोरा-गोपीनाथ के नाम से विख्यात था और चैतन्य महाप्रभु ने अपने भक्तों को वह कथा सुनाई कि यह विग्रह इतना प्रसिद्ध कैसे हुआ।

पूर्वे माधव-पुरीर लागि' क्षीर कैल चुरि ।
अतएव नाम हैल 'क्षीर-चोरा हरि' ॥२०॥

पूर्वे माधव-पुरीर लागि' क्षीर कैल चुरि ।
अतएव नाम हैल 'क्षीर-चोरा हरि' ॥ २० ॥

पूर्वे—पूर्व काल में; **माधव-पुरीर लागि'**—श्रील माधवेन्द्र पुरी के लिए; **क्षीर**—खीर की; **कैल**—की; **चुरि**—चोरी; **अतएव**—अतएव; **नाम**—नाम; **हैल**—पड़ गया; **क्षीर-चोरा हरि**—खीर-चोर हरी।

अनुवाद

पूर्वकाल में इस विग्रह ने माधवेन्द्र पुरी के लिए क्षीर का पात्र चुराया था, अतएव वे क्षीर चुराने वाले भगवान् के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पूर्वे श्री-माधव-पुरी आइला वृन्दावन ।
भ्रमिते भ्रमिते गेला गिरि गोवर्धन ॥२१॥

पूर्वे श्री-माधव-पुरी आइला वृन्दावन ।
भ्रमिते भ्रमिते गेला गिरि गोवर्धन ॥ २१ ॥

पूर्वे—पहले; **श्री-माधव-पुरी**—श्रील माधवेन्द्रपुरी; **आइला**—आये; **वृन्दावन**—वृन्दावन में; **भ्रमिते भ्रमिते**—घूमते फिरते; **गेला**—गये; **गिरि गोवर्धन**—गोवर्धन पर्वत।

अनुवाद

एक बार श्री माधवेन्द्र पुरी वृन्दावन गये और वहाँ घूमते-घूमते वे गोवर्धन पर्वत पहुँचे।

प्रेमे मत्त,—नाहि ताँर रात्रि-दिन-ज्ञान ।
क्षणे उठे, क्षणे पड़े, नाहि स्थानास्थान ॥२२॥

प्रेमे मत्त,—नाहि ताँर रात्रि-दिन-ज्ञान ।
क्षणे उठे, क्षणे पड़े, नाहि स्थानास्थान ॥ २२ ॥

प्रेमे मत्त—कृष्ण के प्रेमभाव में उन्मत्त; **नाहि**—नहीं था; **ताँर**—उनको; **रात्रि-दिन-ज्ञान**—दिन-रात का ज्ञान; **क्षणे**—कभी; **उठे**—उठते; **क्षणे पड़े**—कभी गिरते; **नाहि**—कोई होश नहीं था; **स्थान-अस्थान**—उचित-अनुचित स्थान का।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी भगवत्प्रेम में उन्मत्त रहते थे और उन्हें इसका ज्ञान भी नहीं रहता था कि दिन है या रात। कभी वे उठ बैठते और कभी भूमि पर गिर पड़ते। उन्हें उचित अथवा अनुचित स्थान में भेद नहीं रहता था।

शैल परिक्रमा करि' गोविन्द-कुण्डे आसि' ।
स्नान करि, वृक्ष-तले आछे सन्ध्याय वसि' ॥२३॥

शैल परिक्रमा करि' गोविन्द-कुण्डे आसि' ।
स्नान करि, वृक्ष-तले आछे सन्ध्याय वसि' ॥ २३॥

शैल—पर्वत की; **परिक्रमा**—परिक्रमा; **करि'**—करके; **गोविन्द-कुण्डे**—गोविन्द कुण्ड के तट पर; **आसि'**—आकर; **स्नान करि**—स्नान करके; **वृक्ष-तले**—एक वृक्ष के नीचे; **आछे**—है; **सन्ध्याय**—साँयकाल; **वसि'**—विश्राम करने।

अनुवाद

गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करने के बाद श्री माधवेन्द्र पुरी गोविन्द कुण्ड गये और वहाँ स्नान किया। फिर संध्या विश्राम के लिए एक वृक्ष के नीचे बैठ गये।

गोपाल-बालक एक दुग्ध-भाण्ड लञा ।
आसि' आगे धरि' किछु बलिल हासिया ॥२४॥

गोपाल-बालक एक दुग्ध-भाण्ड लञा ।
आसि' आगे धरि' किछु बलिल हासिया ॥ २४॥

गोपाल-बालक—ग्वालबाल ; **एक**—एक; **दुग्ध-भाण्ड लञा**—दूध का एक पात्र लेकर; **आसि'**—आकर; **आगे धरि'**—सामने रखकर; **किछु**—कुछ; **बलिल**—बोला; **हासिया**—हँसते हुए।

अनुवाद

जब वे वृक्ष के नीचे बैठे थे, तभी एक अज्ञात ग्वालबाल दूध का पात्र लेकर आया और माधवेन्द्र पुरी के सामने पात्र रखकर हँसते हुए उनसे इस प्रकार बोला।

পুরী, এই দুগ্ধ লঞা কর তুমি পান ।
মাগি' কেনে নাহি খাও, কিবা কর ধ্যান ॥২৫॥

পুরী, এই দুগ্ধ লঞা কর তুমি পান ।
মাগি' কেনে নাহি খাও, কিবা কর ধ্যান ॥ ২৫ ॥

पुरी—हे माधवेन्द्र पुरी; **एइ दुग्ध लञा**—यह दूध लेकर; **कर तुमि पान**—आप इसे पी लो; **मागि'**—माँगकर; **केने**—क्यों; **नाहि**—नहीं; **खाओ**—आप खाते; **किबा**—क्या; **कर**—करो; **ध्यान**—ध्यान।

अनुवाद

"हे माधवेन्द्र पुरी, कृपया मेरे द्वारा लाया हुआ दूध पीजिये। आप खाने के लिए कुछ भोजन क्यों नहीं माँग लाते? आप किस तरह का ध्यान कर रहे हैं?"

বালকের সৌন্দর্যে পুরীর হইল সন্তোষ ।
তাহার মধুর-বাক্যে গেল ভোক-শোষ ॥২৬॥

বালকের সৌন্দর্য্যে পুরীর হইল সন্তোষ ।
তাহার মধুর-বাক্যে গেল ভোক-শোষ ॥ ২৬ ॥

बालकेर—बालक के; **सौन्दर्य्ये**—सौन्दर्य में; **पुरीर**—श्रील माधवेन्द्र पुरी का; **हइल**—हो गया; **सन्तोष**—अत्यन्त सन्तोष; **ताहार**—उसके; **मधुर-वाक्ये**—मधुर शब्दों से; **गेल**—भूल गये; **भोक-शोष**—सारी भूख और प्यास।

अनुवाद

उस बालक के सौन्दर्य को देखकर माधवेन्द्र पुरी अत्यधिक सन्तुष्ट हुए। उसके मीठे वचन सुनकर वे अपनी सारी भूख तथा प्यास भूल गये।

পুরী কহে,—কে তুমি, কাহাঁ তোমার বাস ।
কে-মতে জানিলে, আমি করি উপবাস ॥২৭॥

পুরী কহে,—কে তুমি, কাহাঁ তোমার বাস ।
কে-মতে জানিলে, আমি করি উপবাস ॥ ২৭ ॥

पुरी कहे—माधवेन्द्र पुरी ने बालक से पूछा; **के तुमि**—तुम कौन हो; **काहाँ तोमार**

वास—तुम कहाँ रहते हो; **के-मते**—कैसे; **जानिले**—तुम्हें पता लगा; **आमि करि उपवास**—मैं उपवास पर हूँ।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी ने कहा, "तुम कौन हो? तुम कहाँ रहते हो? तुम कैसे जान पाये कि मैं उपवास कर रहा हूँ?"

बालक कहे,—गोप आमि, एइ ग्रामे वसि ।
आमार ग्रामेते केह ना रहे उपवासी ॥२८॥

बालक कहे,—गोप आमि, एइ ग्रामे वसि ।
आमार ग्रामेते केह ना रहे उपवासी ॥ २८ ॥

बालक कहे—बालक ने कहा; **गोप आमि**—मैं एक ग्वाला हूँ; **एइ ग्रामे वसि**—इसी गाँव में रहता हूँ; **आमार ग्रामेते**—मेरे गाँव में; **केह**—कोई भी; **ना**—नहीं; **रहे**—रहता; **उपवासी**—भोजन के बिना।

अनुवाद

बालक ने उत्तर दिया, "महाशय, मैं ग्वालबाल हूँ और इसी गाँव में रहता हूँ। मेरे गाँव में कोई भूखा नहीं रहता।"

केह अन्न मागि' खाय, केह दुग्धाहार ।
अयाचक-जने आमि दिये त' आहार ॥२९॥

केह अन्न मागि' खाय, केह दुग्धाहार ।
अयाचक-जने आमि दिये त' आहार ॥ २९ ॥

केह—कोई; **अन्न**—अन्न; **मागि'**—माँगकर; **खाय**—खाता है; **केह**—कोई; **दुग्ध-आहार**—दूध पीता है; **अयाचक-जने**—जो नहीं माँगता; **आमि**—मैं; **दिये**—देता हूँ; **त'**—निश्चित रूप से; **आहार**—भोजन।

अनुवाद

"इस गाँव में कोई भी व्यक्ति दूसरे से माँगकर भोजन कर सकता है। कुछ लोग केवल दूध पीकर रहते हैं। किन्तु यदि कोई व्यक्ति किसी से भोजन नहीं माँगता, तो मैं उसको खाने की सारी वस्तुएँ देता हूँ।"

জল নিতে স্ত্রী-গণ তোমারে দেখি' গেল ।
স্ত্রী-সব দুগ্ধ দিয়া আমারে পাঠাইল ॥ ৩০॥

जल निते स्त्री-गण तोमारे देखि' गेल ।
स्त्री-सब दुग्ध दिया आमारे पाठाइल ॥ ३० ॥

जल निते—पानी लाने के लिए; **स्त्री-गण**—महिलाएँ; **तोमारे**—आपको; **देखि' गेल**—देखकर गई; **स्त्री-सब**—सभी महिलाओं ने; **दुग्ध**—दूध; **दिया**—देकर; **आमारे**—मुझे; **पाठाइल**—भेजा है।

अनुवाद

"पानी लेने आई हुई स्त्रियों ने आपको यहाँ देखा, तो उन्होंने यह दूध देकर मुझे आपके पास भेजा है।"

গো-দোহন করিতে চাহি, শীঘ্র আমি যাব ।
আর-বার আসি আমি এই ভাণ্ড লইব ॥ ৩১॥

गो-दोहन करिते चाहि, शीघ्र आमि य़ाब ।
आर-बार आसि आमि एइ भाण्ड लइब ॥ ३१ ॥

गो-दोहन करिते चाहि—मैं गौओं का दूध दोहना चाहता हूँ; **शीघ्र**—शीघ्र; **आमि य़ाब**—मुझे जाना है; **आर-बार**—पुनः; **आसि**—लौटकर; **आमि**—मैं; **एइ**—यह; **भाण्ड**—पात्र; **लइब**—वापस ले जाऊँगा।

अनुवाद

बालक ने आगे कहा, "मुझे शीघ्र ही गाएँ दुहने जाना है, किन्तु मैं लौटकर यह दूध का पात्र आपसे ले जाऊँगा।"

এত বলি' গেলা বালক না দেখিয়ে আর ।
মাধব-পুরীর চিত্তে হইল চমৎকার ॥ ৩২॥

एत बलि' गेला बालक ना देखिये आर ।
माधव-पुरीर चित्ते हइल चमत्कार ॥ ३२ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **गेला**—गया; **बालक**—बालक; **ना**—नहीं; **देखिये**—देखा जा सका; **आर**—और फिर; **माधव-पुरीर**—श्रील माधवेन्द्र पुरी के; **चित्ते**—मन में; **हइल**—हुआ; **चमत्कार**—चमत्कार।

अनुवाद

यह कहकर वह बालक वहाँ से चला गया। वह बालक अचानक अन्तर्धान हो गया, तो माधवेन्द्र पुरी का मन आश्चर्यचकित हो गया।

দুগ্ধ পান করি' ভাণ্ড ধুঞা রাখিল ।
বাট দেখে, সে বালক পুনঃ না আইল ॥৩৩॥

দুগ্ধ পান করি' ভাণ্ড ধুঞা রাখিল ।
বাট দেখে, সে বালক পুনঃ না আইল ॥ ৩৩ ॥

दुग्ध—दूध; **पान करि'**—पीकर; **भाण्ड**—पात्र; **धुञा**—धोकर; **राखिल**—एक ओर रख दिया; **बाट देखे**—बाट देखने लगे; **से बालक**—वह बालक; **पुनः**—पुनः; **ना आइल**—लौटकर नहीं आया।

अनुवाद

दूध पीने के बाद श्री माधवेन्द्र पुरी ने पात्र को धोया और एक तरफ रख दिया। फिर वे उस बालक की राह देखते रहे, किन्तु वह बालक नहीं लौटा।

বসি' নাম লয় পুরী, নিদ্রা নাহি হয় ।
শেষ-রাত্রে তন্দ্রা হৈল,——বাহ্য-বৃত্তি-লয় ॥৩৪॥

বসি' নাম লয় পুরী, নিদ্রা নাহি হয় ।
শেষ-রাত্রে তন্দ্রা হৈল,——বাহ্য-বৃত্তি-লয় ॥ ৩৪ ॥

वसि'—वहाँ बैठकर; **नाम लय**—हरे कृष्ण महामंत्र का जप करने लगे; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **निद्रा**—निद्रा; **नाहि हय**—नहीं आई; **शेष-रात्रे**—शेष रातभर; **तन्द्रा**—झपकी; **हैल**—आ गई; **बाह्य-वृत्ति**—बाहरी गतिविधियाँ; **लय**—बन्द हो गईं।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी सो नहीं सके। वे बैठे रहे और हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करते रहे। रात्रि समाप्त होने पर उन्हें थोड़ी झपकी आ गई और उनके सारे बाह्य कार्य रुक गये।

স্বপ্নে দেখে, সেই বালক সম্মুখে আসিঞা ।
এক কুঞ্জে লঞা গেল হাতেতে ধরিঞা ॥ ৩৫ ॥

स्वप्ने देखे, सेइ बालक सम्मुखे आसिञा ।
एक कुञ्जे लञा गेल हातेते धरिञा ॥ ३५ ॥

स्वप्ने—स्वप्न में; **देखे**—उन्होंने देखा; **सेइ बालक**—वही बालक; **सम्मुखे**—सामने; **आसिञा**—आकर; **एक कुञ्जे**—एक कुंज में; **लञा**—उनको लेकर; **गेल**—गया; **हातेते धरिञा**—उन्हें हाथ से पकड़कर।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी ने स्वप्न में उसी बालक को देखा। वह बालक उनके सामने आया और उनका हाथ पकड़कर उन्हें जंगल में एक कुंज तक ले गया।

কুঞ্জ দেখাঞা কহে,—আমি এই কুঞ্জে রই ।
শীত-বৃষ্টি-বাতাগ্নিতে মহা-দুঃখ পাই ॥ ৩৬ ॥

कुञ्ज देखाञा कहे,—आमि एइ कुञ्जे रइ ।
शीत-वृष्टि-वातागिनते महा-दुःख पाइ ॥ ३६ ॥

कुञ्ज देखाञा—उसे कुंज (झाड़ी) दिखाते समय; **कहे**—कहने लगा; **आमि**—मैं; **एइ**—इस; **कुञ्जे**—कुंज में; **रइ**—रहता हूँ; **शीत-वृष्टि**—कड़ाके की सर्दी में और बरसती वर्षा में; **वात**—तीव्र हवा में; **अग्निते**—और झुलसती गर्मी में; **महा-दुःख पाइ**—मैं अत्यन्त पीड़ा का अनुभव कर रहा हूँ।

अनुवाद

बालक ने माधवेन्द्र पुरी को वह कुंज दिखाया और कहा, "मैं इसी कुंज में रहता हूँ, अतएव मुझे कड़ाके की ठण्ड, बरसती वर्षा, वायु तथा झुलसती गर्मी के कारण अत्यन्त कष्ट हो रहा है।

গ্রামের লোক আনি' আমা কাঢ়' কুঞ্জ হৈতে ।
পর্বত-উপরি লঞা রাখ ভাল-মতে ॥ ৩৭ ॥

ग्रामेर लोक आनि' आमा काढ़' कुञ्ज हैते ।
पंर्वत-उपरि लञा राख भाल-मते ॥ ३७ ॥

ग्रामेर—गाँव के; **लोक**—लोग; **आनि'**—लाकर; **आमा**—मुझे; **काढ़'**—बाहर निकालो; **कुञ्ज हैते**—इस झाड़ी से; **पर्वत-उपरि**—पर्वत की चोटी पर; **लञा**—ले जाकर; **राख**—मुझे रखो; **भाल-मते**—अच्छी तरह।

अनुवाद

"कृपा करके गाँव के लोगों को लाकर मुझे इस झाड़ी से निकालिये और उनसे कहकर मुझे पर्वत की चोटी पर भली प्रकार स्थापित कर दीजिये।

एक मठ करि' ताहाँ करह स्थापन ।
बहु शीतल जले कर श्री-अङ्ग मार्जन ॥ ३८ ॥

एक मठ करि' ताहाँ करह स्थापन ।
बहु शीतल जले कर श्री-अङ्ग मार्जन ॥ ३८ ॥

एक—एक; **मठ**—मन्दिर; **करि'**—बनाकर; **ताहाँ**—वहाँ; **करह**—करो; **स्थापन**—स्थापना; **बहु**—बहुत; **शीतल**—ठण्डे; **जले**—जल में; **कर**—करो; **श्री-अङ्ग**—मेरे दिव्य शरीर का; **मार्जन**—स्नान।

अनुवाद

बालक ने आगे कहा, "कृपया उस पर्वत की चोटी पर एक मन्दिर बनवाइये और मुझे उस मन्दिर में स्थापित कर दीजिये। इसके बाद मुझे पर्याप्त शीतल जल से स्नान कराईये, जिससे मेरा शरीर स्वच्छ हो जाये।

बहु-दिन तोमार पथ करि निरीक्षण ।
कबे आसि' माधव आमा करिबे सेवन ॥ ३९ ॥

बहु-दिन तोमार पथ करि निरीक्षण ।
कबे आसि' माधव आमा करिबे सेवन ॥ ३९ ॥

बहु-दिन—बहुत दिन; **तोमार**—तुम्हारा; **पथ**—मार्ग; **करि**—मैं करता हूँ; **निरीक्षण**—निरीक्षण; **कबे**—कब; **आसि'**—आकर; **माधव**—श्रील माधवेन्द्रपुरी; **आमा**—मेरी; **करिबे**—वह करेगा; **सेवन**—सेवा।

अनुवाद

"मैं बहुत दिनों से तुम्हारी बाट देखता रहा हूँ और सोचता रहा हूँ कि, 'कब माधवेन्द्र पुरी यहाँ आकर मेरी सेवा करेगा?'

তোমার প্রেম-বশে করি' সেবা অঙ্গীকার ।
দর্শন দিয়া নিস্তারিব সকল সংসার ॥ ৪০ ॥

তোমার প্রেম-বশে করি' সেবা অঙ্গীকার ।
দর্শন দিয়া নিস্তারিব সকল সংসার ॥ ৪০ ॥

তোমার—तुम्हारे; **প্রেম-বশে**—प्रेम के वश में आकर; **করি'**—कर रहा हूँ; **সেবা**—सेवा; **অঙ্গীকার**—स्वीकार; **দর্শন দিয়া**—दर्शन देकर; **নিস্তারিব**—मैं उद्धार करूँगा; **সকল**—सारे; **সংসার**—भौतिक संसार का।

अनुवाद

"मैंने तुम्हारे प्रेमभाव के कारण ही तुम्हारी सेवा स्वीकार की है। इस प्रकार मैं प्रकट होऊँगा और मेरा दर्शन करने से सारे पतित लोगों का उद्धार हो जायेगा।

'শ্রী-গোপাল' নাম মোর,—গোবর্ধন-ধারী ।
বজ্রের স্থাপিত, আমি ইহাঁ অধিকারী ॥ ৪১ ॥

'শ্রী-গোপাল' নাম মোর,—গোবর্ধন-ধারী ।
বজ্রের স্থাপিত, আমি ইহাঁ অধিকারী ॥ ৪১ ॥

শ্রী-গোপাল নাম—श्री गोपाल नाम; **মোর**—मेरा; **গোবর্ধন-ধারী**—गोवर्धन धारी; **বজ্রের**—कृष्ण के प्रपौत्र वज्र से; **স্থাপিত**—स्थापित किया गया; **আমি**—मैं; **ইহাঁ**—यहाँ; **অধিকারী**—अधिकारी।

अनुवाद

"मेरा नाम गोपाल है। मैं गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला हूँ। मेरी स्थापना वज्र द्वारा की गई थी और मैं यहाँ का अधिकारी हूँ।

শৈল-উপরি হৈতে আমা কুঞ্জে লুকাঞা ।
ম্লেচ্ছ-ভয়ে সেবক মোর গেল পলাঞা ॥ ৪২ ॥

शैल-उपरि हैते आमा कुञ्जे लुकाञा ।
म्लेच्छ-भये सेवक मोर गेल पलाञा ॥ ४२ ॥

शैल-उपरि—पर्वत की चोटी; **हैते**—से; **आमा**—मुझे; **कुञ्जे**—झाड़ियों में; **लुकाञा**—छुपाकर; **म्लेच्छ-भये**—मुस्लिमों के भय से; **सेवक**—सेवक; **मोर**—मेरा; **गेल**—गया; **पलाञा**—भाग।

अनुवाद

"जब मुसलमानों का आक्रमण हुआ, तो मेरी सेवा करने वाले पुजारी ने मुझे जंगल कि इस कुंज में छिपा दिया। फिर वह आक्रमण के भय से भाग खड़ा हुआ।

সেই হৈতে রহি আমি এই কুঞ্জ-স্থানে ।
ভাল হৈল আইলা আমা কাঢ় সাবধানে ॥৪৩॥
सेइ हैते रहि आमि एइ कुञ्ज-स्थाने ।
भाल हैल आइला आमा काढ़ सावधाने ॥ ४३ ॥

सेइ हैते—उस समय से; **रहि**—रहता हूँ; **आमि**—मैं; **एइ**—इस; **कुञ्ज-स्थाने**—कुंज में; **भाल हैल**—अच्छा हुआ; **आइला**—कि तुम आये हो; **आमा**—मुझे; **काढ़**—बाहर निकालो; **सावधाने**—सावधानी से।

अनुवाद

"पुजारी के जाने के बाद से मैं इसी कुंज में रह रहा हूँ। यह अच्छा हुआ कि तुम आ गये। अब सावधानी से मुझे बाहर निकाल लो।"

এত বলি' সে-বালক অন্তর্ধান কৈল ।
জাগিয়া মাধব-পুরী বিচার করিল ॥৪৪॥
एत बलि' से-बालक अन्तर्धान कैल ।
जागिया माधव-पुरी विचार करिल ॥ ४४ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **से-बालक**—वही बालक; **अन्तर्धान कैल**—अन्तर्धान हो गया; **जागिया**—जागने पर; **माधव-पुरी**—माधवेन्द्र पुरी ने; **विचार**—विचार; **करिल**—किया।

अनुवाद

यह कहकर बालक अन्तर्धान हो गया। तब माधवेन्द्र पुरी जाग गये और अपने स्वप्न के बारे में विचार करने लगे।

श्री-कृष्णके देखिनु मुञि नारिनु चिनिते ।
एत बलि' प्रेमावेशे पड़िला भूमिते ॥ ४५ ॥

श्री-कृष्णके देखिनु मुञि नारिनु चिनिते ।
एत बलि' प्रेमावेशे पड़िला भूमिते ॥ ४५ ॥

श्री-कृष्णके देखिनु—भगवान् कृष्ण को प्रत्यक्ष देखे; **मुञि**—मैंने; **नारिनु**—असमर्थ था; **चिनिते**—पहचानने में; **एत बलि'**—यह कहकर; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **पड़िला**—गिर गये; **भूमिते**—धरती पर।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी पश्चात्ताप करने लगे, "मैंने साक्षात् भगवान् कृष्ण को देखे, किन्तु मैं उन्हें पहचान न सका!" यह कहकर वे प्रेमावेश में भूमि पर गिर पड़े।

क्षणेक रोदन करि, मन कैल थीर ।
आज्ञा-पालन लागि' हइला सुस्थिर ॥ ४६ ॥

क्षणेक रोदन करि, मन कैल धीर ।
आज्ञा-पालन लागि' हइला सुस्थिर ॥ ४६ ॥

क्षणेक—कुछ समय के लिए; **रोदन करि**—रोकर; **मन**—मन; **कैल**—किया; **धीर**—शान्त, धीर; **आज्ञा**—आज्ञा; **पालन**—पालन करने; **लागि'**—के लिए; **हइला**—हो गये; **सु-स्थिर**—शान्त।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी कुछ समय तक रोते रहे, किन्तु उसके बाद उन्होंने गोपाल की आज्ञा का पालन करने पर अपना चित्त स्थिर किया। इस तरह वे शान्त हुए।

প্রাতঃ-স্নান করি' পুরী গ্রাম-মধ্যে গেলা ।
সব লোক একত্র করি' কহিতে লাগিলা ॥ ৪৭ ॥

प्रातः-स्नान करि' पुरी ग्राम-मध्ये गेला ।
सब लोक एकत्र करि' कहिते लागिला ॥ ४७ ॥

प्रातः-स्नान—प्रातः स्नान; **करि'**—करके; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **ग्राम-मध्ये**—गाँव के मध्य; **गेला**—गये; **सब लोक**—सब लोगों को; **एकत्र करि'**—एकत्र करके; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

प्रातःकाल स्नान करने के बाद माधवेन्द्र पुरी गाँव में गये और सारे लोगों को एकत्र किया। फिर वे इस प्रकार कहने लगे।

গ্রামের ঈশ্বর তোমার——গোবর্ধন-ধারী ।
কুঞ্জে আছে, চল. তাঁরে বাহির যে করি ॥ ৪৮ ॥

ग्रामेर ईश्वर तोमार——गोवर्धन-धारी ।
कुञ्जे आछे, चल, ताँरे बाहिर ये करि ॥ ४८ ॥

ग्रामेर—गाँव के; **ईश्वर**—स्वामी; **तोमार**—तुम्हारे; **गोवर्धन-धारी**—गोवर्धन धारी; **कुञ्जे आछे**—जंगल की झाड़ियों में पड़े हैं; **चल**—चलो; **ताँरे**—उन्हें; **बाहिर ये करि**—बाहर निकालें।

अनुवाद

"इस गाँव के स्वामी, गोवर्धनधारी, कुंज में पड़े हुए हैं। आइये, चलकर उन्हें उस स्थान से बाहर निकाल लें।

অত্যন্ত নিবিড় কুঞ্জ,——নারি প্রবেশিতে ।
কুঠারি কোদালি লহ দ্বার করিতে ॥ ৪৯ ॥

अत्यन्त निविड़ कुञ्ज,——नारि प्रवेशिते ।
कुठारि कोदालि लह द्वार करिते ॥ ४९ ॥

अत्यन्त—अत्यन्त; **निविड़**—घनी; **कुञ्ज**—झाड़ियाँ; **नारि**—हम समर्थ नहीं हैं; **प्रवेशिते**—प्रवेश करने में; **कुठारि**—कुल्हाड़ियाँ; **कोदालि**—कुदाल; **लह**—ले लो; **द्वार करिते**—रास्ता बनाने के लिए।

अनुवाद

"झाड़ियाँ इतनी घनी हैं कि हम जंगल में प्रवेश नहीं कर पायेंगे। अतएव रास्ता बनाने के लिए कुल्हाड़े तथा कुदाल ले लो।"

শুনি' লোক তাঁর সঙ্গে চলিলা হরিষে ।
কুঞ্জ কাটি' দ্বার করি' করিলা প্রবেশে ॥৫০॥

শুনি' লোক তাঁর সঙ্গে চলিলা হরিষে ।
কুঞ্জ কাটি' দ্বার করি' করিলা প্রবেশে ॥৫০॥

শুনি'—सुनकर; **লোক**—लोग; **তাঁর**—उन; **সঙ্গে**—के साथ; **চলিলা**—चल पड़े; **হরিষে**—अत्यन्त प्रसन्नता से; **কুঞ্জ কাটি'**—झाड़ियों को काटकर; **দ্বার**—मार्ग; **করি'**—बनाकर; **করিলা প্রবেশে**—प्रवेश कर गये।

अनुवाद

यह सुनकर सारे लोग अत्यन्त हर्षित हो माधवेन्द्र पुरी के साथ चल पड़े। उनके निर्देशानुसार उन्होंने झाड़ियाँ काटकर रास्ता बनाया और जंगल में प्रवेश किया।

ঠাকুর দেখিল মাটী-তৃণে আচ্ছাদিত ।
দেখি' সব লোক হৈল আনন্দে বিস্মিত ॥৫১॥

ঠাকুর দেখিল মাটী-তৃণে আচ্ছাদিত ।
দেখি' সব লোক হৈল আনন্দে বিস্মিত ॥৫১॥

ঠাকুর—अर्चाविग्रह; **দেখিল**—उन्होंने देखा; **মাটী**—मिट्टी से; **তৃণে**—और घास से; **আচ্ছাদিত**—ढका हुआ; **দেখি'**—देखकर; **সব লোক**—सभी लोग; **হৈল**—हो गये; **আনন্দে**—आनन्द से; **বিস্মিত**—चकित।

अनुवाद

जब उन्होंने अर्चाविग्रह को धूल तथा घास से ढका देखा, तो सब आश्चर्य तथा हर्ष से भर गये।

আবরণ দূর করি' করিল বিদিতে ।
মহা-ভারী ঠাকুর—কেহ নারে চালাইতে ॥৫২॥

आवरण दूर करि' करिल विदिते ।
महा-भारी ठाकुर—केह नारे चालाइते ॥५२॥

आवरण—आवरण; **दूर करि'**—हटाकर; **करिल विदिते**—घोषणा की; **महा-भारी**—बहुत भारी; **ठाकुर**—अर्चाविग्रह; **केह**—कोई भी; **नारे**—समर्थ नहीं; **चालाइते**—हिलाने में।

अनुवाद

जब अर्चाविग्रह के शरीर को साफ कर दिया गया, तो उनमें से कुछ लोगों ने कहा, "यह विग्रह बहुत भारी है। इसे अकेला एक व्यक्ति हिला नहीं सकता।"

महा-महा-बलिष्ठ लोक एकत्र करिञा ।
पर्वत-उपरि गेल पुरी ठाकुर लञा ॥५३॥

महा-महा-बलिष्ठ लोक एकत्र करिञा ।
पर्वत-उपरि गेल पुरी ठाकुर लञा ॥५३॥

महा-महा-बलिष्ठ—बहुत बलवान; **लोक**—व्यक्ति; **एकत्र करिञा**—एकत्र करके; **पर्वत-उपरि**—पर्वत की चोटी पर; **गेल**—गये; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **ठाकुर लञा**—अर्चाविग्रह को लेकर।

अनुवाद

चूँकि विग्रह बहुत भारी था, अतएव कुछ बलवान लोग उसे पर्वत की चोटी पर ले जाने के लिए एकत्र हुए। माधवेन्द्र पुरी भी वहाँ गये।

पाथरेर सिंहासने ठाकुर वसाइल ।
बड़ एक पाथर पृष्ठे अवलम्ब दिल ॥५४॥

पाथरेर सिंहासने ठाकुर वसाइल ।
बड़ एक पाथर पृष्ठे अवलम्ब दिल ॥५४॥

पाथरेर—पत्थर के; **सिंह-आसने**—सिंहासन पर; **ठाकुर**—अर्चाविग्रह; **वसाइल**—स्थापित किया; **बड़**—बड़े; **एक**—एक; **पाथर**—पत्थर; **पृष्ठे**—पीछे; **अवलम्ब**—सहारा; **दिल**—दिया।

अनुवाद

एक बड़े पत्थर को सिंहासन बनाया गया और उस पर अर्चाविग्रह को

प्रतिष्ठित कर दिया गया। एक दूसरा बड़ा पत्थर विग्रह के सहारे के लिए पीछे लगा दिया गया।

গ্রামের ব্রাহ্মণ সব নব ঘট লঞা ।
গোবিন্দ-কুণ্ডের জল আনিল ছানিঞা ॥৫৫॥

গ্রামের ব্রাহ্মণ সব নব ঘট লঞা ।
গোবিন্দ-কুণ্ডের জল আনিল ছানিঞা ॥৫৫॥

ग्रामेर—गाँव के; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण पुजारी; **सब**—सब; **नव**—नौ; **घट**—जल पात्र; **लञा**—लाकर; **गोविन्द-कुण्डेर**—गोविन्द कुण्ड नामक सरोवर का; **जल**—जल; **आनिल**—लाये; **छानिञा**—छानने के लिए।

अनुवाद

गाँव के सारे ब्राह्मण पुरोहित जल के नौ घड़े लेकर एकत्र हुए और गोविन्द-कुण्ड से पानी लाया गया तथा उसे छाना गया।

নব শত-ঘট জল কৈল উপনীত ।
নানা বাদ্য-ভেরী বাজে, স্ত্রী-গণ গায় গীত ॥৫৬॥

নব শত-ঘট জল কৈল উপনীত ।
নানা বাদ্য-ভেরী বাজে, স্ত্রী-গণ গায় গীত ॥৫৬॥

नव—नौ; **शत-घट**—सौ जलपात्र; **जल**—जल; **कैल**—किया; **उपनीत**—लाये; **नाना**—नाना; **वाद्य**—वाद्य ध्वनियाँ; **भेरी**—बिगुल; **बाजे**—बजते; **स्त्री-गण**—सारी महिलाएँ; **गाय**—गाने लगी; **गीत**—कई प्रकार के गीत।

अनुवाद

अर्चाविग्रह की प्रतिष्ठा करते समय गोविन्द-कुण्ड से ९०० घड़े जल लाया गया। बिगुल तथा ढोल बजने लगे और स्त्रियाँ गीत गाने लगीं।

কেহ গায়, কেহ নাচে, মহোৎসব হৈল ।
দধি, দুগ্ধ, ঘৃত আইল গ্রামে যত ছিল ॥৫৭॥

কেহ গায়, কেহ নাচে, মহোৎসব হৈল ।
দধি, দুগ্ধ, ঘৃত আইল গ্রামে যত ছিল ॥৫৭॥

केह गाय—कुछ गाते; **केह नाचे**—कुछ नाचते; **महोत्सव हैल**—महोत्सव हो गया; **दधि**—दही; **दुग्ध**—दूध; **घृत**—घी; **आइल**—लाया गया; **ग्रामे**—गाँव में; **यत**—जितना; **छिल**—था।

अनुवाद

प्रतिष्ठा-उत्सव के समय कुछ लोग गा रहे थे तो कुछ नाच रहे थे। गाँव का सारा दूध, दही तथा घी उत्सव के लिए लाया गया।

ভোগ-সামগ্রী আইল সন্দেশাদি যত ।
নানা উপহার, তাহা কহিতে পারি কত ॥৫৮॥

भोग-सामग्री आइल सन्देशादि यत ।
नाना उपहार, ताहा कहिते पारि कत ॥५८॥

भोग-सामग्री—भोजन की सामग्री; **आइल**—लाई गई; **सन्देश-आदि**—सन्देश आदि मिठाइयाँ; **यत**—सभी प्रकार की; **नाना**—नाना; **उपहार**—उपहार; **ताहा**—उन्हें; **कहिते**—वर्णन करने में; **पारि**—समर्थ हूँ; **कत**—कितना।

अनुवाद

वहाँ पर नाना प्रकार के व्यंजन तथा मिठाइयाँ और अन्य उपहार लाये गये। मैं उन सबका वर्णन कर पाने में असमर्थ हूँ।

তুলসী আদি, পুষ্প, বস্ত্র আইল অনেক ।
আপনে মাধব-পুরী কৈল অভিষেক ॥৫৯॥

तुलसी आदि, पुष्प, वस्त्र आइल अनेक ।
आपने माधव-पुरी कैल अभिषेक ॥५९॥

तुलसी—तुलसी दल; **आदि**—और अन्य; **पुष्प**—फूल, पुष्प; **वस्त्र**—वस्त्र; **आइल**—आ गये; **अनेक**—अनेक; **आपने**—स्वयं; **माधव-पुरी**—श्री माधवेन्द्रपुरी ने; **कैल**—किया; **अभिषेक**—स्थापना महोत्सव के आरम्भ में स्नान (अभिषेक)।

अनुवाद

गाँव वाले प्रचुर मात्रा में तुलसीदल, फूल तथा विविध प्रकार के वस्त्र ले आये। तब श्री माधवेन्द्र पुरी ने स्वयं अभिषेक (स्नान कराने का उत्सव) प्रारम्भ किया।

तात्पर्य

हरि-भक्ति-विलास (छठा विलास, श्लोक ३०) में बतलाया गया है कि अर्चाविग्रह को दही तथा दूध-मिश्रित जल से स्नान कराना चाहिए और साथ ही शंख, घंटियाँ तथा अन्य वाद्य बजाकर *"ॐ भगवते वासुदेवाय नमः"* मन्त्र का तथा *ब्रह्म-संहिता* के श्लोक *चिन्तामणिप्रकरसद्मसु कल्पवृक्ष लक्षावृतेषु सुरभिरभिपालयन्तम्* से शुरू होने वाले श्लोकों का उच्चारण करना चाहिए।

অমঙ্গলা দূর করি' করাইল স্নান ।
বহু তৈল দিয়া কৈল শ্রী-অঙ্গ চিক্কণ ॥ ৬০ ॥

অমঙ্গলা দূর করি' করাইল স্নান ।
বহু তৈল দিয়া কৈল শ্রী-অঙ্গ চিক্কণ ॥ ৬০ ॥

अमङ्गला—सारा अमंगल; **दूर करि'**—दूर करके; **कराइल**—करवाया; **स्नान**—स्नान; **बहु**—बहुत; **तैल**—तेल; **दिया**—लगाया; **कैल**—किया; **श्री-अङ्ग**—शरीर; **चिक्कण**—चिकना।

अनुवाद

जब मंत्रोच्चारण से सारा अमंगल दूर हो गया, तब अर्चाविग्रह का अभिषेक प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम विग्रह पर प्रचुर तेल मला गया, जिससे उनका शरीर चिकना हो उठा।

পঞ্চ-গব্য, পঞ্চামৃতে স্নান করাঞা ।
মহা-স্নান করাইল শত ঘট দিঞা ॥ ৬১ ॥

পঞ্চ-গব্য, পঞ্চামৃতে স্নান করাঞা ।
মহা-স্নান করাইল শত ঘট দিঞা ॥ ৬১ ॥

पञ्च-गव्य—गाय से प्राप्त पाँच पदार्थ, पंचगव्य; **पञ्च-अमृते**—पंचामृत; **स्नान**—स्नान; **कराञा**—कराकर; **महा-स्नान**—घी और जल से महास्नान; **कराइल**—करवाया; **शत**—एक सौ; **घट**—जल के घड़ों; **दिञा**—से।

अनुवाद

प्रथम स्नान के बाद पंचगव्य से तथा फिर पंचामृत से स्नान कराया

गया। फिर एक सौ घड़ों में लाये गये घी तथा जल से महास्नान कराया गया।

तात्पर्य

पंचगव्य दूध, दही, घी, गोमूत्र तथा गोबर से बनता है। ये सारे पदार्थ गाय से प्राप्त होते हैं, अतएव हम कल्पना कर सकते हैं कि गाय कितनी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके मूत्र तथा गोबर की विग्रह को स्नान कराने के लिए जरूरत पड़ती है। पंचामृत में पाँच प्रकार के अमृत—दही, दूध, घी, शहद तथा चीनी मिले रहते हैं। इस के भी अधिकांश अवयव गाय से प्राप्त होते हैं। इन्हें सुस्वादु बनाने के लिए चीनी तथा शहद मिलाया जाता है।

पुनः तैल दिया कैल श्री-अङ्ग चिक्कण ।
शङ्ख-गन्धोदके कैल स्नान समाधान ॥ ६२॥

पुनः तैल दिया कैल श्री-अङ्ग चिक्कण ।
शङ्ख-गन्धोदके कैल स्नान समाधान ॥ ६२॥

पुनः—पुनः; **तैल दिया**—तेल से; **कैल**—किया; **श्री-अङ्ग**—अर्चाविग्रह का शरीर; **चिक्कण**—चिकना; **शङ्ख-गन्ध-उदके**—पुष्पों और चन्दन लेप से सुगन्धित और शंख में रखे जल से; **कैल**—किया; **स्नान**—स्नान; **समाधान**—सम्पन्न।

अनुवाद

महास्नान के बाद पुनः विग्रह को सुगन्धित तेल से मलकर उनके शरीर को चिकना किया गया। तत्पश्चात् एक शंख में सुगन्धित जल भरकर अन्तिम अभिषेक सम्पन्न किया गया।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने इसकी टीका करते हुए *हरिभक्ति-विलास* से उद्धरण दिया है। जौ का आटा, गेहूँ का आटा, सिन्दूर, उड़द की पिसी दाल तथा *आवाटा* (पिसे चावल तथा केले का चूर्ण) को गाय की पूँछ के बाल से बने ब्रश (तूली) से विग्रह के शरीर पर लेपा जाता है। इससे अच्छी चमक आ जाती है। विग्रह के शरीर पर मला जाने वाला तेल सुगंधित होना चाहिए। महास्नान सम्पन्न कराने के लिए विग्रह के ऊपर कम-से-कम २ १/२ मान (लगभग २४ गैलन) जल उड़ेलना चाहिए।

श्री-अङ्ग मार्जन करि' वस्त्र पराइल ।
चन्दन, तुलसी, पुष्प-माला अङ्गे दिल ॥ ६७ ॥

श्री-अङ्ग मार्जन करि' वस्त्र पराइल ।
चन्दन, तुलसी, पुष्प-माला अङ्गे दिल ॥ ६३ ॥

श्री-अङ्ग—अर्चाविग्रह का दिव्य शरीर; **मार्जन करि'**—स्वच्छ करके, धोकर; **वस्त्र**—वस्त्र; **पराइल**—पहनाए गये; **चन्दन**—चन्दन का लेप; **तुलसी**—तुलसी दल; **पुष्प-माला**—पुष्पमालाएँ; **अङ्गे**—शरीर पर; **दिल**—पहनाई गईं।

अनुवाद

विग्रह का शरीर स्वच्छ करने के बाद उन्हें सुन्दर नये वस्त्र पहनाये गये। फिर विग्रह पर चन्दन, तुलसी-माला तथा अन्य सुगन्धित फूलों की मालाएँ पहनाई गईं।

धूप, दीप, करि' नाना भोग लागाइल ।
दधि-दुग्ध-सन्देशादि यत किछु आइल ॥ ६४ ॥

धूप, दीप, करि' नाना भोग लागाइल ।
दधि-दुग्ध-सन्देशादि ग्रत किछु आइल ॥ ६४ ॥

धूप—धूप; **दीप**—दीप; **करि'**—जलाकर; **नाना**—नाना; **भोग**—भोग; **लागाइल**—लगाए गये; **दधि**—दही; **दुग्ध**—दूध; **सन्देश**—सन्देश मिठाइयाँ; **आदि**—आदि; **ग्रत**—इतनी; **किछु**—कुछ; **आइल**—प्राप्त हुई।

अनुवाद

अभिषेक सम्पन्न हो जाने के बाद अर्चाविग्रह को धूप तथा दीप अर्पित किये गये और विभिन्न प्रकार का भोग अर्पित किया गया। भोग में दही, दूध तथा अनेक मिठाइयाँ सम्मिलित थीं।

सुवासित जल नव-पात्रे समर्पिल ।
आचमन दिया से ताम्बूल निवेदिल ॥ ६५ ॥

सुवासित जल नव-पात्रे समर्पिल ।
आचमन दिया से ताम्बूल निवेदिल ॥ ६५ ॥

सुवासित जल—सुगन्धित जल; **नव-पात्रे**—नये पात्रों में; **समर्पिल**—समर्पित किये

गये; **आचमन दिया**—आचमन (पाँव और मुख धोने के लिए जल) भेंट करते समय; **से**—उसमें; **ताम्बूल**—पान और मसाले; **निवेदिल**—भेंट किये गये।

अनुवाद

सर्वप्रथम अर्चाविग्रह को तरह-तरह का भोग अर्पित किया गया, फिर नये पात्रों में सुवासित पीने का जल और तब आचमन के लिए जल दिया गया। अन्त में मसालेदार पान का भोग लगाया गया।

आरात्रिक करि' कैल बहुत स्तवन ।
दण्डवत्करि' कैल आत्म-समर्पण ॥ ६६ ॥

आरात्रिक करि' कैल बहुत स्तवन ।
दण्डवत्करि' कैल आत्म-समर्पण ॥ ६६ ॥

आरात्रिक—आरती करना; **करि'**—पूर्ण करके; **कैल**—की; **बहुत**—बहुत प्रकार की; **स्तवन**—स्तुतियाँ; **दण्डवत्**—दण्डवत् प्रणाम; **करि'**—करके; **कैल**—किया; **आत्म-समर्पण**—आत्म-समर्पण।

अनुवाद

तांबूल तथा पान देने के बाद भोग आरती सम्पन्न की गई। अन्त में हर एक ने विविध प्रार्थनाएँ कीं तथा विग्रह को पूर्ण आत्मसमर्पण के भाव में दण्डवत् प्रणाम किया।

ग्रामेर यतेक तण्डुल, दालि गोधूम-चूर्ण ।
सकल आनिया दिल पर्वत हैल पूर्ण ॥ ६७ ॥

ग्रामेर यतेक तण्डुल, दालि गोधूम-चूर्ण ।
सकल आनिया दिल पर्वत हैल पूर्ण ॥ ६७ ॥

ग्रामेर—गाँव के; **यतेक**—सभी; **तण्डुल**—चावल; **दालि**—दाल; **गोधूम-चूर्ण**—गेहूँ का आटा; **सकल**—सभी; **आनिया**—लाकर; **दिल**—भेंट किया; **पर्वत**—पर्वत की चोटी पर; **हैल**—हो गई; **पूर्ण**—भर गई।

अनुवाद

ज्योंही गाँववालों को पता चला कि अर्चाविग्रह की प्रतिष्ठा होने जा

रही है, वे अपने यहाँ से सारा चावल, दाल तथा गेहूँ का आटा ले आये। यह सामग्री इतनी मात्रा में थी कि पर्वत की चोटी उससे पूरी तरह भर गई।

কুম্ভকার ঘরে ছিল যে মৃদ্ভাজন ।
সব আনাইল প্রাতে, চড়িল রন্ধন ॥৬৮॥

कुम्भकार घरे छिल ये मृद्भाजन ।
सब आनाइल प्राते, चड़िल रन्धन ॥६८॥

कुम्भकार—गाँव के कुम्हारों के; **घरे**—घरों में; **छिल**—थे; **ये**—जो कुछ; **मृद्-भाजन**—मिट्टी के बर्तन; **सब**—सब; **आनाइल**—लाये गये; **प्राते**—प्रातःकाल; **चड़िल**—आरम्भ किया; **रन्धन**—पकाना।

अनुवाद

जब गाँव वाले चावल, दाल तथा आटा ले आये, तो गाँव के कुम्हार भोजन पकाने के सभी प्रकार के बर्तन ले आये और प्रातःकाल से भोजन पकाना प्रारम्भ हुआ।

দশ-বিপ্র অন্ন রান্ধি' করে এক স্তূপ ।
জনা-পাঁচ রান্ধে ব্যঞ্জনাদি নানা সূপ ॥৬৯॥

दश-विप्र अन्न रान्धि' करे एक स्तूप ।
जना-पाँच रान्धे व्यञ्जनादि नाना सूप ॥६९॥

दश-विप्र—दस ब्राह्मण; **अन्न**—अन्न; **रान्धि'**—पकाकर; **करे**—करते हैं; **एक स्तूप**—एक ढेर में; **जना-पाँच**—पाँच ब्राह्मण; **रान्धे**—पकाते हैं; **व्यञ्जन-आदि**—व्यंजन आदि, सब्जियाँ; **नाना**—नाना प्रकार के; **सूप**—रसदार।

अनुवाद

दस ब्राह्मणों ने अन्न पकाया और पाँच ब्राह्मणों ने सूखी तथा रसदार सब्जियाँ पकाईं।

বন্য শাক-ফল-মূলে বিবিধ ব্যঞ্জন ।
কেহ বড়া-বড়ি-কড়ি করে বিপ্র-গণ ॥৭০॥

वन्य शाक-फल-मूले विविध व्यञ्जन ।
केह बड़ा-बड़ि-कड़ि करे विप्र-गण ॥ ७० ॥

वन्य शाक—जंगली पालक; **फल**—फल; **मूले**—जड़ों से; **विविध**—विविध; **व्यञ्जन**—व्यंजन; **केह**—किसी ने; **बड़ा-बड़ि**—बड़ा बड़ी; **कड़ि**—दाल के गूदे से; **करे**—बनाई; **विप्र-गण**—सभी ब्राह्मणों ने।

अनुवाद

सारी तरकारियाँ जंगल से एकत्र किये गये शाक, जड़ों तथा फलों से बनाई गईं। किसी ने दाल पीसकर बड़े तथा बड़ियाँ बनाईं। इस तरह ब्राह्मणों ने सभी तरह के व्यंजन बनाए।

जना पाँच-सात रूटि करे राशि-राशि ।
अन्न-व्यञ्जन सब रहे घृते भासि' ॥ ७१ ॥
जना पाँच-सात रुटि करे राशि-राशि ।
अन्न-व्यञ्जन सब रहे घृते भासि' ॥ ७१ ॥

जना पाँच-सात—पाँच सात लोगों ने; **रुटि**—चपातियाँ; **करे**—बनाईं; **राशि-राशि**—बड़ी संख्या में; **अन्न-व्यञ्जन**—अन्न और व्यंजन (तरकारियाँ); **सब**—सब; **रहे**—रहे; **घृते**—घी में; **भासि'**—तैरती हुई।

अनुवाद

पाँच-सात व्यक्तियों ने बहुत सी रोटियाँ बनाईं और उन्हें पर्याप्त घी से चुपड़ दिया। सारी सब्जियाँ, दाल तथा भात भी घी से सिक्त थे।

नव-वस्त्र पाति' ताहे पलाशेर पात ।
राञ्धि' राञ्धि' तार उपर राशि कैल भात ॥ ७२ ॥
नव-वस्त्र पाति' ताहे पलाशेर पात ।
रान्धि' रान्धि' तार उपर राशि कैल भात ॥ ७२ ॥

नव-वस्त्र—नये वस्त्र; **पाति'**—फैलाकर; **ताहे**—उन पर; **पलाशेर पात**—पलाश के पत्ते; **रान्धि' रान्धि'**—पका पकाकर; **तार उपर**—उनके ऊपर; **राशि**—ढेर लगाया गया; **कैल**—किया; **भात**—भात।

अनुवाद

पके चावलों का पलाश के पत्तों में ढेर लगा दिया गया। ये पत्ते भूमि पर बिछे नये वस्त्र के ऊपर फैले थे।

তার পাশে রুটি-রাশির পর্বত হইল ।
সূপ-আদি-ব্যঞ্জন-ভাণ্ড চৌদিকে ধরিল ॥৭৩॥

तार पाशे रुटि-राशिर पर्वत हइल ।
सूप-आदि-व्यञ्जन-भाण्ड चौदिके धरिल ॥७३॥

तार पाशे—भात के ढेर के पास चारों ओर; **रुटि**—चपातियों के; **राशिर**—ढेर के; **पर्वत**—एक अन्य छोटा टीला; **हइल**—बनाई गई; **सूप-आदि**—सभी रसदार तरकारियों की; **व्यञ्जन**—और सभी अन्य सब्जियों के; **भाण्ड**—बर्तन; **चौदिके**—चारों ओर; **धरिल**—रखे गये।

अनुवाद

पके चावल के ढेर के पास ही रोटियों का ढेर था और सारी तरकारियों तथा रसदार व्यंजनों को विभिन्न पात्रों में भरकर उनके चारों ओर रख दिया गया था।

তার পাশে দধি, দুগ্ধ, মাঠা, শিখরিণী ।
পায়স, মথনী, সর পাশে ধরি আনি' ॥৭৪॥

तार पाशे दधि, दुग्ध, माठा, शिखरिणी ।
पायस, मथनी, सर पाशे धरि आनि' ॥७४॥

तार पाशे—तरकारियों के पास; **दधि**—दही; **दुग्ध**—दूध; **माठा**—मट्ठा; **शिखरिणी**—शिखरिणी, दही से बना एक मीठा व्यंजन; **पायस**—मीठे चावल; **मथनी**—मक्खन; **सर**—दही के ऊपर की मलाई; **पाशे**—एक ओर; **धरि**—रखकर; **आनि'**—लाकर।

अनुवाद

तरकारियों के पास दही, दूध, मट्ठा, शिखरिणी, खीर, मक्खन तथा दही की मलाई भरे पात्र रख दिये गये।

तात्पर्य

इस प्रकार का उत्सव *अन्नकूट* कहलाता है, जिसमें प्रसाद-वितरण हेतु पकाये चावल का ढेर एक छोटी टीले के रूप में लगा दिया जाता है।

হেন-মতে অন্নকূট করিল সাজন ।
পুরী-গোসাঞি গোপালেরে কৈল সমর্পণ ॥৭৫॥

হেন-মতে অন্ন-কূট করিল সাজন ।
পুরী-গোসাঞি গোপালেরে কৈল সমর্পণ ॥৭৫॥

হেন-মতে—इस प्रकार; **অন্নকূট**—अन्नकूट उत्सव; **করিল**—किया; **সাজন**—मनाया गया; **পুরী-গোসাঞি**—माधवेन्द्र पुरी ने; **গোপালেরে**—गोपाल अर्चाविग्रह को; **কৈল**—किया; **সমর্পণ**—समर्पण ।

अनुवाद

इस प्रकार अन्नकूट उत्सव मनाया गया और श्री माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी ने स्वयं गोपाल को हर वस्तु का भोग लगाया।

অনেক ঘট ভরি' দিল সুবাসিত জল ।
বহু-দিনের ক্ষুধায় গোপাল খাইল সকল ॥৭৬॥

অনেক ঘট ভরি' দিল সুবাসিত জল ।
বহু-দিনের ক্ষুধায় গোপাল খাইল সকল ॥৭৬॥

অনেক ঘট—अनेक जल के घड़े; **ভরি'**—भरकर; **দিল**—दिया; **সুবাসিত**—सुगन्धित; **জল**—जल; **বহু-দিনের**—बहुत दिनों की; **ক্ষুধায়**—भूख के कारण; **গোপাল**—गोपाल ने; **খাইল**—खाया; **সকল**—सब कुछ।

अनुवाद

पीने के लिए अनेक घड़ों में सुगंधित जल भरा गया और भगवान् श्री गोपाल ने, जो इतने दिनों से भूखे थे, अर्पित की गई प्रत्येक वस्तु खाई।

যদ্যপি গোপাল সব অন্ন-ব্যঞ্জন খাইল ।
তাঁর হস্ত-স্পর্শে পুনঃ তেমনি হ-ইল ॥৭৭॥

यद्यपि गोपाल सब अन्न-व्यञ्जन खाइल ।
ताँर हस्त-स्पर्शे पुनः तेमनि हइल ॥ ७७॥

यद्यपि—यद्यपि; **गोपाल**—गोपाल ने; **सब**—सब; **अन्न-व्यञ्जन**—अन्न और व्यंजन; **खाइल**—खा लिये; **ताँर**—उनके; **हस्त**—हाथ के; **स्पर्शे**—स्पर्श से; **पुनः**—पुनः; **तेमनि**—पहले की भाँति; **हइल**—हो गया।

अनुवाद

यद्यपि श्री गोपाल ने भोग लगाई गई सारी सामग्री खा ली थी, फिर भी उनके दिव्य हाथ के स्पर्श से हर वस्तु पूर्ववत् बनी रही।

तात्पर्य

नास्तिक लोग समझ नहीं पायेंगे कि किस तरह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् अपने अर्चाविग्रह रूप में प्रकट होकर भक्तों द्वारा अर्पित सारा भोजन खा सकते हैं। *भगवद्गीता* (९.२६) में कृष्ण कहते हैं :

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥

"यदि कोई प्रेम तथा भक्तिपूर्वक मुझे एक पत्ती, एक फूल, फल या जल भी अर्पित करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ।" चूँकि भगवान् पूर्ण हैं, अतएव वे अपने भक्तों द्वारा भोग लगाई गई हर वस्तु को खाते हैं। फिर भी उनके दिव्य हाथ के स्पर्श से सारा भोजन पूर्ववत् बना रहता है। केवल गुण में अन्तर आता है। भोग लगाने के पूर्व भोजन कुछ और होता है और भोग लगने के बाद उसमें दिव्य गुण आ जाता है। चूँकि भगवान् *पूर्ण* हैं, इसलिए खाने के बाद भी वे वैसे के वैसे रहते हैं। *पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते* (*ईशोपनिषद्*)। कृष्ण को भोग लगाया गया भोजन गुण में कृष्ण जैसा ही होता है। जिस प्रकार कृष्ण *अव्यय* अर्थात् नष्ट न होने वाले हैं, उसी तरह उनके द्वारा खाया गया भोजन उनसे अभिन्न है और वह पूर्ववत् बना रहता है।

इसके अतिरिक्त कृष्ण अपनी किसी भी दिव्य इन्द्रिय से भोजन कर सकते हैं। वे भोजन को देखकर या उसका स्पर्श करके भी खा सकते हैं। यह सोचना भी गलत है कि कृष्ण के लिए भोजन करना आवश्यक है। वे साधारण मनुष्य की तरह भूखे नहीं होते, तो भी वे अपने आपको इस रूप में प्रस्तुत करते हैं

मानो भूखे हों; अतएव वे किसी भी प्रकार का भोजन खा सकते हैं, चाहे मात्रा कितनी ही क्यों न हो। कृष्ण द्वारा भोजन करने में जो दर्शन निहित है उसे दिव्य इन्द्रियों द्वारा ही समझा जा सकता है। जब हमारी इन्द्रियाँ भगवान् की भक्ति निरन्तर करते-करते शुद्ध हो जाती हैं, तभी हम कृष्ण के कार्यकलाप, नाम, रूप, गुण, लीलाएँ तथा पार्षदों को समझ सकते हैं।

अतः श्रीकृष्णनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः।
सेवोन्मुखे हि जिह्वादौ स्वयमेव स्फुरत्यदः॥

"कृष्ण को कोई भी अपनी कुन्द भौतिक इन्द्रियों के द्वारा नहीं समझ सकता। किन्तु वे भक्तों की दिव्य प्रेमाभक्ति से प्रसन्न होकर उनके समक्ष प्रकट होते हैं।" (*भक्तिरसामृतसिन्धु* १.२.२३४) भक्तगण अनुभूति से कृष्ण का साक्षात्कार करते हैं। एक संसारी विद्वान के लिए भक्ति-हीन रहकर कृष्ण तथा उनकी लीलाओं को शोध-कार्य के द्वारा समझ पाना सम्भव नहीं है।

ইহা অনুভব কৈল মাধব গোসাঞি ।
তাঁর ঠাঞি গোপালের লুকান কিছু নাই ॥৭৮॥

इहा अनुभव कैल माधव गोसाञि ।
ताँर ठाञि गोपालेर लुकान किछु नाइ ॥७८॥

इहा—यह; **अनुभव कैल**—अनुभव किया; **माधव गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी; **ताँर ठाञि**—अपने सम्मुख; **गोपालेर**—भगवान् गोपाल का; **लुकान**—रहस्य, भेद; **किछु**—कुछ भी; **नाइ**—नहीं है।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी ने दिव्य अनुभव से जान लिया कि किस तरह गोपाल द्वारा सब कुछ खा लिया गया और फिर भी भोजन ज्यों का त्यों बना रहा। भगवान् के भक्तों से कुछ छिपा नहीं रहता।

এক-দিনের উদ্যোগে ঐছে মহোৎসব কৈল ।
গোপাল-প্রভাবে হয়, অন্যে না জানিল ॥৭৯॥

एक-दिनेर उद्योगे ऐछे महोत्सव कैल ।
गोपाल-प्रभावे हय, अन्ये ना जानिल ॥७९॥

एक-दिनेर उद्योगे—एक दिन के प्रयास से; **ऐछे**—ऐसा; **महोत्सव**—महोत्सव; **कैल**—मनाया गया; **गोपाल**—गोपाल की; **प्रभावे**—शक्ति से; **हय**—सम्भव है; **अन्ये**—अन्य लोग; **ना**—नहीं; **जानिल**—जानते।

अनुवाद

यह अद्भुत महोत्सव तथा श्री गोपालजी की प्रतिष्ठा, दोनों की व्यवस्था एक ही दिन में हो गई थी। निस्सन्देह, यह सब गोपाल की शक्ति से ही सम्भव हो सका। इसे भक्तों के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं समझ सकता।

तात्पर्य

कुछ ही समय में (५ साल के भीतर) कृष्णभावनामृत आन्दोलन सारे विश्व में फैल गया है और संसारी लोग यह देखकर अत्यन्त आश्चर्यचकित हैं। किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से हम जानते हैं कि कृष्ण की कृपा से सब कुछ सम्भव है। तो फिर कृष्ण को पाँच वर्ष क्यों लगे? वे तो पाँच ही दिनों में अपने नाम तथा यश को सारे विश्व में जंगल की आग की तरह फैला सकते हैं। जिन लोगों की कृष्ण के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति है, वे समझ सकते हैं कि यह सब श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से कितने अद्भुत ढंग से घटित होते हैं। हम तो निमित्त मात्र हैं। कुरुक्षेत्र भीषण युद्ध में अर्जुन मात्र अठारह दिनों के भीतर ही विजयी हुआ, क्योंकि उस पर कृष्ण की कृपा थी।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम॥

"जहाँ भी योगेश्वर कृष्ण हैं और जहाँ भी सर्वोपरि धनुर्धर अर्जुन है, वहीं ऐश्वर्य, विजय, अद्वितीय शक्ति तथा नैतिकता रहती है। यह मेरा मत है।" (*भगवद्गीता* १८.७८)

यदि हमारे कृष्णभावनामृत-आन्दोलन के प्रचारक कृष्ण के निष्ठावान भक्त बनें, तो कृष्ण सदैव उनके साथ होंगे, क्योंकि वे अपने सभी भक्तों पर अत्यन्त दयालु तथा उनके अनुकूल रहते हैं। जिस तरह कृष्ण तथा अर्जुन कुरुक्षेत्र युद्ध में विजयी हुए थे, उसी तरह यह कृष्णभावनामृत आन्दोलन भी निश्चित रूप से विजयी होगा, यदि हम भगवान् के निष्ठावान भक्त बने रहेंगे और पूर्ववर्ती

आचार्यों (छः गोस्वामियों तथा अन्य भगवद्भक्तों) की शिक्षा के अनुसार सेवा करेंगे। जैसाकि नरोत्तम दास ठाकुर ने कहा है : *ताँदेर चरण सेवि भक्त-सने वास, जनमे-जनमे हय एइ अभिलाष।* कृष्णभावनामृत के भक्तों की यही आकांक्षा होनी चाहिए कि वे सदैव भक्तों की संगति में रहें। *भक्त-सने वास*—वे कृष्णभावनामृत संघ या आन्दोलन से बाहर नहीं जा सकते। कृष्णभावनामृत संघ में हमें चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय का प्रचार करके तथा उनके नाम और यश को विश्व-भर में प्रसारित करके अपने पूर्ववर्ती आचार्यों की सेवा करनी चाहिए। यदि हम इस संघ में रहते हुए इसका गम्भीरतापूर्वक प्रयास करें, तो यह अवश्य सफल होगा। भौतिक दृष्टि से यह अनुमान लगाना आवश्यक नहीं है कि ऐसा किस प्रकार होगा। किन्तु बिना किसी आशंका के, इसे तो कृष्ण-कृपा से होना ही है।

আচমন দিয়া দিল বিড়ক-সঞ্চয় ।
আরতি করিল লোকে, করে জয় জয় ॥৮০॥

आचमन दिया दिल विड़क-सञ्चय ।
आरति करिल लोके, करे जय जय ॥८०॥

आचमन—आचमन का जल; **दिया**—अर्पण; **दिल**—किया; **विड़क-सञ्चय**—पान सुपारी; **आरति करिल**—आरती की; **लोके**—सारे लोगों ने; **करे**—की; **जय जय**—जय जयकार।

अनुवाद

श्री माधवेन्द्र पुरी ने गोपाल को आचमन के लिए जल दिया और चबाने के लिए पान दिये। उसके बाद जब आरती की गई, तो सारे लोगों ने गोपाल की जय जयकार की।

শয্যা করাইল, নূতন খাট আনাঞা ।
নব বস্ত্র আনি' তার উপরে পাতিয়া ॥৮১॥

शय्या कराइल, नूतन खाट आनाञा ।
नव वस्त्र आनि' तार उपरे पातिया ॥८१॥

शय्या—शय्या; **कराइल**—बनाई; **नूतन**—नई; **खाट**—खाट; **आनाञा**—लाकर; **नव वस्त्र**—नये वस्त्र; **आनि'**—लाकर; **तार**—खाट; **उपरे**—के ऊपर; **पातिया**—बिछाकर।

अनुवाद

भगवान् के विश्राम का प्रबन्ध करने के उद्देश्य से श्रील माधवेन्द्र पुरी एक नई चारपाई ले आये और उसके ऊपर एक नई चादर बिछाकर शय्या प्रस्तुत कर दी गयी।

तृण-टाटि दिया चारि-दिकावरिल ।
उपरेते एक टाटि दिया आच्छादिल ॥८२॥

तृण-टाटि दिया चारि-दिक् आवरिल ।
उपरेते एक टाटि दिया आच्छादिल ॥८२॥

तृण-टाटि—तृण की चटाई; **दिया**—के साथ; **चारि-दिक्**—चारों ओर; **आवरिल**—ढक दिया; **उपरेते**—ऊपर से; **एक**—एक; **टाटि**—वैसी ही तृण की चटाई; **दिया**—के साथ; **आच्छादिल**—ढक दिया।

अनुवाद

चारपाई को चारों ओर से चटाई से ढककर एक अस्थायी मन्दिर बना दिया गया। इस तरह एक शय्या थी और उसे ढकने के लिए चटाईयाँ थीं।

पूरी-गोसाञि आज्ञा दिल सकल ब्राह्मणे ।
आ-बाल-वृद्ध ग्रामेर लोक कराह भोजने ॥८३॥

पुरी-गोसाञि आज्ञा दिल सकल ब्राह्मणे ।
आ-बाल-वृद्ध ग्रामेर लोक कराह भोजने ॥८३॥

पुरी-गोसाञि—माधवेन्द्रपुरी ने; **आज्ञा**—आज्ञा; **दिल**—दी; **सकल ब्राह्मणे**—सभी ब्राह्मणों को; **आ-बाल-वृद्ध**—बच्चों से लेकर सभी वृद्धों को; **ग्रामेर**—गाँव के; **लोक**—लोगों को; **कराह**—कराओ; **भोजने**—भोजन।

अनुवाद

भगवान् को शयन कराने के उपरान्त माधवेन्द्र पुरी ने प्रसाद बनाने

वाले सारे ब्राह्मणों को एकत्र किया और उनसे कहा, "अब बच्चे से लेकर वृद्ध तक हर एक को भरपेट भोजन कराइये।"

सबे बसि' क्रमे क्रमे भोजन करिल ।
ब्राह्मण-ब्राह्मणी-गणे आगे खाओयाइल ॥ ८४॥

सबे बसि' क्रमे क्रमे भोजन करिल ।
ब्राह्मण-ब्राह्मणी-गणे आगे खाओयाइल ॥ ८४॥

सबे—सबने; **बसि'**—बैठकर; **क्रमे क्रमे**—बारी बारी; **भोजन करिल**—भोजन किया; **ब्राह्मण-ब्राह्मणी-गणे**—ब्राह्मणों और उनकी पत्नियाँ; **आगे**—पहले; **खाओयाइल**—खिलाया गया।

अनुवाद

वहाँ पर एकत्र सारे लोग प्रसाद ग्रहण करने के लिए बैठ गये और एक-एक करके सबने प्रसाद ग्रहण किया। सबसे पहले सभी ब्राह्मणों तथा उनकी पत्नियों को भोजन कराया गया।

तात्पर्य

वर्णाश्रम प्रथा के अनुसार ब्राह्मणों का सदैव सबसे पहले सम्मान किया जाता है। अतएव उत्सव में सर्वप्रथम ब्राह्मणों तथा उनकी पत्नियों को प्रसाद दिया गया और उसके बाद अन्यों (क्षत्रियों, वैश्यों तथा शूद्रों) को। यह प्रथा सदैव से रही है और आज भी भारत में चल रही है, यद्यपि स्मार्त ब्राह्मण अब योग्य नहीं हैं। वर्णाश्रम विधि-विधानों के कारण यह प्रथा अभी तक चल रही है।

अन्य ग्रामेर लोक यत देखिते आइल ।
गोपाल देखिया सब प्रसाद खाइल ॥ ८५॥

अन्य ग्रामेर लोक यत देखिते आइल ।
गोपाल देखिया सब प्रसाद खाइल ॥ ८५॥

अन्य—अन्य; **ग्रामेर**—गाँवों के; **लोक**—लोग; **यत**—सब; **देखिते**—देखने के लिए; **आइल**—आये; **गोपाल**—भगवान् गोपाल; **देखिया**—देखकर; **सब**—सब; **प्रसाद**—प्रसाद; **खाइल**—खाया।

अनुवाद

गोवर्धन गाँव के लोगों ने ही नहीं अपितु अन्य गाँवों से आये हुए लोगों ने भी प्रसाद ग्रहण किया। उन्होंने गोपाल विग्रह का दर्शन भी किया और उन्हें प्रसाद भी मिला।

देखिया पुरीर प्रभाव लोके चमत्कार ।
पूर्व अन्नकूट येन हैल साक्षात्कार ॥ ८६॥

देखिया पुरीर प्रभाव लोके चमत्कार ।
पूर्व अन्नकूट ग्रेन हैल साक्षात्कार ॥ ८६ ॥

देखिया—देखकर; **पुरीर**—माधवेन्द्र पुरी का; **प्रभाव**—प्रभाव; **लोके**—सभी लोग; **चमत्कार**—चकित हो गये; **पूर्व**—पहले; **अन्न-कूट**—कृष्ण के समय अन्नकूट उत्सव; **ग्रेन**—जैसे ; **हैल**—हो गया; **साक्षात्कार**—साक्षात्कार।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी का प्रभाव देखकर वहाँ एकत्र सारे लोग आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने देखा कि कृष्ण के समय जो अन्नकूट उत्सव मनाया गया था, वही अब श्री माधवेन्द्र पुरी की कृपा से पुनः मनाया जा रहा था।

तात्पर्य

पुर्वकाल में, द्वापर युग के अन्त में, वृन्दावन के ग्वालों ने इन्द्रराज की पूजा का प्रबन्ध किया, किन्तु कृष्ण के कहने पर उन्होंने उसका परित्याग कर दिया। उसके बदले उन्होंने गायों, ब्राह्मणों तथा गोवर्धन पर्वत की पूजा का उत्सव सम्पन्न किया। उस समय कृष्ण ने अपना विस्तार करते हुए कहा था, "मैं गोवर्धन पर्वत हूँ।" इस तरह उन्होंने गोवर्धन पर्वत को अर्पित सारे भोजन तथा साज-सामान को स्वीकार किया। *श्रीमद्भागवत* (१०.२४.२६, ३१-३३) में कहा गया है :

पच्यन्तां विविधाः पाकाः सूपान्ताः पायसादयः ।
संयावापूपशष्कुल्यः सर्वदोहश्च गृह्यताम् ॥
कालात्मना भगवता शक्रदर्पं जिघांसता ।
प्रोक्तंनिशम्य नन्दाद्याः साध्वगृह्णन्त तद्वचः ॥

तथा च व्यदधुः सर्वं यथाह मधुसूदनः।
वाचयित्वा स्वस्त्ययनं तद्द्रव्येण गिरिद्विजान्॥
उपहृत्य बलीन् सर्वान् आदता यवसं गवाम्।
गोधनानि पुरस्कृत्य गिरिं चक्रुः प्रदक्षिणम्॥

"'यज्ञ के लिए एकत्र किये गये अन्न तथा घी से सभी तरह के उत्तम व्यंजन तैयार करो। चावल, दाल, हलवा, पकौड़ा, पूरी तथा दूध के सभी प्रकार के पकवान यथा खीर, रसगुल्ला, सन्देश तथा लड्डू बनाओ।'"

"इसलिए पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण ने इन्द्र को दण्ड देने के उद्देश्य से ग्वालों को परामर्श दिया कि वे इन्द्र-यज्ञ बन्द कर दें और गोवर्धन पूजा प्रारम्भ करें, क्योंकि इन्द्र स्वर्गलोक का सर्वोच्च नियन्ता होने के कारण अत्यधिक गर्वित हो उठा था। नन्द महाराज समेत सारे ईमानदार तथा सरल ग्वालों ने कृष्ण का प्रस्ताव मान लिया और भगवान् कृष्ण ने जो भी कहा उसे उन सबने विस्तारपूर्वक सम्पन्न किया। उन्होंने गोवर्धन की पूजा तथा प्रदक्षिणा की। कृष्ण के आदेशानुसार नन्द महाराज तथा ग्वालों ने विद्वान ब्राह्मणों को बुलाये और वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के साथ तथा प्रसाद अर्पित करके गोवर्धन पर्वत की पूजा प्रारम्भ की। वृन्दावन के निवासियों ने एकत्र होकर अपनी गौओं का शृंगार किया और उन्हें खाने के लिए घास दी। फिर गायों को आगे रखकर वे गोवर्धन पर्वत की प्रदक्षिणा करने लगे।"

सकल ब्राह्मणे पुरी वैष्णव करिल ।
सेइ सेइ सेवा-मध्ये सबा नियोजिल ॥ ८७॥

सकल ब्राह्मणे पुरी वैष्णव करिल ।
सेइ सेइ सेवा-मध्ये सबा नियोजिल ॥ ८७॥

सकल ब्राह्मणे—सारे उपस्थित ब्राह्मण; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी; **वैष्णव करिल**—वैष्णव के पद पर उन्नत किए गये; **सेइ सेइ**—विभिन्न श्रेणियों के अन्तर्गत; **सेवा-मध्ये**—सेवा करने में; **सबा**—सब; **नियोजिल**—लगा दिए गये।

अनुवाद

इस अवसर पर उपस्थित सारे ब्राह्मणों को श्रील माधवेन्द्र पुरी ने वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षा दी और उन्हें विभिन्न सेवा-कार्यों में लगा दिया।

तात्पर्य

शास्त्रों का कथन है—*षट्कर्मनिपुणो विप्रो मन्त्र-तन्त्र-विशारदः।* योग्य ब्राह्मण अपने कर्तव्य-कर्मों में पटु होना चाहिए। ब्राह्मण के निमित्त छह कार्य होते हैं। *पठन* अर्थात् ब्राह्मण को वैदिक शास्त्रों में पारंगत होना चाहिए। उसे अन्यों को वैदिक साहित्य पढ़ाने में भी समर्थ होना चाहिए। यह *पाठन* है। उसे विभिन्न विग्रहों की पूजा करने तथा वैदिक अनुष्ठान करने (*यजन*) में भी पटु होना चाहिए। इसी *यजन* के कारण, ब्राह्मण समाज का अग्रणी होने के कारण क्षत्रियों, वैश्यों तथा शूद्रों के लिए सभी वैदिक अनुष्ठान सम्पन्न करता है। औरों को उत्सव सम्पन्न कराने में सहायता करना *याजन* कहलाता है। *दान* तथा *प्रतिग्रह* अन्य दो कर्म हैं। ब्राह्मण अपने यजमानों से (क्षत्रियों, वैश्यों तथा शूद्रों से) सभी प्रकार का दान स्वीकार करता है (*प्रतिग्रह*)। किन्तु वह सारे धन को अपने पास नहीं रखता। वह आवश्यकता-भर के लिए रखकर शेष भाग दूसरों को दान में दे देता है (*दान*)।

ऐसे योग्य ब्राह्मण को अर्चाविग्रह की पूजा करने के लिए वैष्णव होना आवश्यक है। अतएव वैष्णव की स्थिति ब्राह्मण से श्रेष्ठ होती है। माधवेन्द्र पुरी द्वारा प्रस्तुत दृष्टान्त से इसकी पुष्टि होती है कि कोई ब्राह्मण कितना ही दक्ष क्यों न हो, जब तक वह वैष्णव मन्त्र में दीक्षित नहीं होता, तब तक वह पुजारी या विष्णु-विग्रह का सेवक नहीं बन सकता। गोपाल के विग्रह की स्थापना करने के बाद माधवेन्द्र पुरी ने सारे ब्राह्मणों को वैष्णव धर्म में दीक्षित कर दिया। इसके बाद उन्होंने ब्राह्मणों के लिए अर्चाविग्रह सम्बन्धी विविध सेवा-कार्य नियत कर दिये। किसी भी अर्चाविग्रह की सेवा के लिए सुबह चार बजे से लेकर रात्रि के दस बजे तक (मंगल आरती से शयन आरती तक) कम-से-कम पाँच-छह ब्राह्मण होने चाहिए। मन्दिर में छह बार आरती की जाती है और अर्चाविग्रह को कई बार भोग लगाया जाता है और प्रसाद बाँटा जाता है। पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा निर्धारित विधि-विधानों के अनुसार अर्चाविग्रह की पूजा-विधि यही है। हमारा सम्प्रदाय माधवेन्द्र पुरी की परम्परा में आता है, जिनका सम्बन्ध मध्व सम्प्रदाय से है। हम श्री चैतन्य महाप्रभु की परम्परा में हैं, जिन्हें श्री माधवेन्द्र पुरी के शिष्य श्री ईश्वर पुरी ने दीक्षा दी थी। इसलिए

हमारा सम्प्रदाय मध्व-गौड़ीय सम्प्रदाय कहलाता है। अतः हमें श्री माधवेन्द्र पुरी के चरणचिह्नों का अनुसरण बहुत सावधानी से करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि उन्होंने किस तरह गोवर्धन पर्वत की चोटी पर गोपाल-विग्रह स्थापित किया, किस तरह उन्होंने केवल एक ही दिन में अन्नकूट-उत्सव की तैयारी की और उसे सम्पन्न किया, इत्यादि। अमरीका तथा यूरोप के धनी देशों में हम अर्चाविग्रहों की जो स्थापना करें, उसे श्री माधवेन्द्र पुरी के उदाहरण के ही अनुसार करना चाहिए। विग्रह के सारे सेवकों को सर्वथा योग्य ब्राह्मण होना चाहिए और विशेषतया उन्हें यथासम्भव अधिक से अधिक मात्रा में प्रसाद चढ़ाने और उसे भगवान् का दर्शन करने आये भक्तों में बाँटने की वैष्णव-प्रथा का पालन करना चाहिए।

पुनः दिन-शेषे प्रभुर कराइल उत्थान ।
किछु भोग लागाइल कराइल जल-पान ॥ ८८॥

पुनः दिन-शेषे प्रभुर कराइल उत्थान ।
किछु भोग लागाइल कराइल जल-पान ॥ ८८॥

पुनः—पुनः; **दिन-शेषे**—दिन के अन्त में; **प्रभुर**—प्रभु का; **कराइल**—करवाया; **उत्थान**—जगाया; **किछु**—कुछ; **भोग**—भोग; **लागाइल**—लगाया; **कराइल**—करवाया; **जल**—जल; **पान**—पान।

अनुवाद

विश्राम के बाद विग्रह को संध्या-समय जगाना चाहिए और तुरन्त ही उन्हें कुछ भोजन तथा जल का भोग लगाना चाहिए।

तात्पर्य

इस भोग को वैकालि-भोग अर्थात् संध्याकाल में लगाये जाना वाला भोग कहते हैं।

गोपाल प्रकट हैल,—देशे शब्द हैल ।
आश-पाश ग्रामेर लोक देखिते आइल ॥ ८९॥

गोपाल प्रकट हैल,—देशे शब्द हैल ।
आश-पाश ग्रामेर लोक देखिते आइल ॥ ८९॥

गोपाल—भगवान् गोपाल; **प्रकट हैल**—प्रकट हुए हैं; **देशे**—सारे देश में; **शब्द हैल**—समाचार फैल गया; **आश-पाश**—आसपास; **ग्रामेर**—गाँवों के; **लोक**—लोग; **देखिते आइल**—देखने के लिए आये।

अनुवाद

जब देश-भर में यह प्रचार हो गया कि भगवान् गोपाल गोवर्धन पर्वत के ऊपर प्रकट हो चुके हैं, तो आसपास के सभी गाँव वाले विग्रह का दर्शन करने आये।

একেক দিন একেক গ্রামে লইল মাগিঞা ।
অন্ন-কূট করে সবে হরষিত হঞা ॥৯০॥

एकेक दिन एकेक ग्रामे लइल मागिञा ।
अन्न-कूट करे सबे हरषित हञा ॥ ९० ॥

एकेक दिन—प्रतिदिन; **एकेक ग्रामे**—एक एक गाँव ने; **लइल**—अनुमति ली; **मागिञा**—माँगकर; **अन्न-कूट करे**—अन्नकूट उत्सव करने की; **सबे**—सबने; **हरषित**—प्रसन्न; **हञा**—होकर।

अनुवाद

हर एक गाँव वालों ने एक-एक करके माधवेन्द्र पुरी से प्रार्थना की कि अन्नकूट उत्सव मनाने के लिए उन्हें एक दिन नियत कर दिया जाये। इस तरह कुछ समय तक दिन-प्रतिदिन अन्नकूट उत्सव मनाया जाता रहा।

রাত্রি-কালে ঠাকুরেরে করাইয়া শয়ন ।
পুরী-গোসাঞি কৈল কিছু গব্য ভোজন ॥৯১॥

रात्रि-काले ठाकुरेरे कराइया शयन ।
पुरी-गोसाञि कैल किछु गव्य भोजन ॥ ९१ ॥

रात्रि-काले—रात के समय; **ठाकुरेरे**—अर्चाविग्रह के; **कराइया**—करवाया; **शयन**—विश्राम के लिए; **पुरी-गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी ने; **कैल**—किया; **किछु**—कुछ; **गव्य**—दूध का पदार्थ; **भोजन**—भोजन के लिए।

अनुवाद

श्री माधवेन्द्र पुरी ने दिन-भर कुछ नहीं खाया, किन्तु रात में विग्रह को शयन कराने के बाद उन्होंने दूध से बना प्रसाद खाया।

प्रातः-काले पुनः तैछे करिल सेवन ।
अन्न लञा एक-ग्रामेर आइल लोक-गण ॥९२॥

प्रातः-काले पुनः तैछे करिल सेवन ।
अन्न लञा एक-ग्रामेर आइल लोक-गण ॥ ९२ ॥

प्रातः-काले—प्रातः काल; **पुनः**—पुनः; **तैछे**—पहले की तरह; **करिल**—की; **सेवन**—सेवा; **अन्न लञा**—अन्न लेकर; **एक-ग्रामेर**—एक गाँव के; **आइल**—आये; **लोक-गण**—लोग।

अनुवाद

पुनः अगली सुबह अर्चाविग्रह की सेवा प्रारम्भ हुई और एक गाँव के लोग विविध प्रकार के खाद्य-द्रव्य लेकर आ गये।

अन्न, घृत, दधि, दुग्ध,—ग्रामे यत छिल ।
गोपालेर आगे लोक आनिया धरिल ॥९३॥

अन्न, घृत, दधि, दुग्ध,—ग्रामे यत छिल ।
गोपालेर आगे लोक आनिया धरिल ॥ ९३ ॥

अन्न—अन्न; **घृत**—घी; **दधि**—दही; **दुग्ध**—दूध; **ग्रामे**—गाँव में; **यत**—जितना; **छिल**—वहाँ था; **गोपालेर आगे**—गोपाल अर्चाविग्रह के सामने; **लोक**—सभी लोगों ने; **आनिया**—लाकर; **धरिल**—रख दिया।

अनुवाद

गाँव के सारे निवासी गाँव-भर का सारा अन्न, घी, दही तथा दूध गोपाल-अर्चाविग्रह को भोग लगाने के लिए लाये।

तात्पर्य

वास्तव में अन्न, घृत, दधि तथा दुग्ध—ये ही सारे भोजन के आधार हैं। शाक तथा फल तो गौण हैं। अन्न, तरकारियों, घी, दुग्ध तथा दही से सैंकड़ो-

हजारों प्रकार के व्यंजन बनाये जा सकते हैं। अन्नकूट उत्सव में गोपाल को अर्पित किये गये भोजन में यही पाँचों सामग्रियाँ थीं। केवल आसुरिक प्रवृत्ति के लोग ही अन्य प्रकार के भोजन के प्रति आकृष्ट होते हैं, जिनका यहाँ हम उल्लेख भी नहीं करेंगे। हमें यह समझना होगा कि पौष्टिक भोजन प्रस्तुत करने के लिए हमें केवल अन्न, घी, दही और दूध की ही आवश्यकता होती है। अर्चाविग्रह को हम इनके अतिरिक्त और कुछ अर्पित नहीं कर सकते। वैष्णव आदर्श व्यक्ति होने के नाते अर्चाविग्रह को अर्पित भोजन के अतिरिक्त अन्य कुछ भी ग्रहण नहीं करता। लोग प्राय: राष्ट्रीय खाद्य-नीति से क्षुब्ध रहते हैं, किन्तु वैदिक शास्त्रों से हमें पता चलता है कि यदि पर्याप्त मात्रा में गायें तथा अन्न हों, तो सारी खाद्य-समस्या का समाधान हो सकता है। इसीलिए *भगवद्गीता* में संस्तुति की गई है कि वैश्य लोग अन्न उत्पन्न करें और गौवों को सुरक्षा प्रदान करें। गौवें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पशू हैं, क्योंकि वे दूध जैसा चमत्कारी भोजन प्रदान करती हैं, जिससे घी तथा दही बनाया जा सकता है।

मानव सभ्यता की पूर्णता कृष्णभावनामृत पर आश्रित है, जिसमें अर्चाविग्रह की पूजा की संस्तुति की जाती है। शाक, अन्न, दूध, घी तथा दही से बने व्यंजन अर्चाविग्रह को अर्पित किये जाते हैं और बाद में वितरित किये जाते हैं। हम यहाँ पूर्व तथा पश्चिम का अन्तर देख सकते हैं। जो लोग गोपाल-विग्रह का दर्शन करने आये थे, वे सभी अपने साथ विग्रह को अर्पित करने हेतु तरह-तरह के खाद्य पदार्थ लाये थे। जितना भी अन्न उपलब्ध था, वे अपने साथ लेते आये थे और वे अर्चाविग्रह के समक्ष न केवल स्वयं प्रसाद ग्रहण करने के लिए खड़े थे, अपितु उसे अन्यों में वितरित भी करना चाहते थे। कृष्णभावनामृत आन्दोलन भोजन बनाने, फिर उसे अर्चाविग्रह को अर्पित करने और फिर सामान्य लोगों में वितरित करने की प्रथा का जोरदार अनुमोदन करता है। इस कार्य को सारे विश्व में आरम्भ करना चाहिए, क्योंकि इससे लोगों के पापमय भोजन खाने का अभ्यास बदलेगा और उनके आसुरी आचरण में सुधार होगा। आसुरी सभ्यता से विश्व में कभी भी शान्ति नहीं आ सकती। चूँकि भोजन करना मानव-समाज की सर्वप्रथम आवश्यकता है, अतएव जो लोग भोजन बनाने और उसे वितरित करने के कार्य में लगे हैं, उन्हें माधवेन्द्र पुरी से शिक्षा

ग्रहण करनी चाहिए और अन्नकूट उत्सव मनाना चाहिए। जब लोग केवल अर्चाविग्रह को अर्पित किया प्रसाद ग्रहण करने लगेंगे, तो सारे असुर वैष्णव बन जायेंगे। जब लोग कृष्णभावनाभावित होंगे, तो स्वाभाविक है कि सरकार भी वैसी ही बनेगी। कृष्णभावनाभावित व्यक्ति सदैव अत्यन्त उदार एवं हर एक का शुभचिन्तक होता है। जब ऐसे लोग सरकार सँभालेंगे, तो लोग निश्चित रूप से निष्पाप होंगे। तब उत्पात मचाने वाले असुर नहीं रहेंगे। केवल तभी समाज में शान्तिमय वातावरण बना रह सकता है।

पूर्व-दिन-प्राय विप्र करिल रन्धन ।
तैछे अन्न-कूट गोपाल करिल भोजन ॥९४॥

पूर्व-दिन-प्राय विप्र करिल रन्धन ।
तैछे अन्न-कूट गोपाल करिल भोजन ॥ ९४॥

पूर्व-दिन-प्राय—पिछले दिन की तरह; **विप्र**—सभी ब्राह्मणों ने; **करिल**—किया; **रन्धन**—पकाना; **तैछे**—उसी तरह; **अन्न-कूट**—अन्न के ढेर; **गोपाल**—गोपाल अर्चाविग्रह; **करिल**—किया; **भोजन**—भोजन।

अनुवाद

दूसरे दिन पहले की तरह अन्नकूट उत्सव मनाया गया। सारे ब्राह्मणों ने भोजन पकाया और गोपाल ने उसे ग्रहण किया।

व्रज-वासी लोकेर कृष्णे सहज पिरीति ।
गोपालेर सहज-प्रीति व्रज-वासि-प्रति ॥९५॥

व्रज-वासी लोकेर कृष्णे सहज पिरीति ।
गोपालेर सहज-प्रीति व्रज-वासि-प्रति ॥ ९५॥

व्रज-वासी—वृन्दावन (व्रजभूमि) के निवासी; **लोकेर**—लोगों का; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण के प्रति; **सहज**—स्वाभाविक; **पिरीति**—प्रेम; **गोपालेर**—भगवान् गोपाल का; **सहज**—सहज; **प्रीति**—प्रेम; **व्रज-वासि-प्रति**—व्रजभूमि के निवासियों की ओर।

अनुवाद

कृष्णभावनामृत सम्पन्न करने के लिए आदर्श स्थान व्रजभूमि या

वृन्दावन है, जहाँ लोग स्वभावतः कृष्ण से प्रेम करते हैं और कृष्ण भी उनसे प्रेम करते हैं।

तात्पर्य

भगवद्गीता (४.११) में कहा गया है—*ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।* भगवान् कृष्ण तथा उनके भक्तों के बीच आदान-प्रदान होता है। भक्त जितनी निष्ठा से कृष्ण से प्रेम करते हैं, कृष्ण भी उसी अनुपात से प्रतिदान करते हैं—यहाँ तक कि उच्च कोटि का भक्त कृष्ण से आमने-सामने बातें कर सकता है। इसकी पुष्टि *भगवद्गीता* (१०.१०) में कृष्ण द्वारा हुई है :

तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

"जो लोग निरन्तर मेरी भक्ति करते हैं और प्रेमपूर्वक मेरी सेवा करते हैं, उन्हें मैं बुद्धि प्रदान करता हूँ जिससे वे मेरे पास आ सकते हैं।" मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य कृष्ण को समझना और भगवद्धाम लौट जाना है। अतएव जो व्यक्ति प्रेम तथा भक्ति के साथ कृष्ण की सेवा में निष्ठापूर्वक लगा रहता है, वह कृष्ण से बातें कर सकता है और आदेश प्राप्त कर सकता है, जिससे वह शीघ्रता से भगवद्धाम लौट सके। आज अनेक विद्वान धर्म-विज्ञान का अनुमोदन करते हैं और भगवान् के विषय में उन्हें कुछ अनुमान भी है, किन्तु भगवान् के व्यवहारिक अनुभव के बिना का धर्म धर्म नहीं रहता। *श्रीमद्भागवत* में इसे एक प्रकार की ठगी कहा गया है। धर्म का अर्थ है पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण के आदेशों का पालन करना। यदि कोई भगवान् से बातें करने और उनसे शिक्षा ग्रहण करने के योग्य नहीं है, तो भला वह धर्म के सिद्धान्तों को कैसे समझ सकता है ? इस तरह कृष्णभावनामृत के बिना धर्म या धार्मिक अनुभव की बातें करना समय का अपव्यय मात्र है।

মহা-প্রসাদ খাইল আসিয়া সব লোক ।
গোপাল দেখিয়া সবার খণ্ডে দুঃখ-শোক ॥ ৯৬॥

মহা-প্রসাদ খাইল আসিয়া সব লোক ।
গোপাল দেখিয়া সবার খণ্ডে দুঃখ-শোক ॥ ৯৬॥

महा-प्रसाद—महाप्रसाद, कृष्ण को समर्पित आध्यात्मिक भोजन; **खाइल**—खाया; **आसिया**—आकर; **सब**—सब; **लोक**—लोगों ने; **गोपाल**—श्री गोपाल का अर्चाविग्रह; **देखिया**—देखकर; **सबार**—उन सबका; **खण्डे**—नष्ट हो गया; **दुःख-शोक**—सारा दुःख और शोक।

अनुवाद

विभिन्न गाँवों से अनेक लोग गोपाल-विग्रह का दर्शन करने आये और उन सबने पेट भरकर महाप्रसाद ग्रहण किया। जब उन लोगों ने गोपाल के सर्वोत्कृष्ट रूप को देखा, तो उनका सारा शोक तथा दुःख नष्ट हो गया।

आश-पाश ब्रज-भूमेर यत ग्राम सब ।
एक एक दिन सबे करे महोत्सव ॥ ९७॥

आश-पाश व्रज-भूमेर यत ग्राम सब ।
एक एक दिन सबे करे महोत्सव ॥ ९७॥

आश-पाश—आसपास; **व्रज-भूमेर**—व्रजभूमि के; **यत**—सभी; **ग्राम**—गाँव; **सब**—सब; **एक एक**—एक एक; **दिन**—दिन; **सबे**—सब; **करे**—करते; **महा-उत्सव**—महोत्सव।

अनुवाद

व्रजभूमि (वृन्दावन) के आसपास के सारे गाँव के लोग गोपाल के प्राकट्य की जानकारी मिलने पर इनका दर्शन करने आये। उन सबने दिन प्रतिदिन अन्नकूट उत्सव मनाया।

गोपाल-प्रकट शुनि' नाना देश हैते ।
नाना द्रव्य लञा लोक लागिल आसिते ॥ ९८॥

गोपाल-प्रकट शुनि' नाना देश हैते ।
नाना द्रव्य लञा लोक लागिल आसिते ॥ ९८॥

गोपाल—गोपाल के अर्चाविग्रह का; **प्रकट**—प्राकट्य; **शुनि'**—सुनकर; **नाना**—नाना; **देश**—देश; **हैते**—से; **नाना**—नाना; **द्रव्य**—पदार्थ; **लञा**—लाकर; **लोक**—लोग; **लागिल**—लगे; **आसिते**—आने।

अनुवाद

इस तरह न केवल पड़ोसी गाँव अपितु अन्य प्रान्त भी गोपाल के प्रादुर्भाव के विषय में जान गये। फलतः सभी जगहों से लोग नाना प्रकार के उपहार लेकर आये।

मथुरार लोक सब बड़ बड़ धनी ।
भक्ति करि' नाना द्रव्य भेट देय आनि' ॥९९॥

मथुरार लोक सब बड़ बड़ धनी ।
भक्ति करि' नाना द्रव्य भेट देय आनि' ॥ ९९ ॥

मथुरार—मथुरा नगर के; **लोक**—लोग; **सब**—सब; **बड़ बड़**—बड़े बड़े; **धनी**—धनी; **भक्ति करि'**—भक्ति से; **नाना द्रव्य**—नाना प्रकार के पदार्थ; **भेट**—उपहार; **देय**—दिये; **आनि'**—लाकर।

अनुवाद

मथुरा के बड़े-बड़े धनी लोग भी नाना प्रकार के उपहार लेकर आये और उन्होंने भक्तिपूर्वक उन्हें अर्चाविग्रह को अर्पित किया।

स्वर्ण, रौप्य, वस्त्र, गन्ध, भक्ष्य-उपहार ।
असङ्ख्य आइसे, नित्य बाड़िल भाण्डार ॥१००॥

स्वर्ण, रौप्य, वस्त्र, गन्ध, भक्ष्य-उपहार ।
असङ्ख्य आइसे, नित्य बाड़िल भाण्डार ॥ १०० ॥

स्वर्ण—स्वर्ण; **रौप्य**—चांदी; **वस्त्र**—वस्त्र; **गन्ध**—सुगन्धियाँ; **भक्ष्य-उपहार**—खाद्य उपहार; **असङ्ख्य**—असंख्य; **आइसे**—आये; **नित्य**—प्रतिदिन; **बाड़िल**—बढ़ गये; **भाण्डार**—भण्डार, गोदाम।

अनुवाद

इस तरह सोना, चाँदी, वस्त्र, सुगन्धित द्रव्य तथा खाद्य पदार्थों के असंख्य उपहार आये और गोपाल का भण्डार प्रतिदिन बढ़ता गया।

एक महा-धनी क्षत्रिय कराइल मन्दिर ।
केह पाक-भाण्डार कैल, केह त' प्राचीर ॥१०१॥

एक महा-धनी क्षत्रिय कराइल मन्दिर ।
केह पाक-भाण्डार कैल, केह त' प्राचीर ॥ १०१ ॥

एक—एक; **महा-धनी**—अत्यन्त धनी पुरुष; **क्षत्रिय**—क्षत्रिय; **कराइल**—बनाया; **मन्दिर**—मन्दिर; **केह**—कोई; **पाक-भाण्डार**—खाना पकाने हेतु मिट्टी के पात्र; **कैल**—बनाये; **केह**—किसी ने; **त'**—निश्चित रूप से; **प्राचीर**—दीवारें।

अनुवाद

धनी क्षत्रिय राज पुरुष ने मन्दिर बनवा दिया, किसी ने भोजन पकाने के बर्तन दे दिये और किसी ने चार दीवारियाँ बनवा दीं।

এক এক ব্রজ-বাসী এক এক গাভী দিল ।
সহস্র সহস্র গাভী গোপালের হৈল ॥ ১০২ ॥

एक एक व्रज-वासी एक एक गाभी दिल ।
सहस्र सहस्र गाभी गोपालेर हैल ॥ १०२ ॥

एक एक—प्रत्येक; **व्रज-वासी**—वृन्दावन के निवासी; **एक एक**—एक; **गाभी**—गाय; **दिल**—दी; **सहस्र सहस्र**—हजारों; **गाभी**—गौएँ; **गोपालेर**—गोपाल की; **हैल**—हो गईं।

अनुवाद

व्रजभूमि में रहने वाले हर परिवार ने एक एक गाय दी। इस तरह हजारों गाएँ गोपाल की सम्पत्ति बन गईं।

तात्पर्य

अर्चाविग्रह की प्रतिष्ठा करने, मन्दिर बनवाने तथा मन्दिर की सम्पत्ति बढ़ाने का यही उपाय है। हर व्यक्ति को चाहिए कि मन्दिर के निर्माण-कार्य के लिए उत्साहपूर्वक धन दे और प्रसाद वितरण के लिए अन्न भी दे। भक्तों को चाहिए कि वे भक्ति के सन्देश का प्रचार करें और इस तरह लोगों को अर्चाविग्रह की व्यवहारिक सेवा में लगायें। धनी व्यक्ति भी इस कार्य में भाग लेने के लिए आकृष्ट हो सकते हैं। इस तरह सारे लोग आध्यात्मिक रूप से प्रवृत्त होंगे और सारा समाज कृष्णभावनामृत को ग्रहण कर सकेगा। भौतिक इन्द्रियों को तुष्ट करने की इच्छा स्वयमेव घटेगी और इन्द्रियाँ इतनी शुद्ध हो जायेंगी कि वे भक्ति की ओर उन्मुख होंगी। *हृषीकेण हृषीकेश सेवनम्*

भक्तिरुच्यते। भगवान् हृषीकेश की सेवा करने से इन्द्रियाँ धीरे-धीरे शुद्ध हो जाती हैं। शुद्ध इन्द्रियों को भगवान् हृषीकेश की सेवा में लगाना ही भक्ति है। जब भक्ति के प्रति सुप्त भावना जाग्रत होती है, तब मनुष्य पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् को यथारूप में समझ सकता है। *भक्त्या मामभिजानाति यावान् यश्चास्मि तत्त्वतः।* (*भगवद्गीता* १८.५५) कृष्णभावनामृत जाग्रत करने के लिए मनुष्यों को अवसर देने की यही विधि है। इस तरह से लोग सभी तरह से अपने जीवन को पूर्ण बना सकते हैं।

गौड़ हइते आइला दुई वैरागी ब्राह्मण ।
पुरी-गोसाञि राखिल तारे करिया यतन ॥ १०३ ॥

गौड़ हइते आइला दुइ वैरागी ब्राह्मण ।
पुरी-गोसाञि राखिल तारे करिया यतन ॥ १०३ ॥

गौड़ हइते—बंगाल से; **आइला**—आये; **दुइ**—दो; **वैरागी**—संन्यासी; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण; **पुरी-गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी; **राखिल**—रखे; **तारे**—उनको; **करिया**—करके; **यतन**—पूरा प्रयास।

अनुवाद

अन्त में बंगाल से दो संन्यासी ब्राह्मण वहाँ आये। माधवेन्द्र पुरी को वे बहुत अच्छे लगे और उन्हें वृन्दावन में रखकर सभी सुविधाएँ प्रदान कीं।

सेइ दुई शिष्य करि' सेवा समर्पिल ।
राज-सेवा हय,—पुरीर आनन्द बाड़िल ॥ १०४ ॥

सेइ दुइ शिष्य करि' सेवा समर्पिल ।
राज-सेवा हय,—पुरीर आनन्द बाड़िल ॥ १०४ ॥

सेइ दुइ—उन दोनों व्यक्तियों; **शिष्य करि'**—शिष्य बनाकर; **सेवा**—सेवा; **समर्पिल**—समर्पित की; **राज-सेवा**—सुन्दर ढंग से सेवा; **हय**—है; **पुरीर**—माधवेन्द्र पुरी की; **आनन्द**—आनन्द; **बाड़िल**—बढ़ाई।

अनुवाद

तब माधवेन्द्र पुरी ने उन दोनों को दीक्षा दी और भगवान् की दैनिक सेवा का कार्यभार सौंप दिया। यह सेवा लगातार होती रही और

अर्चाविग्रह की पूजा अत्यन्त सुन्दर ढंग से होने लगी थी। इससे माधवेन्द्र पुरी अति आनन्दित हुए।

तात्पर्य

छः गोस्वामियों तथा उनके अनुयायियों ने कई मन्दिरों की स्थापना की—यथा गोविन्द-मन्दिर, गोपीनाथ, मदनमोहन, राधादामोदर, श्यामसुन्दर, राधारमण तथा गोकुलानन्द। इन गोस्वामियों के शिष्यों को इन मन्दिरों की *सेवापूजा* (अर्चाविग्रह-पूजा) का भार सौंपा गया। ऐसा नहीं था कि ये शिष्य मूल गोस्वामियों के पारिवारिक सदस्य थे। सभी गोस्वामी संन्यासी थे और विशेषकर, जीव गोस्वामी तो आजीवन ब्रह्मचारी थे। आजकल अर्चाविग्रह की सेवा में लगे होने के कारण सेवक-जन गोस्वामी की पदवी ग्रहण करते हैं। इन सेवकों में से जिन्होंने अपने पद को उत्तराधिकार के रूप में पाया था, वे मन्दिरों के मालिक बन गये हैं और उनमें से कुछ अर्चाविग्रहों की सम्पत्ति को इस तरह बेच रहे हैं, मानो वह उनकी निजी सम्पत्ति हो। किन्तु ये मन्दिर मूलतः इन सेवकों के नहीं थे।

এই-মত বৎসর দুই করিল সেবন ।
এক-দিন পুরী-গোসাঞি দেখিল স্বপন ॥ ১০৫ ॥

एइ-मत वत्सर दुइ करिल सेवन ।
एक-दिन पुरी-गोसाञि देखिल स्वपन ॥ १०५ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **वत्सर**—वर्ष; **दुइ**—दो; **करिल**—सम्पन्न की गई; **सेवन**—पूजा; **एक-दिन**—एक दिन; **पुरी-गोसाञि**—श्री माधवेन्द्र पुरी ने; **देखिल**—देखा; **स्वपन**—एक स्वप्न।

अनुवाद

इस प्रकार दो वर्षों तक मन्दिर में अर्चाविग्रह की पूजा अत्यन्त ऐश्वर्य के साथ चलती रही। तब एक दिन माधवेन्द्र पुरी ने एक सपना देखा।

গোপাল কহে, পুরী আমার তাপ নাহি যায় ।
মলয়জ-চন্দন লেপ', তবে সে জুড়ায় ॥ ১০৬ ॥

गोपाल कहे, पुरी आमार ताप नाहि ग्राय ।
मलयज-चन्दन लेप', तबे से जुड़ाय ॥ १०६ ॥

गोपाल—गोपाल अर्चाविग्रह; **कहे**—ने कहा; **पुरी**—मेरे प्रिय माधवेन्द्र पुरी; **आमार**—मेरा; **ताप**—शरीर का तापमान; **नाहि**—नहीं; **ग्राय**—जाता; **मलयज-चन्दन**—मलय पर्वत पर उत्पन्न चन्दन की लकड़ी का; **लेप'**—शरीर पर लेप करो; **तबे**—तब; **से**—वह; **जुड़ाय**—ठण्डा होगा।

अनुवाद

सपने में माधवेन्द्र पुरी ने देखा कि गोपाल कह रहे हैं, "मेरे शरीर का ताप अभी भी कम नहीं हुआ है। तुम मलय-प्रदेश से चन्दन लाओ और मुझे शीतल बनाने के लिए मेरे शरीर पर इसका लेप करो।

तात्पर्य

गोपाल-विग्रह अनेक वर्षों तक जंगल में दबे पड़े रहे और अब यद्यपि उन्हें प्रतिष्ठित करके उनका हजारों घड़े पानी से अभिषेक किया गया था, फिर भी उन्हें गर्मी लग रही थी। इसीलिए उन्होंने माधवेन्द्र पुरी से मलय प्रान्त से चन्दन लाने के लिए कहा। मलय में उत्पन्न चन्दन अत्यन्त विख्यात है। यह प्रान्त पश्चिमी घाट में है और नीलगिरि पहाड़ियाँ कभी-कभी मलय पर्वत कहलाती हैं। *मलय-ज* शब्द मलय प्रान्त में उत्पन्न चन्दन का सूचक है। कभी-कभी वर्तमान मलेशिया देश को भी मलय कहते हैं। पहले इस देश में भी चन्दन उत्पन्न होता था। किन्तु अब उनको रबड़ के वृक्ष उगाना अधिक लाभप्रद लगता है। यद्यपि किसी समय मलेशिया में वैदिक संस्कृति प्रचलित थी, किन्तु अब वहाँ के सारे निवासी मुसलमान हैं। अब मलेशिया, जावा तथा इण्डोनेशिया में वैदिक संस्कृति लुप्त हो चुकी है।

মলয়জ আন, যাঞা নীলাচল হৈতে ।
অন্যে হৈতে নহে, তুমি চলহ ত্বরিতে ॥ ১০৭॥

मलयज आन, ग्राञा नीलाचल हैते ।
अन्ये हैते नहे, तुमि चलह त्वरिते ॥ १०७॥

मलय-ज—चन्दन की लकड़ी; **आन**—लाओ; **ग्राञा**—आकर; **नीलाचल हैते**—

जगन्नाथ पुरी से; **अन्ये**—अन्य; **हैते**—से; **नहे**—नहीं; **तुमि**—तुम; **चलह**—जाओ; **त्वरिते**—शीघ्र।

अनुवाद

"तुम जगन्नाथ पुरी से चन्दन लाओ। कृपया तुरन्त जाओ। चूँकि यह काम कोई और नहीं कर सकता, इसलिए तुम ही करो।"

स्वप्न देखि' पुरी-गोसाञिर हैल प्रेमावेश ।
प्रभु-आज्ञा पालिवारे गेला पूर्व-देश ॥ १०८॥

स्वप्न देखि' पुरी-गोसाञि हैल प्रेमावेश ।
प्रभु-आज्ञा पालिबारे गेला पूर्व-देश ॥ १०८॥

स्वप्न देखि'—स्वप्न देखने के बाद; **पुरी-गोसाञि**—श्री माधवेन्द्र पुरी का; **हैल**—था; **प्रेम-आवेश**—भगवत् प्रेम के कारण भावावेश; **प्रभु-आज्ञा**—प्रभु की आज्ञा; **पालिबारे**—पालन करने हेतु; **गेला**—प्रस्थान किया; **पूर्व-देश**—पूर्वी देश को (बंगाल)।

अनुवाद

इस स्वप्न को देखकर माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी भगवत्प्रेम के भाव के कारण अत्यन्त प्रसन्न हुए और भगवान् के आदेश का पालन करने के उद्देश्य से वे बंगाल जाने के लिए पूर्व की ओर चल पड़े।

सेवार निर्बन्ध—लोक करिल स्थापन ।
आज्ञा मागि' गौड़-देशे करिल गमन ॥ १०९॥

सेवार निर्बन्ध—लोक करिल स्थापन ।
आज्ञा मागि' गौड़-देशे करिल गमन ॥ १०९॥

सेवार निर्बन्ध—प्रभु की नित्य सेवा की व्यवस्था; **लोक**—लोग; **करिल**—की; **स्थापन**—स्थापना; **आज्ञा मागि'**—आज्ञा माँगकर; **गौड़-देशे**—बंगाल की ओर; **करिल**—किया; **गमन**—प्रस्थान।

अनुवाद

चलने के पूर्व माधवेन्द्र पुरी ने नियमित सेवा-पूजा के लिए सारी व्यवस्था कर दी और उन्होंने विभिन्न लोगों को विविध कार्यों में लगा दिया। फिर गोपाल की आज्ञा लेकर करके वे बंगाल के लिए चल पड़े।

শান্তিপুর আইলা অদ্বৈতাচার্যের ঘরে ।
পুরীর প্রেম দেখি' আচার্য আনন্দ অন্তরে ॥১১০॥

शान्तिपुर आइला अद्वैताचार्य्येर घरे ।
पुरीर प्रेम देखि' आचार्य्य आनन्द अन्तरे ॥ ११० ॥

शान्तिपुर—शान्तिपुर में; **आइला**—आये; **अद्वैत-आचार्य्येर**—श्री अद्वैत आचार्य के; **घरे**—घर पर; **पुरीर प्रेम**—माधवेन्द्र पुरी का प्रेम; **देखि'**—देखकर; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **आनन्द**—आनन्द; **अन्तरे**—अपने भीतर।

अनुवाद

जब माधवेन्द्र पुरी शान्तिपुर में अद्वैत आचार्य के घर पहुँचे, तो माधवेन्द्र पुरी में ऊर्मिपूर्ण भगवत्प्रेम को देखकर आचार्य अत्यन्त हर्षित हुए।

তাঁর ঠাঞি মন্ত্র লৈল যতন করিঞা ।
চলিলা দক্ষিণে পুরী তাঁরে দীক্ষা দিঞা ॥১১১॥

ताँर ठाञि मन्त्र लैल य़तन करिञा ।
चलिला दक्षिणे पुरी ताँरे दीक्षा दिञा ॥ १११ ॥

ताँर ठाञि—उनसे; **मन्त्र**—मन्त्र, दीक्षा; **लैल**—स्वीकार की; **य़तन**—प्रयत्न; **करिञा**—करके; **चलिला**—चल पड़े; **दक्षिणे**—दक्षिण की ओर; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **ताँरे**—उनको (अद्वैत आचार्य को); **दीक्षा**—दीक्षा; **दिञा**—देकर।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य ने माधवेन्द्र पुरी से दीक्षा देने की प्रार्थना की। उन्हें दीक्षा देने के बाद माधवेन्द्र पुरी दक्षिण भारत के लिए चल पड़े।

तात्पर्य

इस सम्बन्ध में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि अद्वैत आचार्य ने मध्व-सम्प्रदाय की परम्परा के संन्यासी माधवेन्द्र पुरी से दीक्षा ली। श्री चैतन्य महाप्रभु के अनुसार :

किबा विप्र किबा न्यासी शूद्र केने नय।
येइ कृष्ण-तत्त्व-वेत्ता सेइ 'गुरु' हय॥

"कोई चाहे ब्राह्मण हो, संन्यासी हो, शूद्र हो या अन्य कुछ, किन्तु यदि वह कृष्ण-तत्त्व में दक्ष है, तो वह गुरु बन सकता है।" (*चैतन्य-चरितामृत, मध्य* ८.१२८) इस कथन की पुष्टि माधवेन्द्र पुरी द्वारा की गई है। *पञ्चरात्र* के अनुसार केवल गृहस्थ ब्राह्मण दीक्षा दे सकता है, अन्य कोई नहीं। जब कोई व्यक्ति दीक्षित हो जाता है, तो यह माना जाता है कि वह ब्राह्मण बन गया। उपयुक्त ब्राह्मण द्वारा दीक्षा प्राप्त किये बिना अन्य किसी को ब्राह्मण नहीं बनाया जा सकता। दूसरे शब्दों में, जब तक कोई स्वयं ब्राह्मण नहीं होता, तब तक वह किसी दूसरे को ब्राह्मण नहीं बना सकता। वर्णाश्रम धर्म का पालन करने वाला गृहस्थ ब्राह्मण अपने सच्चे श्रम से भगवान् विष्णु की पूजा की विविध सामग्री प्राप्त कर सकता है। वस्तुतः लोग इन गृहस्थ ब्राह्मणों से दीक्षित होने की याचना करते हैं, जिससे वे वर्णाश्रम धर्म में सफल हो सकें या भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो सकें। अतएव गृहस्थ-आश्रम में रहने वाले गुरु को शुद्ध वैष्णव होना चाहिए। संन्यास आश्रम के गुरु को *अर्चना* करने के लिए बहुत कम अवसर मिल पाता है, किन्तु यदि कोई दिव्य संन्यासी को गुरु स्वीकार करता है, तो अर्चना की उपेक्षा नहीं की जाती। इस सिद्धान्त की स्थापना के लिए ही श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपना मत *किबा विप्र किबा न्यासी* श्लोक में दिया है। इससे सूचित होता है कि महाप्रभु को समाज की कमजोरी पता थी कि वे ऐसा मानते हैं कि केवल गृहस्थ ब्राह्मण ही गुरु हो सकता है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने इंगित किया कि गुरु गृहस्थ, संन्यासी या शूद्र हो सकता है। गुरु को शास्त्रों के सार में पारंगत होना चाहिए, उसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का ज्ञान होना चाहिए। केवल तभी कोई गुरु बन सकता है। *दीक्षा* का वास्तविक अर्थ है शिष्य को दिव्य ज्ञान प्रदान करना, जिससे वह सारे भौतिक कल्मष से मुक्त हो सके।

रेमुणाते कैल गोपीनाथ दरशन ।
ताँर रूप देखिञा हैल विह्वल-मन ॥ ११२॥

रेमुणाते कैल गोपीनाथ दरशन ।
ताँर रूप देखिञा हैल विह्वल-मन ॥ ११२॥

रेमुणाते—रेमुणा गाँव में; **कैल**—किया; **गोपीनाथ**—गोपीनाथ का अर्चाविग्रह;

दरशन—दर्शन; **ताँर**—उनका; **रूप**—रूप; **देखिञा**—देखकर; **हैल**—हो गया; **विह्वल**—व्याकुल; **मन**—मन।

अनुवाद

दक्षिण भारत जाते समय माधवेन्द्र पुरी रेमुणा गये, जहाँ गोपीनाथ स्थित हैं। विग्रह की सुन्दरता देखकर माधवेन्द्र पुरी भावविभोर हो गये।

नृत्य-गीत करि' जग-मोहने वसिला ।
'क्या क्या भोग लागे?' ब्राह्मणे पूछिला ॥ ११३॥

नृत्य-गीत करि' जग-मोहने वसिला ।
'क्या क्या भोग लागे?' ब्राह्मणे पुछिला ॥ ११३॥

नृत्य-गीत करि'—नृत्य तथा गान करने के बाद; **जग-मोहने**—मन्दिर के बरामदे में; **वसिला**—वे बैठ गये; **क्या क्या**—क्या क्या; **भोग**—भोग; **लागे**—वे भेंट करते हैं; **ब्राह्मणे**—ब्राह्मण पुजारी से; **पुछिला**—पूछा।

अनुवाद

मन्दिर के बरामदे में, जहाँ से लोग सामान्यतया अर्चाविग्रह का दर्शन करते थे, माधवेन्द्र पुरी ने कीर्तन और नृत्य किया। फिर वे वहाँ बैठ गये और उन्होंने एक ब्राह्मण से पूछा कि अर्चाविग्रह को किस किस वस्तु का भोग लगाया जाता है?

सेवार सौष्ठव देखि' आनन्दित मने ।
उत्तम भोग लागे——एथा बुझि अनुमाने ॥ ११४॥

सेवार सौष्ठव देखि' आनन्दित मने ।
उत्तम भोग लागे——एथा बुझि अनुमाने ॥ ११४॥

सेवार—पूजा का; **सौष्ठव**—सौन्दर्य; **देखि'**—देखकर; **आनन्दित**—आनन्दित; **मने**—मन में; **उत्तम भोग**—उत्तम भोग; **लागे**—वे अर्पित करते हैं; **एथा**—इस प्रकार; **बुझि**—मैं समझता हूँ; **अनुमाने**—अनुमान से।

अनुवाद

प्रबन्ध की उत्कृष्टता से माधवेन्द्र पुरी ने अनुमान लगाया कि वहाँ अवश्य उत्तम भोजन ही अर्पित किया जाता होगा।

যৈছে ইহা ভোগ লাগে, সকল-ই পুছিব ।
তৈছে ভিয়ানে ভোগ গোপালে লাগাইব ॥ ১১৫ ॥

য়ৈছে ইহা ভোগ লাগে, সকল-ই পুছিব ।
তৈছে ভিয়ানে ভোগ গোপালে লাগাইব ॥ ১১৫ ॥

য়ৈছে—जैसे; **इहा**—यहाँ; **भोग**—भोग; **लागे**—वे लगाते हैं; **सकल-इ**—सब; **पुछिब**—मैं पूछूँगा; **तैछे**—उसी तरह; **भियाने**—रसोई घर में; **भोग**—भोग की; **गोपाले**—श्री गोपाल को; **लागाइब**—मैं व्यवस्था करूँगा।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी ने सोचा, "मैं पुजारी से पूछूँगा कि गोपीनाथ को किस प्रकार का भोजन अर्पित किया जाता है, जिससे हम भी अपने रसोई-घर में उनकी व्यवस्था करके वैसा ही भोजन श्री गोपाल को अर्पित कर सकें।"

এই লাগি' পুছিলেন ব্রাহ্মণের স্থানে ।
ব্রাহ্মণ কহিল সব ভোগ-বিবরণে ॥ ১১৬ ॥

এই লাগি' পুছিলেন ব্রাহ্মণের স্থানে ।
ব্রাহ্মণ কহিল সব ভোগ-বিবরণে ॥ ১১৬ ॥

एइ लागि'—इसलिए; **पुछिलेन**—उन्होंने पूछा; **ब्राह्मणेर स्थाने**—ब्राह्मण से; **ब्राह्मण**—पुजारी ने; **कहिल**—सूचित किया; **सब**—सब; **भोग**—भोग का; **विवरणे**—विवरण।

अनुवाद

जब ब्राह्मण पुजारी से इस विषय में पूछा गया, तब उसने विस्तारपूर्वक बतलाया कि गोपीनाथ के अर्चाविग्रह को कौन-कौन से भोग अर्पित किये जाते हैं।

সন্ধ্যায় ভোগ লাগে ক্ষীর—'অমৃত-কেলি'-নাম ।
দ্বাদশ মৃৎপাত্রে ভরি' অমৃত-সমান ॥ ১১৭ ॥

सन्ध्याय भोग लागे क्षीर—'अमृत-केलि'-नाम ।
द्वादश मृत्पात्रे भरि' अमृत-समान ॥ ११७ ॥

सन्ध्याय—सांयकाल; **भोग**—भोग; **लागे**—वे अर्पित करते हैं; **क्षीर**—खीर; **अमृत-केलि-नाम**—अमृत केलि नामक; **द्वादश**—बारह; **मृत्-पात्रे**—मिट्टी के बर्तन; **भरि'**—भरकर; **अमृत-समान**—अमृत समान।

अनुवाद

ब्राह्मण पुजारी ने कहा, "संध्या-समय अर्चाविग्रह को मिट्टी के बारह पात्रों में खीर का भोग लगाया जाता है। चूँकि इसका स्वाद अमृत जैसा होता है, अतएव यह अमृत-केलि कहलाता है।

'गोपीनाथेर क्षीर' बलि' प्रसिद्ध नाम यार ।
पृथिवीते ऐछे भोग काहाँ नाहि आर ॥११८॥

'गोपीनाथेर क्षीर' बलि' प्रसिद्ध नाम यार ।
पृथिवीते ऐछे भोग काहाँ नाहि आर ॥११८॥

गोपीनाथेर क्षीर—गोपीनाथ को समर्पित खीर; **बलि'**—की तरह; **प्रसिद्ध**—प्रसिद्ध; **नाम**—नाम; **यार**—जिसका; **पृथिवीते**—सारे संसार में; **ऐछे**—ऐसा; **भोग**—भोग; **काहाँ**—कहीं भी; **नाहि**—नहीं; **आर**—और कहीं।

अनुवाद

"यह खीर सारे जगत् में गोपीनाथ-क्षीर के नाम से विख्यात है। ऐसी खीर दुनिया में अन्यत्र कहीं भी अर्पित नहीं की जाती है।"

हेन-काले सेइ भोग ठाकुरे लागिल ।
शुनि' पुरी-गोसाञि किछु मने विचारिल ॥११९॥

हेन-काले सेइ भोग ठाकुरे लागिल ।
शुनि' पुरी-गोसाञि किछु मने विचारिल ॥११९॥

हेन-काले—इस समय; **सेइ भोग**—वही अद्भुत भोग; **ठाकुरे**—अर्चाविग्रह के सामने; **लागिल**—रखा गया था; **शुनि'**—यह सुनकर; **पुरी-गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी; **किछु**—कुछ; **मने**—मन में; **विचारिल**—विचार करने लगे।

अनुवाद

जब माधवेन्द्र पुरी ब्राह्मण पुजारी से बातें कर रहे थे, तब खीर का

भोग अर्चाविग्रह के समक्ष लगाया गया था। यह सुनकर माधवेन्द्र पुरी ने इस प्रकार विचार किया।

অয়াচিত ক্ষীর প্রসাদ অল্প যদি পাই ।
স্বাদ জানি' তৈছে ক্ষীর গোপালে লাগাই ॥ ১২০ ॥

अयाचित क्षीर प्रसाद अल्प यदि पाइ ।
स्वाद जानि' तैछे क्षीर गोपाले लागाइ ॥ १२० ॥

अयाचित—बिना माँगे; **क्षीर**—खीर; **प्रसाद**—प्रसाद; **अल्प**—थोड़ी सी; **यदि**—यदि; **पाइ**—मुझे मिल जाये; **स्वाद**—स्वाद; **जानि'**—जानकर; **तैछे**—ऐसी ही; **क्षीर**—खीर; **गोपाले**—अपने गोपाल को; **लागाइ**—मैं भोग लगा सकता हूँ।

अनुवाद

"यदि मुझे बिना माँगे थोड़ी-सी खीर मिल जाय, तो मैं उसे चख लूँ और ऐसी ही खीर अपने भगवान् गोपाल के लिए तैयार करूँ।"

এই ইচ্ছায় লজ্জা পাঞা বিষ্ণু-স্মরণ কৈল ।
হেন-কালে ভোগ সরি' আরতি বাজিল ॥ ১২১ ॥

एइ इच्छाय लज्जा पाञा विष्णु-स्मरण कैल ।
हेन-काले भोग सरि' आरति बाजिल ॥ १२१ ॥

एइ इच्छाय—इस इच्छा से; **लज्जा**—लज्जा; **पाञा**—पाकर; **विष्णु-स्मरण**—भगवान् विष्णु का स्मरण; **कैल**—किया; **हेन-काले**—उस समय; **भोग**—भोग; **सरि'**—समाप्त हुआ; **आरति**—आरती; **बाजिल**—आरम्भ हुई।

अनुवाद

जब माधवेन्द्र पुरी को खीर चखने की इच्छा हुई तो उन्हें बहुत लज्जा आ गई, अतएव वे तुरन्त ही भगवान् विष्णु का चिन्तन करने लगे। जब वे इस प्रकार भगवान् विष्णु का चिन्तन कर रहे थे, तब भोग का अर्पण समाप्त हो गया और आरती शुरू हो गई।

আরতি দেখিয়া পুরী কৈল নমস্কার ।
বাহিরে আইলা, কারে কিছু না কহিল আর ॥ ১২২ ॥

आरति देखिया पुरी कैल नमस्कार ।
बाहिरे आइला, कारे किछु ना कहिल आर ॥ १२२ ॥

आरति देखिया—आरती देखकर; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी ने; **कैल**—किया; **नमस्कार**—नमस्कार; **बाहिरे आइला**—वे बाहर चले गये; **कारे**—किसी से; **किछु**—कुछ; **ना**—नहीं; **कहिल**—कहा; **आर**—और।

अनुवाद

आरती समाप्त होने के बाद माधवेन्द्र पुरी ने अर्चाविग्रह को नमस्कार किया और फिर मन्दिर से बाहर चले गये। उन्होंने किसी से और कुछ भी नहीं कहा।

अयाचित-वृत्ति पुरी—विरक्त, उदास ।
अयाचित पाइले खा'न, नहे उपवास ॥ १२३ ॥

अयाचित-वृत्ति पुरी—विरक्त, उदास ।
अयाचित पाइले खा'न, नहे उपवास ॥ १२३ ॥

अयाचित-वृत्ति—भिक्षा माँगने की प्रवृत्ति से दूर; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **विरक्त**—अनासक्त; **उदास**—उदासीन; **अयाचित**—भिक्षा माँगे बिना; **पाइले**—अगर मिले; **खा'न**—उसे वे खाते; **नहे**—यदि नहीं; **उपवास**—तो भूखे ही रहते।

अनुवाद

श्री माधवेन्द्र पुरी भिक्षा माँगने से बचते थे। वे पूर्णतया विरक्त और भौतिक वस्तुओं के प्रति उदासीन थे। बिना मांगे यदि कोई खाने के लिए कुछ दे देता तो खा लेते, अन्यथा वे उपवास करते थे।

तात्पर्य

यह *परमहंस* अवस्था अर्थात् संन्यासी की सर्वोच्च अवस्था है। संन्यासी द्वार द्वार भिक्षा माँगकर भोजन एकत्र कर सकता है, किन्तु परमहंस, जिसने *अयाचित वृत्ति* या *आजगर-वृत्ति* धारण की है, वह किसी से भोजन नहीं माँगता। यदि कोई स्वेच्छा से उसे भोजन देता है, तो वह ग्रहण करता है। *अयाचित वृत्ति* का अर्थ है भिक्षा न माँगना और *आजगर-वृत्ति* उस व्यक्ति को सूचित करती है, जो अजगर के समान है और भोजन प्राप्त करने के लिए कोई प्रयास नहीं करता, अपितु भोजन को स्वतः अपने मुख तक आने की प्रतीक्षा

करता है। दूसरे शब्दों में, परमहंस बिना खाये या सोये एकमात्र भगवान् की सेवा में लगा रहता है। छः गोस्वामियों के विषय में कहा गया था—*निद्राहार-विहारकादिविजितौ।* परमहंस अवस्था में मनुष्य नींद, भोजन तथा इन्द्रियतृप्ति की इच्छा पर विजय प्राप्त कर लेता है। वह सदैव अत्यन्त दैन्य भाव से दिन-रात भगवान् की सेवा में लगा रहने वाला साधु होता है। माधवेन्द्र पुरी ने यह परमहंस अवस्था प्राप्त कर ली थी।

प्रेमामृते तृप्त, क्षुधा-तृष्णा नाहि बाधे ।
क्षीर-इच्छा हैल, ताहे माने अपराधे ॥ १२४॥

प्रेम-अमृते तृप्त—केवल भगवान् की प्रेम-भक्ति में प्रसन्न रहकर; **क्षुधा-तृष्णा**—भूख प्यास; **नाहि**—नहीं; **बाधे**—सताती; **क्षीर**—खीर; **इच्छा**—इच्छा; **हैल**—हुई; **ताहे**—तो उस कारण; **माने**—माना; **अपराधे**—अपराध।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी जैसा परमहंस सदैव भगवान् की प्रेमाभक्ति से सन्तुष्ट रहता है। भौतिक भूख-प्यास उनके कार्यकलापों में बाधक नहीं बन सकते। जब उन्हें अर्चाविग्रह को अर्पित थोड़ी खीर खाने की इच्छा हुई, तो उन्होंने सोचा कि उनसे अपराध हुआ है, क्योंकि वे अर्चाविग्रह को भोग लगाई जा रही वस्तु को खाना चाह रहे थे।

तात्पर्य

यह उचित होगा कि जब अर्चाविग्रह को अर्पण करने वाली भोग-सामग्री रसोईघर से अर्चाविग्रह के कमरे में ले जायी जा रही हो, तो उसे ढक दिया जाये। इस तरह दूसरे लोग इसे देख नहीं सकते। जो भक्ति के उच्च नियमों का पालन करने के अभ्यस्त नहीं हैं, उन्हें यह भोजन खाने की इच्छा हो सकती है, जो कि अपराध है। अतएव किसी को इसे देखने तक का अवसर नहीं देना चाहिए। किन्तु अर्चाविग्रह के समक्ष उसे अवश्य खोल देना चाहिए। अर्चाविग्रह के समक्ष खुले भोजन को देखकर माधवेन्द्र पुरी के मन में उसे थोड़ा चखने

की इच्छा हुई, जिससे वे अपने गोपाल के लिए ऐसी ही खीर बना सकें। किन्तु माधवेन्द्र पुरी नियम के इतने पक्के थे कि उन्होंने इसे अपराध समझा। अतएव किसी से कुछ कहे बिना वे मन्दिर से बाहर चले गये। इसीलिए परमहंस को *विजित-षड्गुण* कहा जाता है। उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर्य तथा क्षुधा-तृष्णा—इन छह भौतिक गुणों को जीत लेना चाहिए।

ग्रामेर शून्य-हाटे वसि' करेन कीर्तन ।
एथा पूजारी कराइल ठाकुरे शयन ॥ १२५॥

ग्रामेर शून्य-हाटे वसि' करेन कीर्तन ।
एथा पूजारी कराइल ठाकुरे शयन ॥ १२५॥

ग्रामेर—गाँव के; **शून्य-हाटे**—खाली बाजार में; **वसि'**—बैठकर; **करेन**—करने लगे; **कीर्तन**—कीर्तन; **एथा**—मन्दिर में; **पूजारी**—पुजारी; **कराइल**—किया; **ठाकुरे**—अर्चाविग्रह; **शयन**—शयन करा दिया।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी मन्दिर से बाहर चले गये और गाँव के खाली बाजार में बैठ गये। वे वहाँ बैठकर कीर्तन करने लगे। इसी बीच मन्दिर के पुजारी ने अर्चाविग्रह को शयन करा दिया।

तात्पर्य

यद्यपि माधवेन्द्र पुरी की रुचि खाने तथा सोने में नहीं थी, किन्तु महामन्त्र का कीर्तन करने में उनकी रुचि इतनी तीव्र थी, मानो वे परमहंस नहीं, अपितु नये भक्त हों। इसका अर्थ यह हुआ कि परमहंस अवस्था में भी कीर्तन करना नहीं छोड़ा जा सकता। हरिदास ठाकुर तथा अन्य गोस्वामी एक निश्चित संख्या की माला जप करते थे। अतएव जपमाला पर जप करना सबके लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, भले ही वह परमहंस क्यों न हो। यह कीर्तन मन्दिर के भीतर या बाहर कहीं भी हो सकता है। माधवेन्द्र पुरी तो निर्जन बाजार में ही बैठकर कीर्तन करने लगे। जैसाकि श्रीनिवास आचार्य ने छः गोस्वामियों की स्तुति में कहा है—*नाम-गान-नतिभिः।* एक परमहंस भक्त कीर्तन करने में तथा भगवत्सेवा करने में सदैव लगा रहता है। भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन

करना तथा उनकी सेवा में लगे रहना समान है। जैसाकि *श्रीमद्भागवत* (७.५.२३) में कहा गया है, भक्ति की नौ विधियाँ हैं— *श्रवणं, कीर्तनं, विष्णो-स्मरणम्, पादसेवनम्, अर्चनम्, वन्दनम्, दास्यम्, सख्यम् तथा आत्म-निवेदनम्।* यद्यपि प्रत्येक विधि भिन्न प्रतीत होती है, किन्तु आध्यात्मिक धरातल पर स्थित हो जाने पर ये एकसमान दिखती हैं। उदाहरणार्थ, श्रवण करना कीर्तन के ही समान है और स्मरण करना कीर्तन या श्रवण के ही तुल्य है। इसी प्रकार अर्चाविग्रह की अर्चना में लगना कीर्तन, श्रवण या स्मरण के ही तुल्य है। भक्त से अपेक्षा की जाती है कि वह भक्ति की सभी नौ विधियों को स्वीकार करे, किन्तु यदि इनमें से एक ही विधि का अच्छे ढंग से पालन किया जाये, तो उसे तब भी सर्वोच्च स्थिति (*परमहंस*) प्राप्त हो सकती है और वह भगवान् के धाम को लौट सकता है।

निज कृत्य करि' पूजारी करिल शयन ।
स्वपने ठाकुर आसि' बलिला वचन ॥ १२६॥

निज कृत्य करि' पूजारी करिल शयन ।
स्वपने ठाकुर आसि' बलिला वचन ॥ १२६॥

निज कृत्य—अपना कार्य; **करि'**—समाप्त करके; **पूजारी**—मन्दिर का ब्राह्मण पुजारी; **करिल**—लिया; **शयन**—विश्राम; **स्वपने**—स्वप्न में; **ठाकुर**—अर्चाविग्रह ने; **आसि'**—वहाँ आकर; **बलिला**—कहे; **वचन**—वचन।

अनुवाद

पुजारी अपना दैनिक कार्य समाप्त करके आराम करने लगा। सपने में उसने देखा कि गोपीनाथ अर्चाविग्रह आकर उससे बातें कर रहे हैं। अर्चाविग्रह इस प्रकार बोले।

उठह, पूजारी, कर द्वार विमोचन ।
क्षीर एक राखियाछि सन्न्यासि-कारण ॥ १२७॥

उठह, पूजारी, कर द्वार विमोचन ।
क्षीर एक राखियाछि सन्न्यासि-कारण ॥ १२७॥

उठह—कृपया उठो; **पूजारी**—हे पुजारी; **कर**—जरा करो; **द्वार**—द्वार; **विमोचन**—खोलो; **क्षीर**—खीर; **एक**—एक बर्तन; **राखियाछि**—मैंने रखा है; **सन्न्यासि**—संन्यासी माधवेन्द्र पुरी के लिए; **कारण**—के लिए।

अनुवाद

"हे पूजारी, कृपया उठो और मन्दिर का द्वार खोलो। मैंने खीर का एक पात्र संन्यासी माधवेन्द्र पुरी के लिए रख लिया है।

धड़ार अञ्चले ढाका एक क्षीर हय ।
तोमरा ना जानिला ताहा आमार मायाय ॥ १२८॥

धड़ार अञ्चले ढाका एक क्षीर हय ।
तोमरा ना जानिला ताहा आमार मायाय ॥ १२८॥

धड़ार—कपड़े के पर्दे के; **अञ्चले**—के पास; **ढाका**—ढककर; **एक**—एक; **क्षीर**—खीर का बर्तन; **हय**—है; **तोमरा**—तुम; **ना**—नहीं; **जानिला**—जानते थे; **ताहा**—वह; **आमार**—मेरी; **मायाय**—माया से।

अनुवाद

"यह खीर का पात्र मेरे कपड़े के पर्दे के पीछे है। तुम मेरी माया के कारण उस पात्र को नहीं देख पाये।

माधव-पूरी सन्न्यासी आछे हाटेतेे वसिञा ।
ताहाके त' एई क्षीर शीघ्र देह लञा ॥ १२९॥

माधव-पुरी सन्न्यासी आछे हाटेते वसिञा ।
ताहाके त' एइ क्षीर शीघ्र देह लञा ॥ १२९॥

माधव-पुरी—माधवेन्द्र पुरी नामक; **सन्न्यासी**—संन्यासी; **आछे**—है; **हाटेते**—बाजार में; **वसिञा**—बैठा; **ताहाके**—उसे; **त'**—निश्चित रूप से; **एइ**—यह; **क्षीर**—खीर; **शीघ्र**—शीघ्र; **देह**—दो; **लञा**—ले जाकर।

अनुवाद

"माधवेन्द्र पुरी नामक एक संन्यासी निर्जन बाजार में बैठा है। तुम खीर के इस पात्र को मेरे पीछे से उठा लो और जाकर उसे दे दो।"

স্বপ্ন দেখি' পূজারী উঠি' করিলা বিচার ।
স্নান করি' কপাট খুলি, মুক্ত কৈল দ্বার ॥১৩০॥

स्वप्न देखि' पूजारी उठि' करिला विचार ।
स्नान करि' कपाट खुलि, मुक्त कैल द्वार ॥१३०॥

स्वप्न देखि'—स्वप्न देखने के बाद; **पूजारी**—पुजारी; **उठि'**—उठकर; **करिला**—किया; **विचार**—विचार; **स्नान करि'**—अर्चाविग्रह कक्ष में जाने के पहले स्नान करके; **कपाट**—द्वार; **खुलि**—खोलकर; **मुक्त**—खोला; **कैल**—किया; **द्वार**—द्वार।

अनुवाद

स्वप्न पूरा होने पर पुजारी तुरन्त शय्या से उठ खड़ा हुआ और उसने अर्चाविग्रह के कक्ष में प्रवेश करने के पूर्व स्नान करना उचित समझा। फिर उसने मन्दिर का द्वार खोला।

ধড়ার আঁচল-তলে পাইল সেই ক্ষীর ।
স্থান লেপি' ক্ষীর লঞা হইল বাহির ॥১৩১॥

धड़ार आँचल-तले पाइल सेइ क्षीर ।
स्थान लेपि' क्षीर लञा हइल बाहिर ॥१३१॥

धड़ार—पर्दे के; **आँचल-तले**—आँचल के नीचे; **पाइल**—उसने पाया; **सेइ**—वह; **क्षीर**—खीर का पात्र; **स्थान लेपि'**—उस स्थान को साफ करके; **क्षीर**—खीर; **लञा**—लेकर; **हइल**—वह गया; **बाहिर**—मन्दिर से बाहर।

अनुवाद

अर्चाविग्रह के निर्देशानुसार पुजारी ने खीर का पात्र कपड़े के पर्दे के पीछे पाया। उसने वह पात्र हटाया और उस स्थान को साफ किया जहाँ वह रखा था। इसके बाद वह मन्दिर से बाहर चला गया।

দ্বার দিয়া গ্রামে গেলা সেই ক্ষীর লঞা ।
হাটে হাটে বুলে মাধব-পুরীকে চাহিঞা ॥১৩২॥

द्वार दिया ग्रामे गेला सेइ क्षीर लञा ।
हाटे हाटे बुले माधव-पुरीके चाहिञा ॥१३२॥

द्वार दिया—द्वार बन्द करके; **ग्रामे**—गाँव में; **गेला**—गया; **सेइ**—वह; **क्षीर**—खीर का पात्र; **लञा**—लेकर; **हाटे हाटे**—हर दुकान पर; **बुले**—गया; **माधव-पुरीके**—माधवेन्द्र पुरी को; **चाहिञा**—आवाज देते हुए।

अनुवाद

वह मन्दिर का द्वार बन्द करके खीर का पात्र लेकर गाँव में चला गया। उसने माधवेन्द्र पुरी की खोज में प्रत्येक हाट में जाकर पुकारा।

ক্ষীর লহ এই, যার নাম 'মাধব-পুরী' ।
তোমা লাগি' গোপীনাথ ক্ষীর কৈল চুরি ॥১৩৩॥

क्षीर लह एइ, ग्रार नाम 'माधव-पुरि' ।
तोमा लागि' गोपीनाथ क्षीर कैल चुरि ॥ १३३ ॥

क्षीर लह—खीर का पात्र ले लो; **एइ**—यह; **ग्रार**—जिसका; **नाम**—नाम; **माधव-पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **तोमा लागि'**—केवल आपके लिए; **गोपीनाथ**—भगवान् गोपीनाथ के अर्चाविग्रह; **क्षीर**—खीर का पात्र; **कैल**—किया; **चुरि**—चोरी।

अनुवाद

वह पुजारी खीर का पात्र उठाकर पुकारने लगा, "जिसका नाम माधवेन्द्र पुरी हो वह आकर यह पात्र ले जाये! गोपीनाथ ने तुम्हारे लिए इस खीर के पात्र की चोरी की है!"

तात्पर्य

यहाँ पर परम सत्य तथा सापेक्ष सत्य का अन्तर बतलाया गया है। भगवान् गोपीनाथ ने यहाँ स्पष्ट रूप से घोषित किया गया है कि वे चोर हैं। उन्होंने खीर-पात्र चुराया था, किन्तु उन्होंने इस बात को छिपाया नहीं, क्योंकि उनके द्वारा चोरी की यह लीला परम दिव्य आनन्द का स्रोत होती है। भौतिक जगत् में चोरी करना अपराध है, किन्तु आध्यात्मिक जगत् में भगवान् द्वारा चोरी करना दिव्य आनन्द का स्रोत होता है। संसारी धूर्त, जिन्हें भगवान् की दिव्य प्रकृति का ज्ञान नहीं है, कभी-कभी कृष्ण को अनैतिक कहते हैं, किन्तु वे यह नहीं जानते कि ऊपर से अनैतिक दिखने वाले उनके कार्य, जिन्हें गुप्त नहीं रखा जाता, भक्तों को असीम आनन्द प्रदान करने वाले होते हैं। ये धूर्त पूर्ण पुरुषोत्तम

भगवान् की दिव्य लीलाओं को न जानने के कारण उनके चरित्र पर लांछन लगाते हैं और तुरन्त ही दुष्टों (धूर्त, नराधम, असुर और जिनका ज्ञान माया द्वारा हर लिया गया है) की श्रेणी में आ जाते हैं। *भगवद्गीता* (७.१५) में कृष्ण बतलाते हैं :

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः॥

"जो निपट मूर्ख हैं, मनुष्यों में अधम हैं, जिनका ज्ञान माया द्वारा हर लिया गया है तथा जो आसुरिक प्रवृत्ति के हैं, वे दुष्ट मेरी शरण में नहीं आते।"

संसारी धूर्त नहीं समझ सकते कि कृष्ण जो भी करते हैं वह दिव्य होने के कारण सर्वदा शुभ होता है। भगवान् के इस गुण की व्याख्या *श्रीमद्भागवत* (१०.३३.२९) में हुई है। कोई किसी सर्वोपरि शक्तिशाली व्यक्ति के कुछ कार्यों को भौतिक गणना के अनुसार अनैतिक मान सकता है, किन्तु यह हकीकत नहीं है। उदाहरणार्थ, सूर्य पृथ्वी की सतह से जल सोखता है, किन्तु वह केवल समुद्र का ही जल नहीं सोखता; वह गंदे नालों का भी जल सोखता है, जिसमें मूत्र तथा अन्य अशुद्ध पदार्थ पड़े रहते हैं। किन्तु ऐसा जल सोखने से सूर्य अशुद्ध नहीं हो जाता। प्रत्युत सूर्य गंदे स्थान को शुद्ध बनाता है। यदि कोई भक्त किसी अनैतिक या अनुचित कार्य के लिए पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के पास जाता है, तब भी वह शुद्ध बन जाता है; इससे भगवान् दूषित नहीं होते। *श्रीमद्भागवत* (१०.२९.१५) में कहा गया है कि यदि कोई काम, क्रोध या भयवश भी (*कामं क्रोधं भयम्*) भगवान् की शरण ग्रहण करता है, तो वह शुद्ध हो जाता है। गोपियाँ युवावस्था में थीं। वे कृष्ण के पास पहुँची, क्योंकि कृष्ण सुन्दर तरुण किशोर थे। बाह्य दृष्टि से वे काम के वशीभूत होकर भगवान् के पास पहुँची और भगवान् ने उनके साथ अर्धरात्रि में नृत्य किया। संसारी दृष्टि से ये कार्य अनैतिक लग सकते हैं, क्योंकि कोई विवाहिता या अविवाहिता तरुणी अपना घर छोड़कर किसी तरुण किशोर से मिलने और उसके साथ नृत्य करने नहीं जा सकती। यद्यपि सांसारिक दृष्टि से यह अनैतिक है, किन्तु गोपियों के इन कृत्यों को भक्ति का सर्वोच्च रूप माना जाता है, क्योंकि वे अर्धरात्रि में कामवश जिनके पास पहुँचीं, वे भगवान् कृष्ण थे।

किन्तु अभक्त लोग इसे नहीं समझ सकते। मनुष्य को चाहिए कि कृष्ण को तत्त्व से (यथार्थ रूप में) समझे। उसे अपने सामान्य ज्ञान का उपयोग करना चाहिए और विचार करना चाहिए कि यदि केवल कृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण करने से मनुष्य शुद्ध हो सकता है, तो फिर स्वयं कृष्ण किस तरह अनैतिक हो सकते हैं? दुर्भाग्यवश, संसारी मूर्खों को शैक्षिक नेता मान लिया जाता है और उन्हें सामान्य जनता को अधार्मिक सिद्धान्त पढ़ाने हेतु उच्च पद दे दिये जाते हैं। इसकी व्याख्या *श्रीमद्भागवत* (७.५.३१) में हुई है : *अन्धा यथान्धैरुपनीयमानाः।* अंधे लोग दूसरे अन्धे लोगों को मार्गदर्शन देने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसे धूर्तों के अधकचरे ज्ञान के कारण सामान्य लोगों को गोपियों के साथ कृष्ण-लीलाओं की चर्चा नहीं करनी चाहिए। अभक्त को तो भगवान् द्वारा अपने भक्त के लिए खीर चुराने की भी विवेचना नहीं करनी चाहिए। यह आगाह किया जाता है कि इन बातों के विषय में कोई सोचे तक नहीं। यद्यपि कृष्ण सभी शुद्धों में सर्वाधिक शुद्ध हैं, किन्तु संसारी लोग कृष्ण की लीलाओं को अनैतिक मानकर स्वयं दूषित हो जाते हैं। इसलिए श्री चैतन्य महाप्रभु गोपियों के साथ कृष्ण की लीलाओं की चर्चा कभी भी सार्वजनिक रूप से नहीं करते थे। वे इनकी चर्चा केवल अपने तीन अन्तरंग पार्षदों के साथ करते थे। उन्होंने कभी भी *रासलीला* की चर्चा जनता के समक्ष नहीं की, जैसाकि पेशेवर कथा-वाचक करते हैं, भले ही वे कृष्ण या श्रोता की प्रकृति को न समझते हों। किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु पवित्र नाम के संकीर्तन को बड़े स्तर पर घंटों करने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

क्षीर लञा सुखे तुमि करह भक्षणे ।
तोमा-सम भाग्यवान्नाहि त्रिभुवने ॥ १३४॥

क्षीर लञा सुखे तुमि करह भक्षणे ।
तोमा-सम भाग्यतान् नाहि त्रिभुवने ॥ १३४॥

क्षीर लञा—खीर का पात्र लेकर; **सुखे**—प्रसन्न होकर; **तुमि**—आप; **करह**—करो; **भक्षणे**—खाना; **तोमा-सम**—आपकी तरह; **भाग्यवान्**—भाग्यवान; **नाहि**—कोई नहीं है; **त्रि-भुवने**—तीनों भुवनों में।

अनुवाद

पुजारी ने आगे कहा, "क्या माधवेन्द्र पुरी नामक संन्यासी आकर यह खीर-पात्र लेंगे और अत्यन्त सुखपूर्वक प्रसाद ग्रहण करेंगे? आप तो तीनों लोकों में परम भाग्यशाली व्यक्ति हो!"

तात्पर्य

यहाँ पर कृष्ण के अनैतिक कार्य द्वारा व्यक्तिगत आशीर्वाद प्राप्त करने का दृष्टान्त दिया गया है। अपने भक्त के लिए गोपीनाथ द्वारा चोरी किये जाने से भक्त तीनों लोकों में सर्वाधिक भाग्यशाली व्यक्ति बनता है। इस तरह भगवान् के अपराध-कार्यों से भी भक्त अत्यन्त भाग्यशाली व्यक्ति बन जाता है। एक संसारी धूर्त कृष्ण की लीलाओं को भला कैसे समझ सकता है और यह निर्णय कर सकता है कि कृष्ण नैतिक हैं या अनैतिक? चूँकि कृष्ण परम सत्य हैं, अतएव उनके लिए नैतिक या अनैतिक जैसे कोई अन्तर नहीं होते है। वे जो भी करते हैं, वही मंगलमय होता है। "ईश्वर मंगलमय है" का यही वास्तविक अर्थ है। वे सभी परिस्थितियों में मंगलमय बने रहते हैं, क्योंकि वे दिव्य हैं तथा इस भौतिक जगत् के कार्यक्षेत्र से परे हैं। अतएव कृष्ण को केवल वही लोग समझ सकते हैं, जो पहले से आध्यात्मिक जगत् में रह रहे हैं। इसकी पुष्टि *भगवद्गीता* (१४.२६) से होती है :

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते॥

"जो पूरी तरह भक्ति में लगा रहता है, जिसका किसी भी परिस्थिति में पतन नहीं होता, वह तुरन्त ही भौतिक प्रकृति के गुणों को पार कर जाता है और ब्रह्म-पद को प्राप्त करता है।"

जो भगवान् की अनन्य भक्ति में लगा हुआ है, वह पहले से आध्यात्मिक जगत् में स्थित है (*ब्रह्मभूयाय कल्पते*)। कृष्ण के साथ उसके कार्य तथा आचरण प्रत्येक दशा में दिव्य होते हैं, अतएव संसारी नीतिविदों की समझ के परे हैं। अत: उचित यही है कि इन कार्यकलापों की संसारी लोगों से चर्चा न की जाये। अच्छा तो यही है कि उन्हें हरे कृष्ण महामन्त्र दिया जाये, जिससे वे धीरे-धीरे शुद्ध होकर कृष्ण के दिव्य कार्यकलापों को समझने लगें।

এত শুনি' পুরী-গোসাঞি পরিচয় দিল ।
ক্ষীর দিয়া পূজারী তাঁরে দণ্ডবৎ হৈল ॥ ১৩৫ ॥

এত শুনি' পুরী-গোসাঞি পরিচয় দিল ।
ক্ষীর দিয়া পূজারী তাঁরে দণ্ডবত্ হৈল ॥ ১৩৫ ॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **पुरी-गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी; **परिचय**—परिचय; **दिल**—दिया; **क्षीर दिया**—खीर का पात्र देकर; **पूजारी**—पुजारी; **ताँरे**—उनको; **दण्डवत् हैल**—दण्डवत् प्रणाम किया।

अनुवाद

यह निमन्त्रण सुनकर माधवेन्द्र पुरी सामने आये और उन्होंने अपना परिचय दिया। तब पुजारी ने उन्हें वह खीर-पात्र दिया और दण्डवत् प्रणाम किया।

तात्पर्य

ब्राह्मण किसी को दण्डवत् प्रणाम नहीं करता, क्योंकि ब्राह्मण सर्वोच्च वर्ण का समझा जाता है। किन्तु ब्राह्मण जब किसी भक्त को देखता है, तो वह दण्डवत् करता है। इस ब्राह्मण पुजारी ने माधवेन्द्र पुरी से यह नहीं पूछा कि वे ब्राह्मण हैं या नहीं, किन्तु जब उसने देखा कि माधवेन्द्र पुरी इतने महान् भक्त हैं कि जिनके लिए कृष्ण तक चोरी कर सकते हैं, तो वह तुरन्त उनकी उत्कृष्ट स्थिति को समझ गया। जैसाकि श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा है—*किबा विप्र, किबा न्यासी, शूद्र केने नय/ येइ कृष्णतत्त्ववेत्ता सेइ 'गुरु' हय।* (*चैतन्य-चरितामृत, मध्य* ८.१२८) यदि ब्राह्मण पुजारी सामान्य ब्राह्मण होता, तो गोपीनाथ उससे स्वप्न में बात न करते। चूँकि अर्चाविग्रह ने माधवेन्द्र पुरी तथा ब्राह्मण पुजारी दोनों ही से स्वप्न में बातें की थीं, अतएव वे दोनों समान स्तर पर थे। किन्तु माधवेन्द्र पुरी वरिष्ठ संन्यासी वैष्णव तथा परमहंस थे, इसलिए पुजारी ने तुरन्त ही उनके चरणों पर गिरकर उन्हें नमस्कार किया।

ক্ষীরের বৃত্তান্ত তাঁরে কহিল পূজারী ।
শুনি' প্রেমাবিষ্ট হৈল শ্রী-মাধব-পুরী ॥ ১৩৬ ॥

ক্ষীরের বৃত্তান্ত তাঁরে কহিল পূজারী ।
শুনি' প্রেমাবিষ্ট হৈল শ্রী-মাধব-পুরী ॥ ১৩৬ ॥

क्षीरेर वृत्तान्त—खीर के पात्र के कारण जो सब घटनाएँ हुईं; **ताँरे**—माधवेन्द्र पुरी को; **कहिल**—कहा; **पूजारी**—पुजारी; **शुनि'**—सुनकर; **प्रेम-आविष्ट**—भगवत् प्रेम से आवेशित; **हैल**—हो गये; **श्री-माधव-पुरी**—श्रील माधवेन्द्र पुरी।

अनुवाद

जब माधवेन्द्र पुरी को खीर-पात्र की कथा विस्तार से बतलाई गई, तो वे कृष्ण-प्रेम के आनन्द में मग्न हो गये।

প্রেম দেখি' সেবক কহে হইয়া বিস্মিত ।
কৃষ্ণ যে ইঁহার বশ,—হয় যথোচিত ॥১৩৭॥

प्रेम देखि' सेवक कहे हइया विस्मित ।
कृष्ण ग्ने इँहार वश,—हय ग्नथोचित ॥ १३७॥

प्रेम देखि'—माधवेन्द्र पुरी की प्रेम दशा देखकर; **सेवक**—पुजारी ने; **कहे**—कहा; **हइया**—होकर; **विस्मित**—चकित; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **ग्ने**—इस प्रकार; **इँहार**—उनके प्रति; **वश**—कृतज्ञ; **हय**—हैं; **ग्नथोचित**—यथोचित।

अनुवाद

श्रील माधवेन्द्र पुरी में प्रेम-भाव के लक्षण देखकर पुजारी आश्चर्यचकित हो गया। उसकी समझ में आ गया कि कृष्ण उनके प्रति इतने कृतज्ञ क्यों हो गये थे और उसने देखा कि कृष्ण का यह कार्य उपयुक्त था।

तात्पर्य

एक भक्त कृष्ण को पूरी तरह अपने वश में कर सकता है। यह बात *श्रीमद्भागवत* (१०.१४.३) में समझायी गई है—*अजितजितोऽप्यसितैस् त्रिलोक्याम्।* कृष्ण को कोई जीत नहीं सकता, किन्तु एक भक्त अपनी भक्ति से उन्हें जीत सकता है। जैसाकि *ब्रह्म-संहिता* (५.३३) में कहा गया है—*वेदेषु दुर्लभमदुर्लभमात्मभक्तौ।* मात्र वैदिक साहित्य पढ़कर कृष्ण को नहीं समझे जा सकते। यद्यपि सारा वैदिक साहित्य कृष्ण को समझने के लिए है, किन्तु कृष्ण से प्रेम किये बिना कृष्ण को नहीं समझे जा सकते। अतएव वैदिक साहित्य के अध्ययन (*स्वाध्याय*) के साथ साथ अर्चाविग्रह की पूजा भी करनी

चाहिए। इन दोनों को करने से भक्त की भक्ति विषयक दिव्य जानकारी बढ़ेगी। *श्रवणादि शुद्धचित्ते करये उदय* (*चैतन्य-चरितामृत, मध्य* २२.१०७)। हर एक के हृदय में भगवत्प्रेम सुप्त रहता है और यदि कोई भक्ति की प्रामाणिक विधि का पालन मात्र करे, तो वह प्रेम जाग्रत हो उठता है। किन्तु मूर्ख संसारी लोग, जो केवल कृष्ण के विषय में पढ़ते हैं, वे भूलवश यह सोचते हैं कि कृष्ण अनैतिक हैं या अपराधी हैं।

एत बलि' नमस्करि' करिला गमन ।
आवेशे करिला पूरी से क्षीर भक्षण ॥१३८॥

एत बलि' नमस्करि' करिला गमन ।
आवेशे करिला पुरी से क्षीर भक्षण ॥ १३८ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **नमस्करि'**—नमस्कार करके; **करिला गमन**—लौट गया; **आवेशे**—भावावेश में; **करिला**—की; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **से**—वह; **क्षीर**—खीर; **भक्षण**—ग्रहण।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी को नमस्कार करके वह पुजारी मन्दिर लौट गया। तब भावावेश में माधवेन्द्र पुरी ने कृष्ण द्वारा प्रदत्त खीर ग्रहण की।

पात्र प्रक्षालन करि' खण्ड खण्ड कैल ।
बहिर्वासे बान्धि' सेइ ठिकारि राखिल ॥१३९॥

पात्र प्रक्षालन करि' खण्ड खण्ड कैल ।
बहिर्वासे बान्धि' सेइ ठिकारि राखिल ॥ १३९ ॥

पात्र—पात्र; **प्रक्षालन करि'**—धोकर; **खण्ड खण्ड**—टुकड़े करके; **कैल**—किया; **बहिर्-वासे**—बाहर के कपड़े में; **बान्धि'**—बाँधकर; **सेइ**—उन; **ठिकारि**—पात्र के टुकड़े; **राखिल**—रख लिए।

अनुवाद

इसके बाद माधवेन्द्र पुरी ने उस पात्र को धोया और तोड़कर उसे खण्ड-खण्ड कर दिया। फिर उन्होंने उन खण्डों को बाह्य वस्त्र में बाँधकर ठीक से रख लिया।

প্রতি-দিন এক-খানি করেন ভক্ষণ ।
খাইলে প্রেমাবেশ হয়,—অদ্ভুত কথন ॥ ১৪০ ॥

প্রতি-দিন এক-খানি করেন ভক্ষণ ।
খাইলে প্রেমাবেশ হয়,—অদ্ভুত কথন ॥ ১৪০ ॥

প্রতি-দিন—प्रति दिन; **এক-খানি**—एक टुकड़ा; **করেন**—करते; **ভক্ষণ**—ग्रहण; **খাইলে**—खाकर; **প্রেম-আবেশ**—प्रेमावेश में; **হয়**—है; **অদ্ভুত**—आश्चर्यजनक; **কথন**—कहानी।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी प्रतिदिन उस मिट्टी के पात्र का एक खण्ड खाते और खाते ही वे भावावेश में आ जाते। ये सब अद्‌भुत कथाएँ हैं।

'ঠাকুর মোরে ক্ষীর দিল—লোক সব শুনি' ।
দিনে লোক-ভিড় হবে মোর প্রতিষ্ঠা জানি' ॥ ১৪১ ॥

'ঠাকুর মোরে ক্ষীর দিল—লোক সব শুনি' ।
দিনে লোক-ভিড় হবে মোর প্রতিষ্ঠা জানি' ॥ ১৪১ ॥

ঠাকুর—भगवान् ने; **মোরে**—मुझे; **ক্ষীর**—खीर; **দিল**—दी है; **লোক**—लोग; **সব**—सब; **শুনি'**—सुनकर; **দিনে**—दिन के समय; **লোক**—लोग; **ভিড়**—भीड़; **হবে**—होगी; **মোর**—मेरा; **প্রতিষ্ঠা**—सम्मान; **জানি'**—जानकर।

अनुवाद

उस पात्र को खण्ड-खण्ड करके अपने वस्त्र में बाँध लेने के बाद माधवेन्द्र पुरी सोचने लगे, "भगवान् ने मुझे खीर का पात्र दिया है और कल प्रातःकाल जब लोग इसके बारे में सुनेंगे, तो बहुत बड़ी भीड़ लग जायेगी।"

সেই ভয়ে রাত্রি-শেষে চলিলা শ্রী-পুরী ।
সেই-খানে গোপীনাথে দণ্ডবৎকরি' ॥ ১৪২ ॥

সেই ভয়ে রাত্রি-শেষে চলিলা শ্রী-পুরী ।
সেই-খানে গোপীনাথে দণ্ডবৎকরি' ॥ ১৪২ ॥

सेइ भये—इस बात से डरकर; **रात्रि-शेषे**—रात्री के अन्त में; **चलिला**—चल पड़े; **श्री-पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **सेइ-खाने**—उस स्थल पर; **गोपीनाथे**—भगवान् गोपीनाथ को; **दण्डवत्**—दण्डवत् प्रणाम; **करि'**—करके।

अनुवाद

यह सोचकर श्री माधवेन्द्र पुरी ने उसी स्थान पर गोपीनाथजी को दंडवत् प्रणाम किया और प्रातः होने के पूर्व ही रेमुणा से चले गये।

चलि' चलि' आइला पुरी श्री-नीलाचल ।
जगन्नाथ देखि' हैला प्रेमेते विह्वल ॥ १४३ ॥

चलि' चलि' आइला पुरी श्री-नीलाचल ।
जगन्नाथ देखि' हैला प्रेमेते विह्वल ॥ १४३ ॥

चलि' चलि'—चलते चलते; **आइला**—वे पहुँचे; **पुरी**—जगन्नाथ पुरी; **श्री-नीलाचल**—नीलाचल नाम से प्रसिद्ध; **जगन्नाथ देखि'**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन करके; **हैला**—हो गये; **प्रेमेते**—प्रेम में; **विह्वल**—विह्वल।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी चलते चलते जगन्नाथ पुरी पहुँचे, जो नीलाचल के नाम से भी विख्यात है। वहाँ उन्होंने भगवान् जगन्नाथजी के दर्शन किये और प्रेमानन्दवश विह्वल हो गये।

प्रेमावेशे उठे, पड़े, हासे, नाचे, गाय ।
जगन्नाथ-दरशने महा-सुख पाय ॥ १४४ ॥

प्रेमावेशे उठे, पड़े, हासे, नाचे, गाय ।
जगन्नाथ-दरशने महा-सुख पाय ॥ १४४ ॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **उठे**—कभी उठते; **पड़े**—कभी गिर जाते; **हासे**—कभी हँसते; **नाचे**—कभी नाचते; **गाय**—कभी गाते; **जगन्नाथ दरशने**—मन्दिर में भगवान् जगन्नाथ के दर्शन करके; **महा-सुख**—दिव्य सुख; **पाय**—उन्होंने अनुभव किया।

अनुवाद

श्रील माधवेन्द्र पुरी भगवत्प्रेम से भावाभिभूत होकर कभी उठ खड़े होते और कभी भूमि पर गिर पड़ते। कभी वे हँसते, नाचते और गाते। इस

प्रकार जगन्नाथ-विग्रह के दर्शन करके उन्होंने दिव्य आनन्द का अनुभव किया।

'মাধব-পুরী শ্রীপাদ আইল',——লোকে হৈল খ্যাতি ।
সব লোক আসি' তাঁরে করে বহু ভক্তি ॥১৪৫॥

'माधव-पुरी श्रीपाद आइल',——लोके हैल ख्याति ।
सब लोक आसि' ताँरे करे बहु भक्ति ॥ १४५ ॥

माधव-पुरी—श्री माधवेन्द्र पुरी; **श्रीपाद**—संन्यासी; **आइल**—आये हैं; **लोके**—लोगों में; **हैल**—हो गई; **ख्याति**—ख्याति, प्रसिद्धि; **सब लोक**—सब लोग; **आसि'**—आते; **ताँरे**—उनके पास; **करे**—करते; **बहु**—बहुत; **भक्ति**—भक्ति, आदर।

अनुवाद

जब माधवेन्द्र पुरी जगन्नाथ पुरी आये, तो लोग उनकी दिव्य ख्याति से परिचित थे। अतएव लोगों की भीड़ आने लगी और भक्तिवश उनका तरह-तरह से सम्मान करने लगी।

প্রতিষ্ঠার স্বভাব এই জগতে বিদিত ।
যে না বাঞ্ছে, তার হয় বিধাতা-নির্মিত ॥১৪৬॥

प्रतिष्ठार स्वभाव एइ जगते विदित ।
ये ना वाञ्छे, तार हय विधाता-निर्मित ॥ १४६ ॥

प्रतिष्ठार—प्रसिद्धि का; **स्वभाव**—स्वभाव; **एइ**—यह; **जगते**—जगत् में; **विदित**—विदित; **ये**—जो व्यक्ति; **ना वाञ्छे**—नहीं चाहता; **तार**—उसका; **हय**—यह है; **विधाता-निर्मित**—विधाता द्वारा उत्पन्न होती है।

अनुवाद

मनुष्य भले ही न चाहता हो, फिर भी विधाता द्वारा नियत प्रतिष्ठा उसे मिल ही जाती है। निस्सन्देह, भक्त की दिव्य प्रतिष्ठा समग्र विश्व में फैल जाती है।

প্রতিষ্ঠার ভয়ে পুরী গেলা পলাঞা ।
কৃষ্ণ-প্রেমে প্রতিষ্ঠা চলে সঙ্গে গড়াঞা ॥১৪৭॥

প্রতিষ্ঠার ভয়ে পুরী গেলা পলাঞা ।
কৃষ্ণ-প্রেমে প্রতিষ্ঠা চলে সঙ্গে গড়াঞা ॥ ১৪৭॥

प्रतिष्ठार भये—प्रतिष्ठा के भय से; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **गेला**—चले गये; **पलाञा**—छोड़कर; **कृष्ण-प्रेमे**—कृष्ण-प्रेम में; **प्रतिष्ठा**—प्रतिष्ठा; **चले**—चलती है; **सङ्गे**—साथ साथ; **गड़ाञा**—पीछा करती हुई।

अनुवाद

अपनी प्रतिष्ठा के भय से माधवेन्द्र पुरी रेमुणा छोड़कर चले गये। किन्तु भगवत्प्रेम द्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठा इतनी उत्कृष्ट है कि वह भक्त के साथ-साथ जाती है, मानो उसका पीछा कर रही हो।

तात्पर्य

भौतिक जगत् के प्रायः सारे बद्धजीव ईर्ष्यालु होते हैं। ईर्ष्यालु व्यक्ति सामान्यतः उसका विरोध करते हैं, जिसे स्वयमेव कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है। ईर्ष्यालु लोगों के लिए ऐसा करना स्वाभाविक है। फलस्वरूप जब कोई भक्त लौकिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने योग्य बन जाता है, तो अनेक लोग उससे ईर्ष्या करने लगते हैं। यह बिल्कुल स्वाभाविक है। जब कोई व्यक्ति विनयवश यश की कामना नहीं करता, तो सामान्यतः लोग उसे विनीत समझकर सभी प्रकार का यश देने लगते हैं। वस्तुतः वैष्णव यश या प्रतिष्ठा की लालसा नहीं करता। वैष्णव-श्रेष्ठ माधवेन्द्र पुरी की प्रतिष्ठा पहले से ही थी, किन्तु वे अपने आपको जनसमुदाय की दृष्टि से दूर रखना चाहते थे। वे महान् भगवद्भक्त के रूप में अपने परिचय को छिपा रखना चाहते थे, किन्तु जब लोगों ने उन्हें भगवत्प्रेम में भाव-विह्वल देखा, तो स्वाभाविक है कि वे उनका सम्मान करने लगे। वस्तुतः माधवेन्द्र पुरी को उच्च कोटि की प्रतिष्ठा मिलनी ही चाहिए, क्योंकि वे भगवान् के अत्यन्त अंतरंग भक्त थे। कभी-कभी *सहजिया* लोग अपने आपको प्रतिष्ठा की कामना से रहित प्रस्तुत करके विनीत व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे लोगों को वास्तव में सुप्रसिद्ध वैष्णवों का पद प्राप्त नहीं हो सकता।

যদ্যপি উদ্বেগ হৈল পলাইতে মন ।
ঠাকুরের চন্দন-সাধন হইল বন্ধন ॥ ১৪৮॥

ग्रद्यपि उद्वेग हैल पलाइते मन ।
ठाकुरेर चन्दन-साधन हइल बन्धन ॥ १४८ ॥

ग्रद्यपि—यद्यपि; **उद्वेग**—चिन्ता; **हैल**—था; **पलाइते**—चले जाने का; **मन**—मन; **ठाकुरेर**—भगवान् के; **चन्दन**—चन्दन की लकड़ी की; **साधन**—इकट्ठा करने का; **हइल**—था; **बन्धन**—बन्धन।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी जगन्नाथ पुरी छोड़ना चाह रहे थे, क्योंकि लोग उनका महान् भक्त के रूप में आदर कर रहे थे, किन्तु इससे गोपाल-विग्रह के लिए चन्दन की लकड़ी एकत्र करने में बाधा उत्पन्न होने का भय था।

জগন্নাথের সেবক যত, যতেক মহান্ত ।
সবাকে কহিল পুরী গোপাল-বৃত্তান্ত ॥ ১৪৯ ॥

जगन्नाथेर सेवक ग्रत, ग्रतेक महान्त ।
सबाके कहिल पुरी गोपाल-वृत्तान्त ॥ १४९ ॥

जगन्नाथेर सेवक—भगवान् जगन्नाथ के सेवक; **ग्रत**—सभी; **ग्रतेक महान्त**—सभी सम्मानित भक्त; **सबाके**—प्रत्येक को; **कहिल**—कहा; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी ने; **गोपाल-वृत्तान्त**—गोपाल का वृत्तान्त।

अनुवाद

श्री माधवेन्द्र पुरी ने वहाँ पर जगन्नाथजी के सभी सेवकों तथा महान् भक्तों से श्री गोपाल के प्राकट्य की कथा बतलाई।

গোপাল চন্দন মাগে,—শুনি' ভক্ত-গণ ।
আনন্দে চন্দন লাগি' করিল যতন ॥ ১৫০ ॥

गोपाल चन्दन मागे,—शुनि' भक्त-गण ।
आनन्दे चन्दन लागि' करिल ग्रतन ॥ १५० ॥

गोपाल—वृन्दावन में भगवान् गोपाल; **चन्दन**—चन्दन; **मागे**—माँगते हैं; **शुनि'**—सुनकर; **भक्त-गण**—सभी भक्त; **आनन्दे**—आनन्द में; **चन्दन लागि'**—चन्दन के लिए; **करिल**—करने लगे; **ग्रतन**—प्रयत्न।

अनुवाद

जब जगन्नाथ पुरी के सारे भक्तों ने सुना कि गोपाल-विग्रह चन्दन चाहते हैं, तो सभी हर्षित होकर चन्दन एकत्र करने का प्रयास करने लगे।

राज-पात्र-सने यार यार परिचय ।
तारे मागि' कर्पूर-चन्दन करिला सञ्चय ॥ १५१॥

राज-पात्र-सने ग्यार ग्यार परिचय ।
तारे मागि' कर्पूर-चन्दन करिला सञ्चय ॥ १५१ ॥

राज-पात्र—राज अधिकारियों; **सने**—के साथ; **ग्यार ग्यार**—जो कोई; **परिचय**—परिचित था; **तारे मागि'**—उनसे माँगकर; **कर्पूर-चन्दन**—कपूर और चन्दन; **करिला**—किया; **सञ्चय**—संचय, इकट्ठा।

अनुवाद

जो लोग राज अधिकारियों से परिचित थे, वे उनसे मिले और कपूर तथा चन्दन माँग-माँगकर एकत्र किया।

तात्पर्य

ऐसा लगता है कि जगन्नाथ-विग्रह के लिए मलयज चन्दन तथा कपूर का प्रयोग होता था। कपूर का प्रयोग उनकी आरती में और चन्दन का उपयोग उनके शरीर पर लेप करने में होता था। ये दोनों वस्तुएँ सरकारी नियन्त्रण में थीं; इसीलिए भक्तों को सरकारी अफसरों से मिलना पड़ा। उन्हें सारी बातें बताकर चन्दन तथा कपूर को जगन्नाथ पुरी से बाहर ले जाने की अनुमति प्राप्त की गई।

एक विप्र, एक सेवक, चन्दन वहिते ।
पुरी-गोसाञिर सङ्गे दिल सम्बल-सहिते ॥ १५२॥

एक विप्र, एक सेवक, चन्दन वहिते ।
पुरी-गोसाञिर सङ्गे दिल सम्बल-सहिते ॥ १५२ ॥

एक विप्र—एक ब्राह्मण; **एक सेवक**—एक सेवक; **चन्दन**—चन्दन; **वहिते**—उठाने के लिए; **पुरी-गोसाञिर**—माधवेन्द्र पुरी; **सङ्गे**—के साथ; **दिल**—दे दिया; **सम्बल-सहिते**—आवश्यक व्यय राशि के साथ।

अनुवाद

इस चन्दन को ले जाने के लिए माधवेन्द्र पुरी को एक ब्राह्मण तथा एक सेवक दिया गया। उन्हें आवश्यक मार्ग-व्यय भी दिया गया।

घाटी-दानी छाड़ाइते राज-पात्र द्वारे ।
राज-लेखा करि' दिल पूरी-गोसाञिर करे ॥ १५३॥

घाटी-दानी छाड़ाइते राज-पात्र द्वारे ।
राज-लेखा करि' दिल पुरी-गोसाञि करे ॥ १५३॥

घाटी-दानी—कर वसूलकर्ताओं से; **छाड़ाइते**—छूटने के लिए; **राज-पात्र**—सरकारी अनुमति के कागजात; **द्वारे**—द्वारों पर; **राज-लेखा**—सरकारी अनुमति; **करि'**—दिखाकर; **दिल**—दिया; **पुरी-गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी के; **करे**—हाथ में।

अनुवाद

रास्ते के चुंगी वसूलने वालों से बचने के लिए माधवेन्द्र पुरी को सरकारी अफसरों से छूट के आवश्यक कागजात दिलाए गये। ये कागजात उनके हाथ में दिये गये।

चलिल माधव-पूरी चन्दन लञा ।
कत-दिने रेमुणाते उत्तरिल गिया ॥ १५४॥

चलिल माधव-पुरी चन्दन लञा ।
कत-दिने रेमुणाते उत्तरिल गिया ॥ १५४॥

चलिल—चल पड़े; **माधव-पुरी**—श्रील माधवेन्द्र पुरी; **चन्दन लञा**—चन्दन लेकर; **कत-दिने**—कुछ दिनों के बाद; **रेमुणाते**—रेमुणा के उसी मन्दिर में; **उत्तरिल**—पहुँचे; **गिया**—जाकर।

अनुवाद

इस तरह माधवेन्द्र पुरी चन्दन सहित वृन्दावन के लिए चल पड़े और कुछ दिनों के बाद वे पुनः रेमुणा गाँव तथा वहाँ के गोपीनाथ मन्दिर में पहुँचे।

গোপীনাথ-চরণে কৈল বহু নমস্কার ।
প্রেমাবেশে নৃত্য-গীত করিলা অপার ॥ ১৫৫॥

গোপীনাথ-চরণে কৈল বহু নমস্কার ।
প্রেমাবেশে নৃত্য-গীত করিলা অপার ॥ ১৫৫॥

গোপীনাথ-চরণে—भगवान् गोपीनाथ के चरणकमलों पर; **কৈল**—किया; **বহু**—बहुत; **নমস্কার**—नमस्कार; **প্রেম-আবেশে**—प्रेमावेश में; **নৃত্য-গীত**—नृत्य तथा कीर्तन; **করিলা**—किया; **অপার**—असीम।

अनुवाद

जब माधवेन्द्र पुरी गोपीनाथ के मन्दिर पहुँचे, तो उन्होंने भगवान् के चरणकमलों पर अनेक बार नमस्कार किया। वे प्रेमभाव में सतत नृत्य और गान करने लगे।

পুরী দেখি' সেবক সব সম্মান করিল ।
ক্ষীর-প্রসাদ দিয়া তাঁরে ভিক্ষা করাইল ॥ ১৫৬॥

পুরী দেখি' সেবক সব সম্মান করিল ।
ক্ষীর-প্রসাদ দিয়া তাঁরে ভিক্ষা করাইল ॥ ১৫৬॥

পুরী দেখি'—माधवेन्द्रपुरी को देखकर; **সেবক**—पुजारी (सेवक); **সব সম্মান**—आदर सहित; **করিল**—भेंट किया; **ক্ষীর-প্রসাদ**—खीर प्रसाद; **দিয়া**—देकर; **তাঁরে**—उन्हें; **ভিক্ষা করাইল**—खिलाया।

अनुवाद

जब गोपीनाथ के पुजारी ने माधवेन्द्र पुरी को फिर से आये देखे, तो उसने उन्हें सादर नमस्कार किया और उन्हें खीर प्रसाद खिलाया।

সেই রাত্রে দেবালয়ে করিল শয়ন ।
শেষ-রাত্রি হৈলে পুরী দেখিল স্বপন ॥ ১৫৭॥

সেই রাত্রে দেবালয়ে করিল শয়ন ।
শেষ-রাত্রি হৈলে পুরী দেখিল স্বপন ॥ ১৫৭॥

সেই রাত্রে—उसी रात; **দেব-আলয়ে**—मन्दिर में; **করিল**—किया; **শয়ন**—शयन; **শেষ-**

रात्रि—रात्रि के अन्त में; **हैले**—होने पर; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **देखिल**—देखा; **स्वपन**—एक स्वप्न।

अनुवाद

उस रात माधवेन्द्र पुरी ने मन्दिर में विश्राम किया, किन्तु रात्रि के अन्त में उन्हें दोबारा स्वप्न दिखलाई पड़ा।

गोपाल आसिया कहे,—शुन हे माधव ।
कर्पूर-चन्दन आमि पाइलाम सब ॥ १५८॥

गोपाल आसिया कहे,—शुन हे माधव ।
कर्पूर-चन्दन आमि पाइलाम सब ॥ १५८॥

गोपाल—गोपाल के अर्चाविग्रह; **आसिया**—आकर; **कहे**—कहने लगे; **शुन**—सुनो; **हे**—हे; **माधव**—माधवेन्द्र पुरी; **कर्पूर-चन्दन**—कपूर और चन्दन; **आमि**—मैंने; **पाइलाम**—पा लिया है; **सब**—सब।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी ने सपने में देखा कि गोपाल उनके सामने आकर कह रहे हैं, "हे माधवेन्द्र पुरी, मुझे पहले ही सारा चन्दन तथा कपूर प्राप्त हो चुका है।

कर्पूर-सहित घषि' ए-सब चन्दन ।
गोपीनाथेर अङ्गे नित्य करह लेपन ॥ १५९॥

कर्पूर-सहित घषि' ए-सब चन्दन ।
गोपीनाथेर अङ्गे नित्य करह लेपन ॥ १५९॥

कर्पूर-सहित—कपूर सहित; **घषि'**—घिसकर; **ए-सब**—यह सब; **चन्दन**—चन्दन; **गोपीनाथेर**—श्री गोपीनाथ के; **अङ्गे**—शरीर पर; **नित्य**—प्रतिदिन; **करह**—करो; **लेपन**—लेप।

अनुवाद

"तुम सारे चन्दन को कपूर के साथ घिसकर तब तक गोपीनाथ के विग्रह पर इसका प्रतिदिन लेप करते रहो, जब तक यह समाप्त न हो जाये।

গোপীনাথ আমার সে এক-ই অঙ্গ হয় ।
ইঁহাকে চন্দন দিলে হবে মোর তাপ-ক্ষয় ॥১৬০॥

গোপীনাথ আমার সে এক-ই অঙ্গ হয় ।
ইঁহাকে চন্দন দিলে হবে মোর তাপ-ক্ষয় ॥ १६० ॥

गोपीनाथ—भगवान् गोपीनाथ; **आमार**—मेरे; **से**—वे; **एक-इ**—एक; **अङ्ग**—शरीर; **हय**—हैं; **इँहाके**—उनको; **चन्दन दिले**—यह चन्दन देकर; **हबे**—होगा; **मोर**—मेरे; **ताप-क्षय**—ताप की कमी।

अनुवाद

"मेरे शरीर तथा गोपीनाथ के शरीर में कोई अन्तर नहीं है। वे अभिन्न हैं। अतएव यदि तुम गोपीनाथ के शरीर पर चन्दन-लेप करते हो, तो वह मेरे शरीर पर लेप के समान ही है। इस प्रकार मेरे शरीर का ताप कम हो जायेगा।

तात्पर्य

गोपाल वृन्दावन में स्थित थे, जो रेमुणा से बहुत दूर है। उन दिनों मुसलमानों द्वारा शासित प्रान्तों से होकर जाना होता था, जो कभी-कभी यात्रियों के आने-जाने में व्यवधान डालते थे। अपने भक्त के कष्ट को ध्यान में रखते हुए भक्तों के सर्वोच्च हितैषी भगवान् गोपाल ने माधवेन्द्र पुरी को आदेश दिया कि चन्दन का लेप गोपीनाथ के शरीर में कर दें, जो गोपाल के शरीर से अभिन्न है। इस तरह भगवान् ने माधवेन्द्र पुरी को कष्ट तथा असुविधा से बचा लिया।

দ্বিধা না ভাবিহ, না করিহ কিছু মনে ।
বিশ্বাস করি' চন্দন দেহ আমার বচনে ॥১৬১॥

দ্বিধা না ভাবিহ, না করিহ কিছু মনে ।
বিশ্বাস করি' চন্দন দেহ আমার বচনে ॥ १६१ ॥

द्विधा ना भाविह—सन्देह मन करो; **ना करिह**—न करो; **किछु**—कुछ भी; **मने**—मन में; **विश्वास करि'**—विश्वास करके; **चन्दन**—चन्दन; **देह**—दो; **आमार वचने**—मेरी आज्ञा से।

अनुवाद

"मेरे आदेशानुसार कार्य करने में तुम तनिक भी सन्देह मत करो। मुझ पर विश्वास रखकर जो आवश्यक हो वह करो।"

এত বলি' গোপাল গেল, গোসাঞি জাগিলা ।
গোপীনাথের সেবক-গণে ডাকিয়া আনিলা ॥ ১৬২॥

এত বলি' গোপাল গেল, গোসাঞি জাগিলা ।
গোপীনাথের সেবক-গণে ডাকিয়া আনিলা ॥ ১৬২॥

এত বলি'—यह कहकर; **गोपाल**—गोपाल के अर्चाविग्रह; **गेल**—अन्तर्धान हो गये; **गोसाञि जागिला**—माधवेन्द्र पुरी जाग गये; **गोपीनाथेर**—भगवान् गोपीनाथ के; **सेवक-गणे**—सेवकों को; **डाकिया**—बुलाकर; **आनिला**—उनको लाये।

अनुवाद

इतना आदेश देकर गोपाल अन्तर्धान हो गये और श्रील माधवेन्द्र पुरी जाग गये। उन्होंने तुरन्त गोपीनाथ के सभी सेवकों को बुलाया और वे वहाँ उपस्थित हो गये।

প্রভুর আজ্ঞা হৈল,—এই কর্পূর-চন্দন ।
গোপীনাথের অঙ্গে নিত্য করহ লেপন ॥ ১৬৩॥

প্রভুর আজ্ঞা হৈল,—এই কর্পূর-চন্দন ।
গোপীনাথের অঙ্গে নিত্য করহ লেপন ॥ ১৬৩॥

प्रभुर आज्ञा हैल—भगवान् की आज्ञा हुई है; **एइ**—यह; **कर्पूर**—कपूर; **चन्दन**—और चन्दन; **गोपीनाथेर अङ्गे**—गोपीनाथ के शरीर पर; **नित्य**—प्रतिदिन; **करह**—करो; **लेपन**—लेप।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी ने कहा, "गोपीनाथ के विग्रह पर इस कपूर तथा चन्दन का लेप करो, जिसे मैं वृन्दावन स्थित गोपाल के लिए लाया हूँ। इसे नियमित रूप से प्रतिदिन करो।

ইঁহাকে চন্দন দিলে, গোপাল হইবে শীতল ।
স্বতন্ত্র ঈশ্বর—তাঁর আজ্ঞা সে প্রবল ॥ ১৬৪॥

ইঁহাকে চন্দন দিলে, গোপাল হইবে শীতল ।
স্বতন্ত্র ঈশ্বর—তাঁর আজ্ঞা সে প্রবল ॥ ১৬৪॥

ইঁহাকে—गोपीनाथ को; **चन्दन दिले**—जब चन्दन लगाया जायेगा; **गोपाल**—वृन्दावन

में भगवान् गोपाल; **हइबे**—होंगे; **शीतल**—शीतल; **स्वतन्त्र ईश्वर**—परम स्वतन्त्र ईश्वर; **ताँर**—उनकी; **आज्ञा**—आज्ञा; **से**—इतनी; **प्रबल**—प्रबल।

अनुवाद

"यदि गोपीनाथ के शरीर पर चन्दन का लेप किया जाये, तो गोपाल शीतल हो जायेंगे। आखिर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् पूर्णतया स्वतन्त्र हैं; उनका आदेश सर्व-शक्तिमान है।"

श्रीष्म-काले गोपीनाथ परिबे चन्दन ।
शुनि' आनन्दित हैल सेवकेर मन ॥ १६५॥

ग्रीष्म-काले गोपीनाथ परिबे चन्दन ।
शुनि' आनन्दित हैल सेवकेर मन ॥ १६५॥

ग्रीष्म-काले—ग्रीषम काल में; **गोपीनाथ**—भगवान् गोपीनाथ; **परिबे**—लगवायेंगे; **चन्दन**—चन्दन; **शुनि'**—सुनकर; **आनन्दित**—आनन्दित; **हैल**—हो गये; **सेवकेर**—सेवकों के; **मन**—मन।

अनुवाद

गोपीनाथ के सेवक यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए कि गर्मियों में यह सारा चन्दन गोपीनाथ के शरीर पर लेप करने के लिए प्रयोग होगा।

पुरी कहे,—एइ दुइ घषिबे चन्दन ।
आर जना-दुइ देह, दिब ये वेतन ॥ १६६॥

पुरी कहे,—एइ दुइ घषिबे चन्दन ।
आर जना-दुइ देह, दिब ये वेतन ॥ १६६॥

पुरी कहे—माधवेन्द्र पुरी ने कहा; **एइ दुइ**—ये दो सहायक; **घषिबे**—घिसेंगे; **चन्दन**—चन्दन; **आर**—और दूसरे; **जना-दुइ**—दो व्यक्ति; **देह**—लगायेंगे; **दिब**—मैं दूँगा; **ये**—वह; **वेतन**—वेतन।

अनुवाद

माधवेन्द्र पुरी ने कहा, "ये दो सेवक नियमित रूप से चन्दन घिसेंगे और तुम सहायता के लिए अन्य दो व्यक्ति और ले लो। उनका वेतन मैं दूँगा।"

এই মত চন্দন দেয় প্রত্যহ ঘষিয়া ।
পরায় সেবক সব আনন্দ করিয়া ॥১৬৭॥

এइ मत चन्दन देय प्रत्यह घषिया ।
पराय सेवक सब आनन्द करिया ॥ १६७॥

एइ मत—इस प्रकार; **चन्दन**—चन्दन; **देय**—लगाया; **प्रत्यह**—प्रतिदिन; **घषिया**—घिसकर; **पराय**—लगाया; **सेवक**—सेवक; **सब**—सभी; **आनन्द**—आनन्द; **करिया**—अनुभव करके।

अनुवाद

इस तरह प्रतिदिन गोपीनाथजी को चन्दन घिसकर लेप किया जाता रहा। इससे गोपीनाथ के सेवक अत्यन्त प्रसन्न थे।

প্রত্যহ চন্দন পরায়, যাবৎ হৈল অন্ত ।
তথায় রহিল পুরী তাবৎপর্যন্ত ॥১৬৮॥

प्रत्यह चन्दन पराय, यावत् हैल अन्त ।
तथाय रहिल पुरी तावत्पर्यन्त ॥ १६८॥

प्रत्यह—प्रतिदिन; **चन्दन**—चन्दन का लेप; **पराय**—शरीर पर लगाया; **यावत्**—जब तक नहीं; **हैल**—था; **अन्त**—अन्त; **तथाय**—वहाँ; **रहिल**—रहे; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **तावत्**—उस समय; **पर्यन्त**—तक।

अनुवाद

इस प्रकार पूरा चन्दन समाप्त होने तक गोपीनाथ के विग्रह पर चन्दन का लेप होता रहा और माधवेन्द्र पुरी तब तक वहीं रहे।

গ্রীষ্ম-কাল-অন্তে পুনঃ নীলাচলে গেলা ।
নীলাচলে চাতুর্মাস্য আনন্দে রহিলা ॥১৬৯॥

ग्रीष्म-काल-अन्ते पुनः नीलाचले गेला ।
नीलाचले चातुर्मास्य आनन्दे रहिला ॥ १६९॥

ग्रीष्म-काल—ग्रीष्म काल के; **अन्ते**—अन्त में; **पुनः**—पुनः; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी; **गेला**—गये; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **चातुर्-मास्य**—चतुर्मास; **आनन्दे**—आनन्द में; **रहिला**—रहे।

अनुवाद

गर्मी के अन्त में माधवेन्द्र पुरी जगन्नाथ पुरी लौट आये, जहाँ उन्होंने बड़े ही आनन्द से चातुर्मास्य बिताया।

तात्पर्य

चातुर्मास्य काल आषाढ़ मास (जून-जुलाई) के शुक्लपक्ष की शयना एकादशी से प्रारम्भ होता है। यह काल कार्तिक मास (अक्टूबर-नवम्बर) के शुक्लपक्ष की एकादशी को समाप्त होता है, जिसे उत्थान-एकादशी कहते हैं। यह चार मास का काल *चातुर्मास्य* कहलाता है। कुछ वैष्णव इसे आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक मनाते हैं। यह भी चार मास का समय होता है। यह काल चन्द्रमासों की गणना से चातुर्मास्य कहलाता है, किन्तु अन्य लोग सौर मास के अनुसार श्रावण से कार्तिक तक भी चार्तुमास्य मनाते हैं। यह सम्पूर्ण काल, चाहे चन्द्र हो या सौर, वर्षा ऋतु में ही आता है। सभी वर्ग के लोगों को चातुर्मास्य मनाना चाहिए, चाहे वह गृहस्थ हो या संन्यासी। इसे मनाना सारे आश्रमों के लिए अनिवार्य है। इन चार महीनों में किये गये व्रत के पीछे मुख्य प्रयोजन इन्द्रियतृप्ति की मात्रा को कम करना होता है। यह अधिक कठिन काम नहीं है। श्रावण के महीने में हरा साग नहीं खाना चाहिए। भाद्र में दही नहीं खाना चाहिए तथा आश्विन मास में दूध नहीं पीना चाहिए। कार्तिक मास में मछली या अन्य आमिष आहार नहीं करना चाहिए। आमिष भोजन का अर्थ है मछली तथा मांस। इसी तरह मसूर तथा उड़द की दालें भी आमिषाहार मानी जाती हैं, क्योंकि इनमें प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है और अधिक प्रोटीन वाले आहार को आमिषाहार माना जाता है। कुल मिलाकर, चातुर्मास्य के चार महीनों में मनुष्य को उन सब भोजन का परित्याग करने का अभ्यास करना चाहिए, जो इन्द्रियभोग के निमित्त होता है।

শ্রী-মুখে মাধব-পুরীর অমৃত-চরিত ।
ভক্ত-গণে শুনাঞা প্রভু করে আস্বাদিত ॥ ১৭০॥

श्री-मुखे माधव-पुरीर अमृत-चरित ।
भक्त-गणे शुनाञा प्रभु करे आस्वादित ॥ १७०॥

श्री-मुखे—श्री चैतन्य महाप्रभु के मुख से; **माधव-पुरीर**—माधवेन्द्र पुरी का; **अमृत-चरित**—अमृत चरित्र; **भक्त-गणे**—भक्तों को; **शुनाञा**—सुनाकर; **प्रभु**—महाप्रभु; **करे**—करते हैं; **आस्वादित**—आस्वादन।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वयं माधवेन्द्र पुरी के अमृतमय गुणों की प्रसंशा की और जब वे यह सब भक्तों को सुना रहे थे, तो उन्होंने स्वयं भी इसका आस्वादन किया।

प्रभु कहे,—नित्यानन्द, करह विचार ।
पुरी-सम भाग्यवान्जगते नाहि आर ॥ १७१॥

प्रभु कहे,—नित्यानन्द, करह विचार ।
पुरी-सम भाग्यवान् जगते नाहि आर ॥ १७१॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने कहा; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **करह विचार**—जरा विचार करो; **पुरी-सम**—माधवेन्द्र पुरी की तरह; **भाग्यवान्**—भाग्यवान्; **जगते**—जगत् में; **नाहि**—नहीं है; **आर**—और कोई।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द से यह निर्णय करने के लिए कहा कि क्या इस जगत् में माधवेन्द्र पुरी के समान और कोई भाग्यशाली है!

दुग्ध-दान-छले कृष्ण याँरे देखा दिल ।
तिन-बारे स्वप्ने आसि' याँरे आज्ञा कैल ॥ १७२॥

दुग्ध-दान-छले कृष्ण ग्याँरे देखा दिल ।
तिन-बारे स्वप्ने आसि' ग्याँरे आज्ञा कैल ॥ १७२॥

दुग्ध-दान-छले—दूध देने के बहाने; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **ग्याँरे**—जिनको; **देखा दिल**—दर्शन दिया; **तिन-बारे**—तीन बार; **स्वप्ने**—स्वप्न में; **आसि'**—आकर; **ग्याँरे**—जिनको; **आज्ञा**—आज्ञा; **कैल**—दी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "माधवेन्द्र पुरी इतने भाग्यशाली थे कि

साक्षात् भगवान् कृष्ण उनके समक्ष दूध देने के बहाने प्रकट हुए। भगवान् ने माधवेन्द्र पुरी को स्वप्न में तीन बार आदेश दिया।

যাঁর প্রেমে বশ হঞা প্রকট হইলা ।
সেবা অঙ্গীকার করি' জগত তারিলা ॥ ১৭৩॥

য়াঁর প্রেমে বশ হঞা প্রকট হইলা ।
সেবা অঙ্গীকার করি' জগত্ তারিলা ॥ ১৭৩॥

য়াঁর—जिसके; **प्रेमे**—भगवत्प्रेम के; **वश**—वशीभूत; **हञा**—होकर; **प्रकट**—प्रकट; **हइला**—हुए; **सेवा**—सेवा; **अङ्गीकार**—स्वीकार; **करि'**—करके; **जगत**—सारा संसार; **तारिला**—उद्धार किया।

अनुवाद

"माधवेन्द्र पुरी के प्रेम के वशीभूत होकर स्वयं भगवान् कृष्ण गोपाल विग्रह के रूप में प्रकट हुए और उनकी सेवा स्वीकार करके भगवान् ने सारे जगत् का उद्धार किया।

যাঁর লাগি' গোপীনাথ ক্ষীর কৈল চুরি ।
অতএব নাম হৈল 'ক্ষীর-চোরা' করি' ॥ ১৭৪॥

য়াঁর লাগি' গোপীনাথ ক্ষীর কৈল চুরি ।
অতএব নাম হৈল 'ক্ষীর-চোরা' করি' ॥ ১৭৪॥

য়াঁর—जिनके; **लागि'**—कारण; **गोपीनाथ**—भगवान् गोपीनाथ; **क्षीर**—खीर; **कैल**—की; **चुरि**—चोरी; **अतएव**—अतएव; **नाम**—नाम; **हैल**—हुआ; **क्षीर-चोरा**—खीर चोरा; **करि'**—करके।

अनुवाद

"माधवेन्द्र पुरी के ही कारण भगवान् गोपीनाथ ने खीर-पात्र चुराया। इस तरह वे 'क्षीर-चोरा' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

কর্পূর-চন্দন যাঁর অঙ্গে চড়াইল ।
আনন্দে পুরী-গোসাঞির প্রেম উথলিল ॥ ১৭৫॥

कर्पूर-चन्दन ग्राँर अङ्गे चड़ाइल ।
आनन्दे पुरी-गोसाञि प्रेम उथलिल ॥ १७५ ॥

कर्पूर-चन्दन—कपूर तथा चन्दन; **ग्राँर अङ्गे**—जिनके शरीर पर; **चड़ाइल**—लगाया गया; **आनन्दे**—आनन्दपूर्वक; **पुरी-गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी का; **प्रेम**—भगवत्प्रेम; **उथलिल**—भर गया।

अनुवाद

"माधवेन्द्र पुरी ने गोपीनाथ के श्रीविग्रह पर चन्दन का लेप किया और इस प्रकार वे भगवत्प्रेम से विह्वल हो गये।

म्लेच्छ-देशे कर्पूर-चन्दन आनिते जञ्जाल ।
पुरी दुःख पावे इहा जानिया गोपाल ॥ १७६ ॥
म्लेच्छ-देशे कर्पूर-चन्दन आनिते जञ्जाल ।
पुरी दुःख पाबे इहा जानिया गोपाल ॥ १७६ ॥

म्लेच्छ-देशे—म्लेच्छों द्वारा शासित देशों से; **कर्पूर-चन्दन**—कपूर और चन्दन; **आनिते**—लाते हुए; **जञ्जाल**—असुविधा; **पुरी**—माधवेन्द्र पुरी; **दुःख**—दुःख; **पाबे**—मिलेगा; **इहा**—यह; **जानिया**—जानकर; **गोपाल**—गोपाल।

अनुवाद

"मुसलमानों द्वारा शासित भारतीय प्रान्तों में चन्दन तथा कपूर लेकर यात्रा करना अत्यन्त असुविधाजनक था। इसके कारण माधवेन्द्र पुरी कष्ट में पड़ सकते थे। यह गोपाल-विग्रह को ज्ञात हो गया।

महा-दया-मय प्रभु—भकत-वत्सल ।
चन्दन परि' भक्त-श्रम करिल सफल ॥ १७७ ॥
महा-दया-मय प्रभु—भकत-वत्सल ।
चन्दन परि' भक्त-श्रम करिल सफल ॥ १७७ ॥

महा—अत्यन्त; **दया-मय**—दयालु; **प्रभु**—प्रभु; **भकत-वत्सल**—भक्त वत्सल; **चन्दन परि'**—चन्दन लगवाकर; **भक्त-श्रम**—भक्तों का परिश्रम; **करिल**—किया; **सफल**—सफल।

अनुवाद

"भगवान् अत्यधिक दयालु हैं और अपने भक्तों से अनुरक्त रहते हैं;

अतएव जब गोपीनाथ को चन्दन का लेप लगाया गया, तो माधवेन्द्र पुरी का श्रम सार्थक हो गया।"

পুরীর প্রেম-পরাকাষ্ঠা করহ বিচার ।
অলৌকিক প্রেম চিত্তে লাগে চমৎকার ॥ ১৭৮॥

पुरीर प्रेम-पराकाष्ठा करह विचार ।
अलौकिक प्रेम चित्ते लागे चमत्कार ॥ १७८॥

पुरीर—माधवेन्द्र पुरी का; **प्रेम-परा-काष्ठा**—प्रबल भगवत्प्रेम का मापदण्ड; **करह**—जरा करो; **विचार**—विचार; **अलौकिक**—असामान्य; **प्रेम**—ईश्वर प्रेम; **चित्ते**—मन में; **लागे**—लगता है; **चमत्कार**—चमत्कार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु को माधवेन्द्र पुरी के उत्कट प्रेम के आदर्श पर अपना निर्णय देने के लिए कहा। चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "उनके सारे प्रेम-व्यवहार असाधारण हैं। निस्सन्देह, उनके कार्यकलापों को सुनकर हर कोई आश्चर्यचकित रह जाता है।"

तात्पर्य

जब जीव को *कृष्ण-विरह* का अनुभव होता है, तो समझा जाता है कि उसने जीवन की परम सफलता प्राप्त कर ली है। जब मनुष्य भौतिक वस्तुओं के प्रति उदासीन बन जाता है, तो वह भौतिक वस्तुओं के प्रति आकर्णण के केवल एक अन्य पक्ष का अनुभव कर रहा होता है। किन्तु कृष्ण-विरह का अनुभव करना तथा भगवान् के उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनकी सेवा में लगे रहना कृष्ण-प्रेम का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। श्री चैतन्य महाप्रभु श्रील माधवेन्द्र पुरी द्वारा प्रदर्शित उत्कट कृष्ण-प्रेम को इंगित करना चाह रहे थे। बाद में श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों ने माधवेन्द्र पुरी के ही पदचिह्नों का अनुसरण किया और अपनी चिन्ता न करते हुए भगवान् की सेवा की।

পরম বিরক্ত, মৌনী, সর্বত্র উদাসীন ।
গ্রাম্য-বার্তা-ভয়ে দ্বিতীয়-সঙ্গ-হীন ॥ ১৭৯॥

परम विरक्त, मौनी, सर्वत्र उदासीन ।
ग्राम्य-वार्ता-भये द्वितीय-सङ्ग-हीन ॥ १७९ ॥

परम विरक्त—अत्यन्त अनासक्त; **मौनी**—मौन; **सर्वत्र**—हर जगह; **उदासीन**—उदासीन; **ग्राम्य-वार्ता**—लौकिक विषयों के; **भये**—भय से; **द्वितीय**—दूसरी; **सङ्ग**—संगति; **हीन**—के बिना।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु ने आगे बतलाया, "श्री माधवेन्द्र पुरी अकेले रहा करते थे। वे पूर्ण विरक्त थे और सदैव मौन रहते थे। वे किसी भी भौतिक वस्तु में रुचि नहीं रखते थे और संसारी बातें करने के भय से अकेले रहते थे।

हेन-जन गोपालेर आज्ञामृत पाञा ।
सहस्र क्रोश आसि' बुले चन्दन मागिञा ॥ १८० ॥

हेन-जन गोपालेर आज्ञामृत पाञा ।
सहस्र क्रोश आसि' बुले चन्दन मागिञा ॥ १८० ॥

हेन-जन—ऐसा व्यक्ति; **गोपालेर**—गोपाल अर्चाविग्रह की; **आज्ञा-अमृत**—अमृत समान; **पाञा**—पाकर; **सहस्र**—एक हजार; **क्रोश**—कोस; **आसि'**—आकर; **बुले**—चले; **चन्दन**—चन्दन; **मागिञा**—माँगने।

अनुवाद

"गोपालजी का दिव्य आदेश पाकर इस महापुरुष ने माँगकर चन्दन एकत्र करने हेतु हजारों मील की यात्रा की।

भोके रहे, तबु अन्न मागिञा ना खाय ।
हेन-जन चन्दन-भार वहि' लञा याय ॥ १८१ ॥

भोके रहे, तबु अन्न मागिञा ना खाय ।
हेन-जन चन्दन-भार वहि' लञा याय ॥ १८१ ॥

भोके—भूखे; **रहे**—रहते; **तबु**—तथापि; **अन्न**—भोजन; **मागिञा**—माँगकर; **ना**—नहीं; **खाय**—खाते; **हेन-जन**—ऐसे व्यक्ति; **चन्दन-भार**—चन्दन का बोझ; **वहि'**—उठाकर; **लञा**—लेकर; **याय**—जाते हैं।

अनुवाद

"माधवेन्द्र पुरी ने भूखे रहने पर भी किसी से खाने के लिए भोजन नहीं माँगा। इस विरक्त पुरुष ने श्री गोपाल के निमित्त चन्दन का भार वहन किया।

'মণেক চন্দন, তোলা-বিশেক কর্পূর ।
গোপালে পরাইব'—এই আনন্দ প্রচুর ॥১৮২॥

'मणेक चन्दन, तोला-विशेक कर्पूर ।
गोपाले पराइब'—एइ आनन्द प्रचुर ॥ १८२ ॥

मणेक चन्दन—एक मन चन्दन; **तोला**—तोले; **विशेक**—बीस; **कर्पूर**—कपूर; **गोपाले**—गोपाल पर; **पराइब**—मैं लगाऊँगा; **एइ**—यह; **आनन्द**—आनन्द; **प्रचुर**—पर्याप्त।

अनुवाद

"अपनी निजी सुख-सुविधा की चिन्ता न करके माधवेन्द्र पुरी एक मन चन्दन (लगभग ८२ पौंड) तथा बीस तोला (लगभग ८ औंस) कपूर गोपाल के विग्रह को लेप करने के लिए उठा लाये। यही दिव्य आनन्द उनके लिए पर्याप्त था।

উৎকলের দানী রাখে চন্দন দেখিঞা ।
তাহাঁ এড়াইল রাজ-পত্র দেখাঞা ॥১৮৩॥

उत्कलेर दानी राखे चन्दन देखिञा ।
ताहाँ एड़ाइल राज-पत्र देखाञा ॥ १८३ ॥

उत्कलेर—उड़ीसा का; **दानी**—कर अधिकारी; **राखे**—रख लिया; **चन्दन**—चन्दन; **देखिञा**—देखकर; **ताहाँ**—वहाँ; **एड़ाइल**—बच गये; **राज-पत्र**—सरकारी पत्र; **देखाञा**—दिखाकर।

अनुवाद

"चूँकि उड़ीसा प्रान्त से बाहर चन्दन ले जाने पर प्रतिबन्ध था, अतएव चुंगी अधिकारी ने पूरा चन्दन अपने पास रख लिया, किन्तु माधवेन्द्र पुरी ने उसे सरकार द्वारा दिया गया विमोचन-प्रपत्र दिखलाया, जिससे वे कठिनाइयों से बच गये।

म्लेच्छ-देश दूर पथ, जगाति अपार ।
के-मते चन्दन निब——नाहि ए विचार ॥ १८४॥

म्लेच्छ-देश दूर पथ, जगाति अपार ।
के-मते चन्दन निब——नाहि ए विचार ॥ १८४॥

म्लेच्छ-देश—मुस्लिम शासित देश; **दूर पथ**—लम्बी यात्रा; **जगाति**—पहरेदार; **अपार**—असीम; **के-मते**—कैसे; **चन्दन**—चन्दन; **निब**—मैं ले जाऊँगा; **नाहि**—नहीं; **ए**—यह; **विचार**—विचार।

अनुवाद

"माधवेन्द्र पुरी वृन्दावन की लम्बी यात्रा के दौरान मुस्लिमों के द्वारा शासित एवं अनगिनत पहरेदारों से भरे हुए प्रान्तों से गुजरते हुए तनिक भी चिन्तित नहीं हुए।

सङ्गे एक वट नाहि घाटी-दान दिते ।
तथापि उत्साह बड़ चन्दन लञा याइते ॥ १८५॥

सङ्गे एक वट नाहि घाटी-दान दिते ।
तथापि उत्साह बड़ चन्दन लञा याइते ॥ १८५॥

सङ्गे—उसके साथ; **एक**—एक; **वट**—पैसा; **नाहि**—नहीं था; **घाटी-दान**—कर; **दिते**—देने को; **तथापि**—तथापि; **उत्साह**—उत्साह; **बड़**—बड़ा; **चन्दन**—चन्दन; **लञा**—लेकर; **याइते**—जाने के लिए।

अनुवाद

"यद्यपि माधवेन्द्र पुरी के पास एक छदाम भी नहीं था, किन्तु वे चुंगी अफसरों के पास से निकलने के लिए तनिक भी भयभीत नहीं थे। उनका एकमात्र आनन्द गोपाल के लिए वृन्दावन तक चन्दन का बोझ उठाकर ले चलने में था।

प्रगाढ़-प्रेमेर एइ स्वभाव-आचार ।
निज-दुःख-विघ्नादिर ना करे विचार ॥ १८६॥

प्रगाढ़-प्रेमेर एइ स्वभाव-आचार ।
निज-दुःख-विघ्नादिर ना करे विचार ॥ १८६॥

प्रगाढ़—प्रगाढ़; **प्रेमेर**—भगवत् प्रेम का; **एइ**—यह; **स्वभाव**—स्वाभाविक; **आचार**—व्यवहार; **निज**—अपना; **दुःख**—दुःख; **विघ्न**—विघ्न; **आदिर**—आदि; **ना**—नहीं; **करे**—करता है; **विचार**—विचार।

अनुवाद

"उत्कट भगवत्प्रेम का यही स्वाभाविक परिणाम होता है। भक्त निजी असुविधाओं या विघ्नों पर विचार नहीं करता। वह सभी परिस्थितियों में भगवान् की सेवा करना चाहता है।

तात्पर्य

जिन लोगों में कृष्ण के लिए उत्कट प्रेम का विकास कर लिया है, उनके लिए यह स्वाभाविक है कि वे अपनी निजी असुविधाओं तथा विघ्नों की चिन्ता नहीं करते। ऐसे भक्त पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् या उनके प्रतिनिधि-रूपी गुरु का आदेश पालन करने के लिए कृतसंकल्प होते हैं। प्रत्येक परिस्थिति में, यहाँ तक कि घोर संकट आ जाने पर भी वे दृढ संकल्प के साथ अविचलित भाव से आगे बढ़ते हैं। इससे निश्चित रूप से सेवक का उत्कट प्रेम सिद्ध होता है। जैसाकि *श्रीमद्भागवत* (१०.१४.८) में कहा गया है—*तत् तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणः*—जो मनुष्य भवबन्धन से वास्तव में मुक्त होना चाहते हैं, जिन्होंने उत्कट कृष्ण-प्रेम विकसित कर लिया है, वे भगवद्धाम लौट जाने के लिए सुपात्र हैं। कृष्ण का उत्कट प्रेमी कितने भी असुविधा, अभाव, बाधा या दुःख की चिंता नहीं करता। कहा जाता है कि जब किसी को किसी उन्नत वैष्णव में दुःख या शोक दिखे, तो वह वास्तव में दुःख या शोक नहीं अपितु दिव्य आनन्द होता है। *शिक्षाष्टक* (८) में श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी उपदेश दिया है—*आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मां।* कृष्ण का उत्कट प्रेमी कभी भी अपनी सेवा से विचलित नहीं होता, भले ही उसके समक्ष कितनी ही कठिनाइयाँ तथा व्यवधान क्यों न आयें।

এই তার গাঢ় প্রেমা লোকে দেখাইতে ।
গোপাল তাঁরে আজ্ঞা দিল চন্দন আনিতে ॥ ১৮৭॥

एइ तार गाढ़ प्रेमा लोके देखाइते ।
गोपाल ताँरे आज्ञा दिल चन्दन आनिते ॥ १८७॥

एइ—यह; **तार**—माधवेन्द्र पुरी का; **गाढ़**—प्रगाढ़; **प्रेमा**—भगवत् प्रेम; **लोके**—लोगों को; **देखाइते**—दिखाने के लिए; **गोपाल**—भगवान् गोपाल; **ताँरे**—उनको; **आज्ञा**—आज्ञा; **दिल**—दी; **चन्दन**—चन्दन; **आनिते**—लाने के लिए।

अनुवाद

"श्री गोपाल यह दिखलाना चाहते थे कि माधवेन्द्र पुरी कृष्ण से कितना प्रगाढ़ प्रेम करते थे; अतएव उन्होंने नीलाचल से चन्दन तथा कपूर लाने के लिए उनसे कहा।

बहु परिश्रमे चन्दन रेमुणा आनिल ।
आनन्द बाड़िल मने, दुःख ना गणिल ॥ १८८॥

बहु परिश्रमे चन्दन रेमुणा आनिल ।
आनन्द बाड़िल मने, दुःख ना गणिल ॥ १८८॥

बहु—बहुत; **परिश्रमे**—परिश्रम से; **चन्दन**—चन्दन; **रेमुणा**—रेमुणा (गोपीनाथ का गाँव); **आनिल**—लाये; **आनन्द**—आनन्द; **बाड़िल**—बढ़ गया; **मने**—मन में; **दुःख**—दुःख; **ना**—नहीं; **गणिल**—गिना।

अनुवाद

"अत्यन्त कष्ट उठाकर तथा अत्यधिक परिश्रम करके माधवेन्द्र पुरी चन्दन को रेमुणा ले आये। फिर भी वे अत्यन्त प्रसन्न थे; उन्होंने कठिनाइयों की तनिक भी चिन्ता नहीं की।

परीक्षा करिते गोपाल कैल आज्ञा दान ।
परीक्षा करिया शेषे हैल दयावान् ॥ १८९॥

परीक्षा करिते गोपाल कैल आज्ञा दान ।
परीक्षा करिया शेषे हैल दयावान् ॥ १८९॥

परीक्षा—परीक्षा; **करिते**—करने के लिए; **गोपाल**—भगवान् गोपाल; **कैल**—दी; **आज्ञा**—आज्ञा; **दान**—देना; **परीक्षा**—परीक्षा; **करिया**—करके; **शेषे**—अन्त में; **हैल**—हो गये; **दयावान्**—दयालु।

अनुवाद

"पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् गोपाल ने माधवेन्द्र पुरी के उत्कट प्रेम की

परीक्षा करने के लिए उन्हें नीलाचल से चन्दन लाने का आदेश दिया और जब माधवेन्द्र पुरी इस परीक्षा में खरे उतरे, तो भगवान् उन पर अत्यन्त कृपालु हुए।

এই ভক্তি, ভক্ত-প্রিয়-কৃষ্ণ-ব্যবহার ।
বুঝিতেও আমা-সবার নাহি অধিকার ॥ ১৯০ ॥

এই ভক্তি, ভক্ত-প্রিয়-কৃষ্ণ-ব্যবহার ।
বুঝিতেও আমা-সবার নাহি অধিকার ॥ ১৯০ ॥

এই ভক্তি—इस प्रकार की भक्ति; **ভক্ত**—भक्त की; **প্রিয়**—और सर्वप्रिय; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **ব্যবহার**—व्यवहार; **বুঝিতেও**—समझने के लिए; **আমা-সবার**—हम सबका; **নাহি**—नहीं है; **অধিকার**—अधिकार।

अनुवाद

"भक्त तथा भक्त के प्रिय श्रीकृष्ण के मध्य प्रेमाभक्ति के ऐसे व्यवहार का प्रदर्शन दिव्य है। साधारण व्यक्ति के लिए इसे समझ पाना सम्भव नहीं है। सामान्य व्यक्तियों में इतनी क्षमता ही नहीं होती।"

এত বলি' পড়ে প্রভু তাঁর কৃত শ্লোক ।
যেই শ্লোক-চন্দ্রে জগত্কর্যাছে আলোক ॥ ১৯১ ॥

এত বলি' পড়ে প্রভু তাঁর কৃত শ্লোক ।
যেই শ্লোক-চন্দ্রে জগত্কর্যাছে আলোক ॥ ১৯১ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **পড়ে**—पढ़ा; **প্রভু**—चैतन्य महाप्रभु; **তাঁর**—माधवेन्द्र पुरी; **কৃত**—कृत, रचित; **শ্লোক**—श्लोक; **যেই**—वह; **শ্লোক-চন্দ্রে**—चन्द्रमा जैसा श्लोक; **জগত্**—जगत् में; **কর্যাছে**—किया है; **আলোক**—प्रकाश।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने माधवेन्द्र पुरी का प्रसिद्ध श्लोक पढ़ा। यह श्लोक चन्द्रमा के समान है। इसने सारे जगत् को प्रकाशमान किया है।

घषिते घषिते यैछे मलयज-सार ।
गन्ध बाड़े, तैछे एइ श्लोकेर विचार ॥ १९२ ॥

घषिते घषिते ग्रैछे मलयज-सार ।
गन्ध बाड़े, तैछे एइ श्लोकेर विचार ॥ १९२ ॥

घषिते घषिते—रगड़ते रगड़ते; **ग्रैछे**—जैसे; **मलयज-सार**—चन्दन की लकड़ी; **गन्ध**—सुगन्ध; **बाड़े**—बढ़ जाती है; **तैछे**—उसी प्रकार; **एइ**—यह; **श्लोकेर**—श्लोक का; **विचार**—विचार।

अनुवाद

जिस प्रकार निरन्तर घिसने से मलय चन्दन की सुगन्ध बढ़ती है, उसी तरह इस श्लोक पर मनन करने से इसकी महत्ता समझ में आती है।

रत्न-गण-मध्ये यैछे कौस्तुभ-मणि ।
रस-काव्य-मध्ये तैछे एइ श्लोक गणि ॥ १९३ ॥

रत्न-गण-मध्ये ग्रैछे कौस्तुभ-मणि ।
रस-काव्य-मध्ये तैछे एइ श्लोक गणि ॥ १९३ ॥

रत्न-गण—मूल्यवान रत्न; **मध्ये**—मध्य में; **ग्रैछे**—जैसे; **कौस्तुभ-मणि**—कौस्तुभ मणि; **रस-काव्य**—भक्तिरस की कविता; **मध्ये**—मध्य में; **तैछे**—उसी प्रकार; **एइ**—यह; **श्लोक**—श्लोक; **गणि**—मैं गिनता हूँ।

अनुवाद

जिस प्रकार रत्नों में कौस्तुभ-मणि को अत्यन्त मूल्यवान माना जाता है, उसी तरह भक्ति के रस से सम्बन्धित काव्य में इस श्लोक को सर्वोत्तम माना जाता है।

एइ श्लोक कहियाछेन राधा-ठाकुराणी ।
ताँर कृपाय स्फुरियाछे माधवेन्द्र-वाणी ॥ १९४ ॥

एइ श्लोक कहियाछेन राधा-ठाकुराणी ।
ताँर कृपाय स्फुरियाछे माधवेन्द्र-वाणी ॥ १९४ ॥

एइ—यह; **श्लोक**—श्लोक; **कहियाछेन**—कहा गया है; **राधा-ठाकुराणी**—श्रीमती

राधारानी; **ताँर**—उनकी; **कृपाय**—कृपा से; **स्फुरियाछे**—प्रकट हुआ है; **माधवेन्द्र**—माधवेन्द्र पुरी की; **वाणी**—वाणी।

अनुवाद

वास्तव में इस श्लोक को श्रीमती राधारानी ने स्वयं कहा था और उनकी कृपा से ही यह माधवेन्द्र पुरी के शब्दों में प्रकट हुआ।

किबा गौरचन्द्र इहा करे आस्वादन ।
इहा आस्वादिते आर नाहि चौठ-जन ॥ १९५॥

किबा गौरचन्द्र इहा करे आस्वादन ।
इहा आस्वादिते आर नाहि चौठ-जन ॥ १९५॥

किबा—कितना उत्तम; **गौरचन्द्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **इहा**—यह; **करे**—करते हैं; **आस्वादन**—आस्वादन; **इहा**—यह श्लोक; **आस्वादिते**—आस्वादन करने के लिए; **आर**—अन्य; **नाहि**—नहीं है; **चौठ-जन**—चौथा व्यक्ति।

अनुवाद

केवल श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस श्लोक के काव्यत्व का आस्वादन किया है। इसे समझ पाने में कोई चौथा व्यक्ति समर्थ नहीं है।

तात्पर्य

इसका अर्थ यह हुआ कि इस श्लोक के तात्पर्य को केवल श्रीमती राधारानी, माधवेन्द्र पुरी तथा चैतन्य महाप्रभु ही समझने में समर्थ हैं।

शेष-काले एई श्लोक पठिते पठिते ।
सिद्धि-प्राप्ति हैल पुरीर श्लोकेर सहिते ॥ १९६॥

शेष-काले एइ श्लोक पठिते पठिते ।
सिद्धि-प्राप्ति हैल पुरीर श्लोकेर सहिते ॥ १९६॥

शेष-काले—अन्त में; **एइ श्लोक**—यह श्लोक; **पठिते पठिते**—बार बार पढ़कर; **सिद्धि-प्राप्ति**—सिद्धी की प्राप्ति; **हैल**—हुई; **पुरीर**—माधवेन्द्र पुरी को; **श्लोकेर**—यह श्लोक; **सहिते**—के साथ।

अनुवाद

पृथ्वी पर जीवन के अन्तिम काल में माधवेन्द्र पुरी इस श्लोक को

बारम्बार पढ़ते रहते थे। इस प्रकार इस श्लोक का उच्चारण करते-करते उन्होंने जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्त किया।

अयि दीन-दयार्द्र नाथ हे
मथुरा-नाथ कदावलोक्यसे ।
हृदयं त्वदलोक-कातरं
दयित भ्राम्यति किं करोम्यहम् ॥१९७॥

अयि दीन-दयार्द्र नाथ हे
मथुरा-नाथ कदावलोक्यसे ।
हृदयं त्वदलोक-कातरं
दयित भ्राम्यति किं करोम्यहम् ॥ १९७॥

अयि—हे मेरे प्रभु; **दीन**—दीनों पर; **दया-आर्द्र**—दयालु; **नाथ**—हे नाथ; **हे**—हे; **मथुरा-नाथ**—मथुरा नाथ; **कदा**—कब; **अवलोक्यसे**—मैं आपको देखूँगी; **हृदयम्**—मेरा हृदय; **त्वत्**—आपको; **अलोक**—देखे बिना; **कातरम्**—अत्यन्त दुःखी; **दयित**—हे प्रियतम; **भ्राम्यति**—अत्यन्त विचलित हो जाता है; **किम्**—क्या; **करोमि**—करूँ; **अहम्**—मैं।

अनुवाद

"हे नाथ! हे परम कृपालु स्वामी! हे मथुरापति! मुझे फिर आपके दर्शन कब होंगे? आपका दर्शन न कर पाने के कारण मेरा विक्षुब्ध हृदय अस्थिर हो चुका है। हे प्रिय, अब मैं क्या करूँ?"

तात्पर्य

केवल वेदान्त-दर्शन पर आश्रित शुद्ध भक्त चार सम्प्रदायों में विभक्त हैं। इन चारों सम्प्रदायों में श्री मध्वाचार्य सम्प्रदाय को माधवेन्द्र पुरी ने स्वीकार किया था। इस प्रकार उन्होंने परम्परानुसार संन्यास ग्रहण किया। मध्वाचार्य से लेकर माधवेन्द्र पुरी के गुरु आचार्य लक्ष्मीपति तक माधुर्य भक्ति की अनुभूति नहीं थी। श्री माधवेन्द्र पुरी ने ही मध्वाचार्य सम्प्रदाय में सर्वप्रथम माधुर्य रस की भावना का सूत्रपात किया। मध्वाचार्य सम्प्रदाय का यह निर्णय श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा तब प्रकट किया गया, जब वे दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए उन तत्त्ववादियों से मिले थे, जो मध्वाचार्य सम्प्रदाय के माने जाते थे।

जब श्रीकृष्ण ने वृन्दावन छोड़कर मथुरा का राज्य स्वीकार कर लिया, तब श्रीमती राधारानी ने विरह-भाव के आवेश में दिखाया कि विरह में कृष्ण से किस तरह प्रेम किया जा सकता है। इस तरह इस श्लोक में विरह भाव में (विप्रलम्भ भाव में) भक्ति प्रधान है। गौड़ीय-मध्व-सम्प्रदाय में विरह भाव में पूजा को सर्वोच्च भक्ति मानी जाती है। इस धारणा के अनुसार भक्त अपने आपको अत्यन्त दीन तथा भगवान् द्वारा उपेक्षित मानता है। अतएव वह भगवान् को *दीनदयार्द्र नाथ* कहकर पुकारता है, जैसाकि माधवेन्द्र पुरी ने किया। ऐसी भावना ऊर्मिपूर्ण भक्ति का सर्वोच्च रूप है। चूँकि कृष्ण मथुरा चले गये थे, अतएव श्रीमती राधारानी अत्यधिक व्यथित थीं और उन्होंने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये : "हे प्रभु, आपके विरह के कारण मेरा मन अत्यधिक क्षुब्ध हो गया है। अब आप ही बतायें कि मैं क्या करूँ? मैं अत्यन्त दीन हूँ और आप अत्यन्त दयालु हैं, अतएव आप मुझ पर कृपा करें और मुझे बतलायें कि मैं आपका दर्शन कब कर सकूँगी।" श्री चैतन्य महाप्रभु सदैव श्रीमती राधारानी के उन ऊर्मिपूर्ण भावों को व्यक्त करते थे, जिन्हें राधारानी ने वृन्दावन में उद्धव को देखकर प्रकट किये थे। माधवेन्द्र पुरी द्वारा अनुभव किये जाने वाले ऐसे ही भाव इस श्लोक में व्यक्त हुए हैं। इसलिए गौड़ीय-मध्व-सम्प्रदाय के वैष्णवों के अनुसार श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने प्राकट्य के समय जिन भावों का अनुभव किया, वे माधवेन्द्र पुरी से श्रील ईश्वर पुरी के माध्यम से उन तक आये। गौड़ीय-मध्व-सम्प्रदाय परम्परा के सारे भक्त भक्ति के इन सिद्धान्तों को स्वीकार करते हैं।

एइ श्लोक पड़िते प्रभु हइला मूर्च्छिते ।
प्रेमेते विवश हञा पड़िल भूमिते ॥ १९८॥

एइ श्लोक पड़िते प्रभु हइला मूर्च्छिते ।
प्रेमेते विवश हञा पड़िल भूमिते ॥ १९८॥

एइ श्लोक—यह श्लोक; **पड़िते**—पढ़कर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हइला**—हो गये; **मूर्च्छिते**—मूर्च्छित; **प्रेमेते**—प्रेमावेश में; **विवश**—विवश होकर; **हञा**—होकर; **पड़िल**—गिर गये; **भूमिते**—धरती पर।

अनुवाद

यह श्लोक पढ़ते ही श्री चैतन्य महाप्रभु अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े। वे विह्वल थे, अतएव अपने वश में नहीं थे।

आस्ते-व्यस्ते कोले करि' निल नित्यानन्द ।
क्रन्दन करिया तबे उठे गौरचन्द्र ॥ १९९॥

आस्ते-व्यस्ते कोले करि' निल नित्यानन्द ।
क्रन्दन करिया तबे उठे गौरचन्द्र ॥ १९९॥

आस्ते-व्यस्ते—अति शीघ्रता में; **कोले**—गोद में; **करि'**—करके; **निल**—लिया; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **क्रन्दन**—रोना; **करिया**—करते हुए; **तबे**—उस समय; **उठे**—उठे; **गौरचन्द्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु भावावेश में भूमि पर गिर पड़े, तो नित्यानन्द प्रभु ने तुरन्त उन्हें अपनी गोद में उठा लिया। तब श्री चैतन्य महाप्रभु क्रंदन करते हुए फिर से उठ बैठे।

प्रेमोन्माद हैल, उठि' इति-उति धाय ।
हुङ्कार करये, हासे, कान्दे, नाचे, गाय ॥ २००॥

प्रेमोन्माद हैल, उठि' इति-उति धाय ।
हुङ्कार करये, हासे, कान्दे, नाचे, गाय ॥ २००॥

प्रेम-उन्माद—प्रेम का उन्माद; **हैल**—था; **उठि'**—उठकर; **इति-उति धाय**—इधर उधर दौड़ने लगे; **हुङ्कार**—हुँकार भरते हुए; **करये**—करने लगे; **हासे**—हँसना; **कान्दे**—रोना; **नाचे**—नाचना; **गाय**—और गाना।

अनुवाद

प्रेमोन्माद प्रकट करते हुए महाप्रभु हुंकार करते हुए इधर-उधर दौड़ने लगे। कभी वे हँसते, कभी रोते, कभी नाचते और कभी गाते थे।

'अयि दीन, 'अयि दीन' बले बार-बार ।
कण्ठे ना निःसरे वाणी, नेत्रे अश्रु-धार ॥२०१॥

'अयि दीन, 'अयि दीन' बले बार-बार ।
कण्ठे ना निःसरे वाणी, नेत्रे अश्रु-धार ॥ २०१ ॥

अयि दीन—हे मेरे स्वामी! हे दीनों के स्वामी; **अयि दीन**—हे दीनों के स्वामी; **बले**—कहते; **बार-बार**—बार बार; **कण्ठे**—गले में; **ना**—नहीं; **निःसरे**—निकलती; **वाणी**—आवाज; **नेत्रे**—आँखों में; **अश्रु-धार**—अश्रु धारा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु पूरा श्लोक नहीं सुना पाये। उन्होंने बारम्बार इतना ही कहा, "अयि दीन! अयि दीन!" इस तरह वे बोल नहीं सके और उनकी आँखों से अश्रु की धारा बहने लगी।

कम्प, स्वेद, पुलकाश्रु, स्तम्भ, वैवर्ण्य ।
निर्वेद, विषाद, जाड्य, गर्व, हर्ष, दैन्य ॥२०२॥

कम्प, स्वेद, पुलकाश्रु, स्तम्भ, वैवर्ण्य ।
निर्वेद, विषाद, जाड्य, गर्व, हर्ष, दैन्य ॥ २०२ ॥

कम्प—कंपन; **स्वेद**—पसीना; **पुलक-अश्रु**—खुशी के आँसू; **स्तम्भ**—सदमा; **वैवर्ण्य**—रंग फीका पड़ना; **निर्वेद**—निराशा; **विषाद**—उदासी; **जाड्य**—स्मृति हानि; **गर्व**—गर्व; **हर्ष**—प्रसन्नता; **दैन्य**—विनय, नम्रता।

अनुवाद

कँपकँपी, पसीना, हर्ष के अश्रु, स्तम्भ, शरीर का रंग फीका पड़ना, निराशा, खिन्नता, स्मृति-ह्रास, गर्व, हर्ष तथा दीनता—ये सारे लक्षण श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में दिख रहे थे।

तात्पर्य

भक्तिरसामृत-सिन्धु में *जाड्य* को स्मृति-ह्रास कहा गया है, जो प्रियतम के विरह जनित कठोर आघात से उत्पन्न होता है। इस मनोदशा में हानि-लाभ, सुनने तथा देखने एवं अन्य सभी बातों से कोई प्रयोजन नहीं रह जाता। यह मोह की प्रारम्भिक अवस्था को सूचित करता है।

एइ श्लोके उघाड़िला प्रेमेर कपाट ।
गोपीनाथ-सेवक देखे प्रभुर प्रेम-नाट ॥२०३॥

एइ श्लोके उघाड़िला प्रेमेर कपाट ।
गोपीनाथ-सेवक देखे प्रभुर प्रेम-नाट ॥ २०३॥

एइ श्लोके—यह श्लोक; **उघाड़िला**—खोल दिया; **प्रेमेर**—माधुर्य प्रेम का; **कपाट**—द्वार; **गोपीनाथ-सेवक**—गोपीनाथ अर्चाविग्रह के सेवक; **देखे**—देखते हैं; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **प्रेम-नाट**—प्रेमावेश में नृत्य।

अनुवाद

इस श्लोक ने प्रेमभाव के द्वार खोल दिये और गोपीनाथ के सारे सेवकों ने महाप्रभु को भावावेश में नृत्य करते देखा।

লোকের সঙ্ঘট্ট দেখি' প্রভুর বাহ্য হৈল ।
ঠাকুরের ভোগ সরি' আরতি বাজিল ॥২০৪॥

লোকের সঙ্ঘট্ট দেখি' প্রভুর বাহ্য হৈল ।
ঠাকুরের ভোগ সরি' আরতি বাজিল ॥ ২০৪॥

লোকের—লোগों की; **সঙ্ঘট্ট**—भीड़; **দেখি'**—देखकर; **প্রভুর**—चैतन्य महाप्रभु की; **বাহ্য**—बाह्य चेतना; **হৈল**—प्रकट हो गई; **ঠাকুরের**—अर्चाविग्रह की; **ভোগ**—भोग; **সরি'**—समाप्त करके; **আরতি**—आरती करके; **বাজিল**—गूंज उठी।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु के चारों ओर अनेक लोगों की भीड़ लग गई, तो वे बाह्य चेतना में आये। उसी बीच अर्चाविग्रह को भोग का समर्पण समाप्त हुआ और सुमधुर ध्वनि के साथ आरती सम्पन्न हुई।

ঠাকুরে শয়ন করাঞা পূজারী হৈল বাহির ।
প্রভুর আগে আনি' দিল প্রসাদ বার ক্ষীর ॥২০৫॥

ঠাকুরে শয়ন করাঞা পূজারী হৈল বাহির ।
প্রভুর আগে আনি' দিল প্রসাদ বার ক্ষীর ॥ ২০৫॥

ঠাকুরে—अर्चाविग्रह; **শয়ন**—शयन; **করাঞা**—कराने के बाद; **পূজারী**—पुजारी; **হৈল**—था; **বাহির**—मन्दिर से बाहर; **প্রভুর**—चैतन्य महाप्रभु के; **আগে**—सामने; **আনি'**—लाकर; **দিল**—दिया; **প্রসাদ**—प्रसाद; **বার**—बारह; **ক্ষীর**—खीर के पात्र।

अनुवाद

अर्चाविग्रहों को शयन कराने के बाद पुजारी मन्दिर के बाहर आ गया और उसने खीर के सारे बारहों पात्र श्री चैतन्य महाप्रभु को दे दिये।

क्षीर देखि' महाप्रभुर आनन्द बाड़िल ।
भक्त-गणे खाओयाइते पञ्च क्षीर लैल ॥२०६॥

क्षीर देखि' महाप्रभुर आनन्द बाड़िल ।
भक्त-गणे खाओयाइते पञ्च क्षीर लैल ॥ २०६॥

क्षीर—खीर; **देखि'**—देखकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आनन्द**—आनन्द; **बाड़िल**—बढ़ गया; **भक्त-गणे**—भक्त; **खाओयाइते**—उनको खिलाने के लिए; **पञ्च**—पाँच पात्र; **क्षीर**—खीर; **लैल**—स्वीकार की।

अनुवाद

जब गोपीनाथ महाप्रसाद के सारे खीर-पात्र श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष रखे गये, तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। भक्तों को खिलाने के लिए उन्होंने पाँच पात्र स्वीकार किये।

सात क्षीर पूजारीके बाहुड़िया दिल ।
पञ्च-क्षीर पञ्च-जने बाँटिया खाइल ॥२०७॥

सात क्षीर पूजारीके बाहुड़िया दिल ।
पञ्च-क्षीर पञ्च-जने बाँटिया खाइल ॥ २०७॥

सात क्षीर—खीर के सात पात्र; **पूजारीके**—पुजारी की ओर; **बाहुड़िया**—धकेलकर; **दिल**—दे दिए; **पञ्च-क्षीर**—खीर के पाँच पात्र; **पञ्च-जने**—पाँच लोगों को; **बाँटिया**—बाँटकर; **खाइल**—खाये।

अनुवाद

शेष सात पात्र आगे बढ़ाकर पुजारी को दे दिये गये। फिर महाप्रभु द्वारा लिये गये पाँच पात्रों की खीर पाँच भक्तों में बाँटी गई और उन सबने प्रसाद ग्रहण किया।

গোপীনাথ-রূপে যদি করিয়াছেন ভোজন ।
ভক্তি দেখাইতে কৈল প্রসাদ ভক্ষণ ॥২০৮॥

গোপীনাথ-রূপে য্রদি করিয়াছেন ভোজন ।
ভক্তি দেখাইতে কৈল প্রসাদ ভক্ষণ ॥ ২০৮॥

गोपीनाथ-रूपे—गोपीनाथ के अर्चाविग्रह रूप में; **य्रदि**—यद्यपि; **करियाछेन**—किया; **भोजन**—भोजन; **भक्ति**—भक्ति; **देखाइते**—दिखाने के लिए; **कैल**—किया; **प्रसाद भक्षण**—प्रसाद खाना।

अनुवाद

गोपीनाथ विग्रह से अभिन्न श्री चैतन्य महाप्रभु पहले ही खीर-पात्रों का आस्वादन कर चुके थे। फिर भी भक्ति प्रकट करने के लिए उन्होंने भक्त के रूप में पुनः खीर खाई।

নাম-সঙ্কীর্তনে সেই রাত্রি গোঙাইলা ।
মঙ্গল-আরতি দেখি' প্রভাতে চলিলা ॥২০৯॥

নাম-সঙ্কীর্তনে সেই রাত্রি গোঙাইলা ।
মঙ্গল-আরতি দেখি' প্রভাতে চলিলা ॥ ২০৯॥

नाम-सङ्कीर्तने—नाम संकीर्तन; **सेइ**—वह; **रात्रि**—रात; **गोङाइला**—गुजारी; **मङ्गल-आरति**—मंगल आरती; **देखि'**—देखने के बाद; **प्रभाते**—प्रातःकाल; **चलिला**—चल पड़े।

अनुवाद

वह रात्रि महाप्रभु ने उस मन्दिर में संकीर्तन करने में व्यतीत की। प्रातःकाल मंगल-आरती देखकर वे वहाँ से चल पड़े।

গোপাল-গোপীনাথ-পুরী-গোসাঞির গুণ ।
ভক্ত-সঙ্গে শ্রী-মুখে প্রভু কৈলা আস্বাদন ॥২১০॥

গোপাল-গোপীনাথ-পুরী-গোসাঞির গুণ ।
ভক্ত-সঙ্গে শ্রী-মুখে প্রভু কৈলা আস্বাদন ॥ ২১০॥

गोपाल—गोपाल अर्चाविग्रह का; **गोपीनाथ**—गोपीनाथ अर्चाविग्रह का; **पुरी-गोसाञि**—माधवेन्द्र पुरी के; **गुण**—गुण; **भक्त-सङ्गे**—भक्तों के साथ; **श्री-मुखे**—अपने मुख से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैला**—किया; **आस्वादन**—आस्वादन।

अनुवाद

इस तरह स्वयं चैतन्य महाप्रभु ने गोपालजी, गोपीनाथ तथा श्री माधवेन्द्र पुरी के दिव्य गुणों का आस्वादन अपने श्री मुख से किया।

এই ত' আখ্যানে কহিলা দোঁহার মহিমা ।
প্রভুর ভক্ত-বাৎসল্য, আর ভক্ত-প্রেম-সীমা ॥২১১॥

এই ত' আখ্যানে কহিলা দোঁহার মহিমা ।
প্রভুর ভক্ত-বাৎসল্য, আর ভক্ত-প্রেম-সীমা ॥ ২১১ ॥

এই ত'—इस प्रकार; **आख्याने**—वर्णन में; **कहिला**—बताया; **दोंहार**—दोनों की; **महिमा**—महिमाएँ; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **भक्त-वात्सल्य**—भक्तों के लिए प्रेम; **आर**—और; **भक्त-प्रेम-सीमा**—भक्त के प्रेम की उच्चतम सीमा।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु की अपने भक्तों के प्रति वात्सल्य की दिव्य महिमा तथा भगवत्प्रेम के भाव की पराकाष्ठा—दोनों का वर्णन किया है।

শ্রদ্ধা-যুক্ত হঞা ইহা শুনে যেই জন ।
শ্রী-কৃষ্ণ-চরণে সেই পায় প্রেম-ধন ॥২১২॥

শ্রদ্ধা-যুক্ত হঞা ইহা শুনে যেই জন ।
শ্রী-কৃষ্ণ-চরণে সেই পায় প্রেম-ধন ॥ ২১২ ॥

श्रद्धा-युक्त—श्रद्धा युक्त; **हञा**—होकर; **इहा**—यह; **शुने**—सुनता है; **येइ**—वह; **जन**—व्यक्ति; **श्री-कृष्ण-चरणे**—भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों में; **सेइ**—वह; **पाय**—पाता है; **प्रेम-धन**—भगवत् प्रेम की निधि।

अनुवाद

जो कोई श्रद्धा तथा भक्ति से इस कथा को सुनता है, उसे श्रीकृष्ण के चरणकमलों के प्रति भगवत्प्रेम का धन प्राप्त होता है।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥২১৩॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्रार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ २१३ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों पर; **ग्रार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—चैतन्य चरितामृत नामक ग्रंथ; **कहे**—कहता है; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए और उनकी कृपा की कामना करते हुए, मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों पर चलकर *श्री चैतन्य-चरितामृत* का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत की मध्यलीला के चतुर्थ अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ जिसमें श्री माधवेन्द्र पुरी की भक्ति का वर्णन है।